कस्रग्भिः (१) निरन्तरनिचितशरीरतया धवलवेशपरिग्रहतया च नरसिंह इव विधुत-(२) केसरनिकरः, कैलास इव स्रवत्स्रोतस्विनी-स्रोतोराशिः, ऐरावत इव मन्दाकिनी-मृणाल-जाल-जटिलः, क्षीरोद इव स्फुरित-फेनलताकुलः (३) (ख) तत्काल-प्रतिपन्न-वेत्रदण्डेन पित्रा स्वयं पुरःप्रारब्धसमुत्सारणः सभामण्डपमुपगम्य (४) काञ्चनमयं शशीव मेरुशृङ्गं चन्द्रापीड़ः सिंहासनमारुरोह। (ग)

(ख) सितेति। इन्दुकरकलापवत् चन्द्रकिरणसमूहवत् कोमलाभिरिति लुप्तोपमा। विशेषेण कचे लम्बत इति वैकचं ततः स्वार्थे क इति वैकचकम् उरसि तिर्य्यक् उपवीतवत् कण्ठात् क्षिप्तं, 'वैकक्षकन्तु तत्। यत्तिर्य्यक् क्षिप्तमुरसि" इत्यमरः; तद्रूपाभिः स्रग्भिर्मालाभिः, निरन्तरनिचितशरीरतया अंशतो निरवकाशव्याप्तदेहतया तथा धवलवेशं परिगृह्णातीति पचादित्वादच् तस्य भावस्तया च हेतुना, विधुतः केसरनिकरो धवलजटासमूहो येन तादृशो नरसिंहो भगवतो नृसिंहावतार इव। अत्र नृसिंहजटानां शुभ्रतयैव लोके प्रसिद्धत्वाच्छ्रोपमागतस्य न्यूनपदत्वदोष इति ध्येयम्। स्रवन् निर्गच्छन् स्रोतस्विनीनां नदीनां स्रोतसां राशिः समूहो यस्मात्तादृशः कैलासो गिरिरिव। मन्दाकिन्याः स्वर्गगङ्गायाः मृणालजालेन जटिलो व्याप्तः ऐरावतो हस्तीव। तथा स्फुरिताभिराविर्भूताभिः फेनानां लताभिः परम्पराभिः आकुलो व्याप्तः क्षीरोदः सागर इव। नरसिंहकैलासैरावतक्षीरोदैः सह चन्द्रापीड़स्य, केसरनिकरस्रोतोराशिमृणालजालफेनलताभिश्च सह तदीयमालानां सादृश्यं। तेनात्र मालोपमालङ्कारः।

(ग) तत्कालेति। तस्मिन् काले प्रतिपन्नो गृहीतो वेत्रदण्डो येन तेन, पित्रा तारापीड़ेन, स्वयमात्मनैव, पुरोऽग्रतः प्रारब्धा आनन्देन निरतिशयसम्मानप्रदर्शनोद्देशेन च उपक्रान्ता समुत्सारणा लोकानामपसारणा यस्य सः तथोक्तश्चन्द्रापीड़ः, सभामण्डपमुपगम्य काञ्चनमयं मेरुशृङ्गं शशीव काञ्चनमयं सिंहासनमारुरोह। अत्रोपमालङ्कारः। तथा शशी आरोहति चन्द्रापीड़स्तु आरुरोहेति कालभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च शशी यथारोहति तथारुरोहेति पाठेन समाधेयः।

এক ছড়া মুক্তার হারে বক্ষঃস্থল পরিশোভিত হইল ; খ) শ্বেতবর্ণ পুষ্পদ্বারা গ্রথিত, আজানুলম্বিত, চন্দ্রের রশ্মি-সমূহের ন্যায় কোমল এবং যজ্ঞোপবীতের ন্যায় লম্বমান কতকগুলি মালা দ্বারা সমস্ত দেহ ব্যাপ্ত হওয়ায় এবং শ্বেতবর্ণ বেশ ধারণ করায় চন্দ্রাপীড়, শুভ্রবর্ণ জটাসমূহধারী ভগবান্ নরসিংহের ন্যায়, নদীর স্রোতসমূহ পতিত হইতে লাগিলে কৈলাসপর্ব্বতের ন্যায় স্বর্গগঙ্গার মৃণালসমূহে ব্যাপ্তদেহ ঐরাবত হস্তীর ন্যায় এবং আবির্ভূত ফেনশ্রেণীতে ব্যাপ্ত ক্ষীরোদসাগরের ন্যায় বিরাজ করিতে লাগিলেন ; (গ) সেই সময়ে মহারাজ তারাপীড় আপনিই বেত্রযষ্টি ধারণ করিয়া চন্দ্রাপীড়ের সম্মুখবর্ত্তী লোকসমূহকে সরাইয়া দিতে লাগিলেন ; এই অবস্থায়—চন্দ্র যেমন স্বর্ণময় সুমেরুশৃঙ্গে আরোহণ করেন, সেইরূপ কুমার চন্দ্রাপীড় সভামণ্ডপে যাইয়া স্বর্ণময় সিংহাসনে আরোহণ করিলেন।

---

(१) वैकक्षकस्रग्भिः। (२) विधुत, विधूत ..। (३)...लताकुलः। (४) आगम्य।

आरूढस्य चास्य कृतयथोचितसकलराजलोकसम्मानस्य (१) मुहूर्त्तं स्थित्वा दिग्विजयप्रयाणशंसी प्रलय-घन-घटा-घोष-घर्घरध्वनिः, उदधिरिव मन्दराघातैः, वसुन्धरापीठमिव युगान्तनिर्घातैः, उत्पातजलधर इव तडिद्दण्डपातैः, (२) पातालकुक्षिरिव महावराह-घोणाभिघातैः, कनककोणैः (३) अभिहन्यमानः प्रस्थानदुन्दुभिरामन्थरं दध्वान (घ)। येन ध्वनता समाध्मातानीव उन्मीलितानीव मुखरीकृतानीव (४) पृथक्कृतानीव विस्तारितानीव गर्भीकृतानीव प्रदक्षिणीकृतानीव बधिरीकृतानीव रवेण भुवनान्तराणि, विश्लेषिता इव दिशामन्योन्य-

(घ) चन्द्रापीडस्य दिग्विजययात्रां वर्णयितुमुपक्रमते आरूढस्य चेति। कियेति चार्थः। कृतो यथोचितं सकलराजलोकस्य उपस्थितसामन्तगणस्य सम्मानो येन तस्य, मुहूर्त्तं स्थित्वा विद्यमानस्येत्यर्थः अस्य चन्द्रापीडस्य, प्रलये तत्काले या घनघटा मेघसमूहस्तस्या घोषवत् शब्दवत् घर्घर इत्येवंरूपो ध्वनिर्यस्य सः, प्रस्थानदुन्दुभिः कनककोणैः सुवर्णनिर्म्मितवादनदण्डैः "कोणो वीणादि वादन"मित्यमरः, अभिहन्यमानो वाद्यमानः सन्, मन्दराघातैः आन्दोलमानमन्दराचलताडनैः उदधिः क्षीरसागर इव; युगान्ते प्रलयकाले निर्घातैः औत्पातिकैराकाशात् पतितवायुविशेषैः, अभिहन्यमानं वसुन्धरापीठं पृथिवीपृष्ठमिव। निर्घात उक्तो नारदसंहितायाम्—"वायुनाभिहतो वायुर्गगनात् पतितः क्षितौ। यदा दीप्तः खगरुतः स निर्घातोऽतिदोषकृत्।" तडितो विद्युतो दण्डा इव लम्बमानत्वात् तेषां पातैः, उत्पातजलधर इव औत्पातिकमेघ इव। तथा महावराहस्य नारायणतृतीयावतारस्य घोणाया नासिकायाः अभिघातैः प्रहारैः पातालस्य कुक्षिर्मध्यदेश इव, आमन्थरं अतीवविशालं दध्वान शब्दितवान्। अत्रापि मालोपमालङ्कारः। "मन्थरः सूचके कोशे वक्रे मन्दे पृथौ मथि। मन्थरं तु कुसुम्भ्यां स्यात्।" इति हेमः।

(ङ) येनेति। ध्वनता शब्दायमानेन येन च दुन्दुभिना रवेण, भुवनानां अन्तराणि मध्यदेशाः, समाध्मातानीव परिपूरितानीव, उन्मीलितानीव जागरितानीव, मुखरीकृतानीव शब्दायमानीकृतानीव, पृथक्कृतानीव विदारितानीव, विस्तारितानीव प्रसारितानीव, गर्भीकृतानीव अन्तर्गतीकृतानीव। सर्व्वत्र जातानीति शेषः। तथा दिशां अन्योन्यबन्धसन्धयः परस्परबन्धनजनितसंयोगाः विश्लेषिता विभक्ता इव जाताः। अत्र सर्व्वत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ঘ) তিনি সিংহাসনে আরোহণ করিয়া উপস্থিত সামন্তরাজগণের যথোচিত সম্মান করিয়া কিছুকাল অবস্থান করিলে, তাঁহার দিগ্বিজয়-যাত্রা সূচক যাত্রাদুন্দুভি, সুবর্ণময় বাদনদণ্ডদ্বারা তাড়িত হইয়া, মন্দরপর্ব্বতের আঘাতে ক্ষীরোদসাগরের ন্যায় প্রলয়কালীন নির্ঘাত-বায়ুর আঘাতে ভূতলের ন্যায়, বিদ্যুতের আঘাতে উৎপাত মেঘের ন্যায় এবং নারায়ণের তৃতীয় অবতার মহাবরাহের নাসিকার আঘাতে পাতাল-মধ্যদেশের ন্যায়, অত্যন্ত বিশাল শব্দ করিতে লাগিল। (ঙ) শব্দায়মান যে দুন্দুভির শব্দে সমস্ত ত্রিভুবনের মধ্যভাগ, যেন পরিপূরিত, জাগরিত, শব্দিত, বিদারিত, বিস্তারিত, অভ্যন্তরগত, প্রদক্ষিণীকৃত ও বধিরীকৃত হইয়াছিল

(१) सम्मानस्य। (२) तडिद्दण्डपातैः। (३) कनककणैः, कनककैः। (४) क्वचिदयं पाठो नास्ति।

बन्धसन्धयः (ङ)। यस्य च भयवशविषमचलितोत्तान-(१) फणासहस्रेणा-लिङ्ग्यमान इव रसातले शेषेण, (च) मुहुर्मुहुरभिमुख-दत्तदन्तोर्ध्वघातैः (२) आहूयमान इव दिक्षु दिक्कुञ्जरैः, (छ) सन्त्रास-रचित-रेचित-(३) मण्डलैः प्रदक्षिणीक्रियमाण इव नभसि दिवसकर-रथ तुरगैः, (४) (ज) अपूर्व-शर्वाट्टहास-शङ्का-हर्ष-हुङ्कृतेन (५) आभाष्यमाण इव कैलासशिखरिणि त्र्यम्बकवृषभेण, (झ)

(च) यस्येति। यस्य च दुन्दुभिर्निनाद इति सम्बन्धः। रसातले पाताले भयवशेन विषमं असमानं इतस्तत इत्यर्थः चलितं कम्पितं उत्तानं ऊर्द्धीभूतं फणानां सहस्रं यस्य तेन तादृशेन सता, शेषेण अनन्तनागेन आलिङ्ग्यमानः सर्वतः प्राप्यमान इव सन्। क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) मुहुरिति। दिक्षु मुहुर्मुहुः अभिमुखे पर्वतभित्त्यादौ दत्ता दन्ताभ्यां ऊर्द्धघाता यैस्तैः, दिक्कुञ्जरैः दिग्दन्तिभिः आहूयमान आमन्त्र्यमाण इव, प्रतिद्विरदगर्जनभ्रमादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च दुन्दुभिनिनादे प्रतिद्विरदगर्जनभ्रमाद् भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

(ज) सन्त्रासेति। नभसि आकाशे, सन्त्रासेन भयेन रचितं विहितं रेचितमण्डलं मध्यमवेगगत्या परिभ्रमणं यैस्तैः, भयवशादेव महावेगवतामपि मध्यमवेगेन भ्रमणमिति भावः। "उत्तेजितं रेचितं स्यान्मध्यवेगेन या गतिः" इति हैमनाममाला। दिवसकररथतुरगैः सूर्यरथवाहिघोटकैः, प्रदक्षिणीक्रियमाण इव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(झ) अपूर्वेति। कैलासशिखरिणि त्र्यम्बकवृषभेण शिवस्य वृषेण कर्त्रा, अपूर्वः अश्रुतपूर्वो यः शर्वस्य शिवस्य अट्टहास उच्चहास्यं तस्य शङ्कया शङ्क्यमाने तस्मिन् दुन्दुभिनिनादे शिवाट्टहासभ्रमेणेत्यर्थः, यो हर्ष आनन्दस्तेन यत् हुङ्कृतं आत्मनो हुङ्कारस्तेन करणेन, आभाष्यमाण आलप्यमान इव। अत्र भ्रान्तिमत्-क्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

এবং সকল দিকের পরস্পর সন্ধিস্থলগুলি যেন বিভক্ত হইয়া গিয়াছিল। (চ) এবং পাতালে ভয়বশতঃ অনন্তনাগের উত্তোলিত সহস্র ফণা, ইতস্ততঃ চলিতে লাগিয়াছিল, এই অবস্থায় তিনি যে দুন্দুভিধ্বনি সকল দিক্ হইতেই যেন শুনিতেছিলেন; (ছ) সকল দিকেই দিগ্‌হস্তিগণ, সম্মুখবর্ত্তী পর্ব্বতভিত্তিতে উর্দ্ধদিকে বার বার দন্তাঘাত করিয়া বিপক্ষ হস্তীর গর্জ্জন মনে করিয়া যে দুন্দুভির শব্দকে যেন আহ্বান করিতেছিল; (জ) আকাশে সূর্য্য-রথের অশ্বগণ অত্যন্তভয়বশতঃ মধ্যমগতিতে মণ্ডলাকারে পরিভ্রমণ করিয়া যে দুন্দুভিধ্বনিকে যেন প্রদক্ষিণ করিতেছিল; (ঝ) কৈলাসপর্ব্বতে শিবের বৃষটা, অশ্রুতপূর্ব্ব শিবের উচ্চ-হাস্য-রব মনে করিয়া আনন্দবশতঃ হুঙ্কারদ্বারা যে দুন্দুভিধ্বনির সহিত যেন আলাপ করিতেছিল;

---

(१) चलितोत्तान...। (२)...दन्ताघातैः।
(३)...रेचक...। (४)...तुरङ्गमैः। (५) क्वचित् अश्रुतपूर्व इत्याधिकः पाठो दृश्यते।

कृत-गम्भीर-कण्ठगर्जितेन प्रत्युद्गम्यमान इव मेरौ (१) ऐरावतेन, (ञ) अश्रुत-पूर्व-रव-रोषाविष्ट-(२) तिर्य्यगवनमित-विषाण-मण्डलेन प्रणम्यमान इव यमसद्मनि (३) कृतान्तमहिषेण, (ट) सन्त्रस्त सकल-लोकपालाकर्णितो बभ्राम त्रिभुवन-मखिलं (४) निनादः। (ठ)

ततो दुन्दुभिरवमाकर्ण्य जय जयेति च सर्वतः समुद्घुष्यमाण-जयशब्दः सिंहासनात् सह द्विषतां श्रिया सञ्चचाल चन्द्रापीड़ः। (ड)

समन्तात् ससम्भ्रमोत्थितैश्च परस्पर-सङ्घट्ट-विघटित-(५) हारसूत्रविगलितान्

(ञ) कृतेति। मेरौ सुमेरुपर्वते, कृतं गम्भीरं कण्ठगर्जितं येन तेन, ऐरावतेन हस्तिना प्रत्युद्-गम्यमान इव, गौरवादभ्यर्थनार्थमिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ट) अश्रुतेति। यमसद्मनि यमालये, अश्रुतपूर्वेण रवेण यो रोषाविष्टस्तेन तिर्य्यगवनमितं विषाण-मण्डलं येन तेन, कृतान्तमहिषेण प्रणम्यमान इव। अत्र प्रहाराभिप्रायेण कृतं विषाणनमनं नमस्कारार्थ-नमनत्वेनोत्प्रेक्षितमिति क्रियोत्प्रेक्षा तथा यमसद्मनीत्यभिधाय कृतान्तमहिषेण इत्यभिधानाद्भग्नप्रक्रमता दोषः, स च तन्महिषेणेति पाठेन समाधेयः।

(ठ) सन्त्रस्तेति। सन्त्रस्तैः किमिदमिति भीतैः सकलैर्लोकपालैरिन्द्रादिभिराकर्णितः। अत्र तेषां तादृशाकर्णनासम्बन्धेऽपि तत् सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ड) तत इति। सर्वतः समन्तात् समुद्घुष्यमाणो जयशब्दो यस्य सः। दिग्विजयाय चन्द्रापीड़स्य चलनेन शत्रूणां लक्ष्मीरपि चिरावस्थानासम्भवत्वप्रतीत्या चञ्चला बभूवेति भावः। अत्र सहोक्तिरलङ्कारः।

(ढ) समन्तादिति। किञ्च समन्तात् सर्वाभ्यो दिग्भ्यः, ससम्भ्रमं सत्वरं उत्थितैः, परस्परसङ्घट्टेन अन्योन्यसङ्घर्षेण विघटितानि छिन्नानि यानि हारसूत्राणि तेभ्यो विगलितान्, आशाविजयाय दिग्विजयाय

(ঞ) সুমেরুপর্ব্বতে ঐরাবত হস্তী, গভীর গর্জ্জন করিয়া যে দুন্দুভিধ্বনির যেন প্রত্যুদ্গমন করিতেছিল; (ট) যমালয়ে যমের মহিষটা, অশ্রুতপূর্ব্ব শব্দ শুনিয়া ক্রোধবশতঃ শৃঙ্গদ্বয় তির্য্যগ্-ভাবে অবনত করিয়া যে দুন্দুভিকে যেন নমস্কার করিতেছিল; (ঠ) এবং অত্যন্তভীত সকল দিক্‌পালগণকর্ত্তৃক শ্রুত হইয়া যে দুন্দুভিধ্বনি সমস্ত ত্রিভুবন পরিভ্রমণ করিয়াছিল।

(ড) তদনন্তর চন্দ্রাপীড় দুন্দুভিধ্বনি শুনিয়া বিপক্ষ রাজগণের রাজলক্ষ্মীর সহিত সিংহাসন হইতে নামিলেন। এদিকে সমস্ত সৈন্ত-সামন্তগণ সকল দিক্ হইতে 'জয় জয়' ইত্যাকারে চন্দ্রাপীড়ের জয়ধ্বনি ঘোষণা করিতে লাগিল।

(ঢ) চন্দ্রাপীড় সিংহাসন হইতে নামিলে সকল দিক্ হইতে সামন্তনরপতিগণ তাড়াতাড়ি গাত্রোত্থান করিলেন, তখন পরস্পর সঙ্ঘর্ষবশতঃ তাঁহাদের গলার হারের সূতাগুলি ছিঁড়িয়া

---

(१) क्वचित् 'मेरौ' इति नास्ति। (२)...रवजनितरोष ; रवं देव। (३) त्रिदशसद्मनि।

(४) क्वचित् अखिलमिति न दृश्यते। (५)...विघट्टित...।

अनवरतमाशाविजयप्रस्थानमङ्गललाजानिव (१) मुक्ताफल-प्रकरान् क्षरद्भिः, पारिजात इव सित-कुसुममुकुल-पातिभिः कल्पपादपैः, ऐरावत इव विमुक्तकर-शीकरैराशागजैः, गगनाभोग इव तारागणवर्षिभिर्दिगन्तरैः, जलदकाल इव स्थूल-जल-लवासार-स्यन्दिभिर्जलधरैः, अनुगम्यमानो नरपतिसहस्रैरास्थान-मण्डपान्निरगात्। (ढ)

निर्गत्य च पूर्वारूढ़या पत्रलेखया (२) अध्यासितान्तरासनाम्, उपपादित-प्रस्थानसमुचितमङ्गल्यालङ्कारां ससम्भ्रमाधोरणोपनीतां करेणुकामारुह्य (३)

प्रस्थाने मङ्गललाजान् माङ्गलिकधाना इवेति जात्युत्प्रेक्षा मुक्ताफलप्रकरान् मौक्तिकसमूहान्, अनवरतं क्षरद्भिः पातयद्भिः, नरपतिसहस्रैः सामन्तगणैः, अनुगम्यमान इति सम्बन्धः, सितकुसुममुकुलपातिभिः शुभ्रवर्णपुष्पकलिकावर्षिभिः कल्पपादपैः पारिजातो वृक्ष इव, विमुक्ता निक्षिप्ताः करेभ्यः शुण्डाभ्यः शीकरा जलबिन्दवो यैस्तैः आशागजैर्दिग्गजैः, ऐरावतो हस्तीव, तारागणवर्षिभिर्दिगन्तरैर्विभिन्नदिग्भिः गगनाभोगो विस्तृताकाशदेश इव, तथा स्थूलजललवासारस्यन्दिभिः स्थूलजलबिन्दुधारावर्षिभिः जलधरैर्मेघैः जलदकालो वर्षाकाल इव, अनुगम्यमानश्चन्द्रापीड़ः, आस्थानमण्डपात् सभागृहात् निरगात् निर्गतो बभूव। अत्र मालोपमालङ्कारः प्रागुक्तजात्युत्प्रेक्षया सङ्कीर्य्यते।

(ण) निर्गत्येति। किञ्च। समध्यासितं अधिष्ठितं अन्तरासनं मध्यस्थितासनं यस्यास्ताम्। उपपादिता भृत्यैर्यथास्थानं योजिताः प्रस्थानसमुचिता रणप्रयाणयोग्या मङ्गल्यालङ्कारा यस्यास्ताम्। ससम्भ्रमेण सत्वरेण आधोरणेन हस्तिपकेन उपनीतां उपस्थापितां करेणुकां काञ्चित् हस्तिनीं आरुह्य चन्द्रापीड़ः, अचलरेचकेन मन्दरभ्रमणेन चक्रीकृतो घूर्णितो यः क्षीरोदस्य सागरस्य आवर्त्तो जलभ्रमिस्तद्वत् पाण्डुरेण, दशवदनस्य रावणस्य बाहुदण्डे अवस्थितो यः कैलासो गिरिस्तस्य कान्तिरिव कान्तिर्यस्य तेन। छत्रस्यापि भृत्य

যাইতে লাগিল, তাহাতে দিগ্বিজয়প্রস্থানকালীন মাঙ্গলিক খইর ন্যায় মুক্তাগুলি অনবরত পতিত হইতে লাগিল; তখন শুভ্রবর্ণ পুষ্পকলিকাবর্ষী কল্পবৃক্ষগণ যেমন পারিজাতবৃক্ষের, শুণ্ড হইতে জলবিন্দুবর্ষী-দিগ্‌হস্তিগণ যেমন ঐরাবতের, নক্ষত্রবর্ষী দিক্‌সমূহ যেমন আকাশের এবং স্থূল জলবিন্দু-বর্ষী মেঘসমূহ যেমন বর্ষাকালের পশ্চাতে অবস্থান করে, সেইরূপ সামন্তনরপতি-গণ চন্দ্রাপীড়ের পশ্চাৎ পশ্চাৎ অবস্থান করিয়া যাইতে লাগিলেন, এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সভামণ্ডপ হইতে নির্গত হইলেন।

(ণ) চন্দ্রাপীড় নির্গত হইলে, হস্তিপক সত্বর একটা হস্তিনী আনিয়া উপস্থিত করিল, পত্র-লেখা পূর্ব্বেই তাহাতে আরোহণ করিয়া মধ্যবর্ত্তী আসনে উপবেশন করিয়া রহিয়াছিল, ভৃত্যগণ যুদ্ধযাত্রার উপযোগী মাঙ্গলিক অলঙ্কারে তাহাকে অলঙ্কৃত করিয়া রাখিয়াছিল চন্দ্রাপীড় সেই হস্তিনীর পৃষ্ঠে আরোহণ করিয়া রাজবাটী হইতে নির্গত হইতে আরম্ভ করিলেন; তখন

(१)...मङ्गललीलालाजानिव। (२) कुलूतेश्वरदुहित्रा। (३) अधिरुह्य।

मन्दरपरिवर्त्तचक्रीकृत-क्षीरोदावर्त्त-पाण्डुरेण दशवदन-बाहुदण्डावस्थित-कैलास-कान्तिना मुक्ताफलजालिना शतशलाकेनातपत्रेण निवार्य्यमाणातपो निर्गन्तु-मारेभे। (ग)

निर्गच्छंश्च अभ्यन्तरावस्थित एव प्राकारान्तरित-(१) दर्शनानां द्वारावस्थितानां (२) प्रतिपालयतां राज्ञामुन्मयूखानां चूड़ामणीनामलक्तकद्रवद्युतिमुषा बहले-नालोकबालातपेन राज्याभिषेकानन्तरप्रसृतेन स्वप्रतापवह्निनेवात्यर्थं पिञ्जरी-क्रियमाणा दश दिशः, यौवराज्याभिषेकजन्मना निजानुरागेणेव रज्यमान-

करावस्थितत्वात् साम्यप्रतिपादनार्थं दशवदनबाहुदण्डावस्थितेति कैलासविशेषणं बोध्यम्। मुक्ताफलजाल-मस्यास्तीति तेन, तथा शतं शलाका यस्य तेन, आतपत्रेण छत्रेण निवार्य्यमाण आतपो यस्य स तादृशः सन्। अत्र अचर्म्मेत्यादौ लुप्तोपमाद्वयस्य मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ग) निर्गच्छन्निति। किञ्च, [illegible] निर्गच्छन् चन्द्रापीड़ः, अभ्यन्तरावस्थित एव बाह्या इति शेषः। प्राकारेण अन्तरितं व्यवहितं दर्शनं येषां तेषां। प्रतिपालयतां आत्मानं प्रतीक्षमाणानां राज्ञां सामन्तनर-पतीनां। उद्गता मयूखाः किरणा येषां तेषां। अलक्तकद्रवस्य लाक्षारसस्य द्युतिं कान्तिं मुष्णाति हरतीति तेन। अत्र द्युतिमिव द्युतिमिति सादृश्याक्षेपान्निदर्शनालङ्कारः। बहलेन प्रचुरेण, आलोकः प्रभा बालातपो नवोदितसूर्य्यकिरण इव तेन, अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। राज्याभिषेकानन्तरं प्रसृतेन विस्तृतेन, स्वप्रतापवह्निनेव स्थितेन, अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः। अत्यर्थं पिञ्जरीक्रियमाणाः पिङ्गलवर्णा विधीयमानाः, दश दिशो ददर्श। अत्र पिङ्गलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। यौवराज्याभिषेकाज्जन्म यस्य तेन, निजानु-रागेणेव चूड़ामणीनामालोकबालातपेनेति सम्बन्धः, रज्यमानमवनितलं भूतलं ददर्श। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। आसन्नानां अचिरभाविनां रिपुविनाशानां पिशुनेन सूचकेन दिग्दाहेनेव, चूड़ामणीनामालोकबालातपेनेति

মন্দরপর্ব্বতের পরিভ্রমণে চক্রাকারে ঘূর্ণিত ক্ষীরোদসমুদ্রের ঘোলার ন্যায় শুভ্রবর্ণ, রাবণের হস্ত-স্থিত কৈলাসপর্ব্বতের ন্যায় কান্তিসম্পন্ন, মুক্তার ঝালরসংযুক্ত এবং শতশলাকা-নির্ম্মিত একটা ছত্র ধারণ করিয়া কোন ভৃত্য চন্দ্রাপীড়ের রৌদ্র নিবারণ করিতেছিল।

(গ) সামন্তনরপতিগণ চন্দ্রাপীড়ের প্রতীক্ষা করতঃ দ্বারদেশে অবস্থান করিতেছিলেন, কিন্তু প্রাচীরে ব্যবধান করায় তাঁহাদিগকে ভিতর হইতে দেখা যাইতেছিল না; তাঁহাদের মুকুট-মণির কিরণজাল আলতার রসের সৌন্দর্য্য অপহরণ করিতেছিল এবং নবোদিত-সূর্য্য-কিরণের ন্যায় দীপ্তি পাইতেছিল; তখন চন্দ্রাপীড় নির্গত হইতে হইতে ভিতরে থাকিয়াই দেখিতে লাগিলেন যে, রাজ্যাভিষেকের পর বিস্তৃত স্বকীয় প্রতাপানলের ন্যায়ই যেন সেই মুকুটমণির প্রচুর কিরণজাল, দশদিক্ অত্যন্ত পিঙ্গলবর্ণ করিতেছিল, রাজ্যাভিষেক হইতে উৎপন্ন নিজের অনুরাগের ন্যায়ই যেন সেই কিরণজালে ভূতল রঞ্জিত হইতেছিল; অচির-

(१) धवलप्राकारान्तरित...। (२) क्वचित् अयं पाठो नास्ति।

मवनितलं, आसन्नरिपुविनाशपिशुनेन दिग्दाहेनेव पाटलीक्रियमाणमम्बरतलं, अभिमुखागतभुवनतललक्ष्मीचरणालक्तकरसेनेव लोहितायमानातपं दिवसं ददर्श। (त)

विनिर्गतश्च ससम्भ्रम-प्रचलित-गजघटा (१) सहस्रैरन्योन्यसङ्घट्ट-जर्जरितातपत्र-मण्डलैरादरावनत-मौलि-शिथिल-(२) मणिमुकुटपङ्क्तिभिरावर्जितरत्नकर्णपूरैः (३) कपोलस्थल-स्खलित-रत्नकुण्डलैराज्ञप्तसेनापति-निर्दिश्यमान-नामभिरवनि-भुजां चक्रवालैः प्रणम्यमानः, (थ) बहलसिन्दूररेणुपाटलेन क्षितितल-दोलाय-

सम्बन्धः पाटलीक्रियमाणं अम्बरतलं ददर्श अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा अभिमुखागताया जगत्त्रयेण आगामिन्याः भुवनतललक्ष्म्याः जगल्लक्ष्म्याः चरणालक्तकरसेनेव चूड़ामणीनामालोकबालातपेन, लोहितायमान आतपो यत्र तादृशं दिवसं ददर्श। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) विनीति। विनिर्गतश्च चन्द्रापीड़ः प्रथममेव शातक्रतवीमाशामभिप्रतस्थे इत्यन्वयः। प्रथमत-स्तृतीयाबहुवचनान्तपदानि अवनिभुजां चक्रवालैरिति बध्यमानस्य विशेषणानि। ससम्भ्रमं सत्वरं प्रचलितं गजघटानां हस्तिसमूहानां सहस्रं येषां तैः। अन्योन्यसङ्घट्टेन परस्परसङ्घर्षेण जर्जरितं बहुधा भग्नं आतपत्र-मण्डलं छत्रसमूहो येषां तैः। आदरेण अवनता ये मौलयो मस्तकानि तेभ्यः शिथिला स्रंसीभूता मणिमुकुट-पङ्क्तिर्येषां तैः। आवर्जिता अवनता रत्नकर्णपूरा मणिमयकर्णाभरणानि येषां तैः। कपोलस्थलयोर्गण्ड-देशयोरुपरि स्खलिते शिरोऽवनमनाद् गते रत्नकुण्डले मणिमयकर्णकुण्डलद्वयं येषां तैः। तथा आज्ञप्तेन तेषां नामान्यभिधातुमादिष्टेन सेनापतिना निर्दिश्यमानानि नामानि येषां तैः अवनिभुजां चक्रवालैः राज्ञां मण्डलैः समूहैः, प्रणम्यमानश्चन्द्रापीड़ः।

(द) बहलेति। इतस्तृतीयैकवचनान्तपदानि गन्धमादनेनेति बध्यमानस्य विशेषणानि। बहलैः

ভাবি-শত্রুবিনাশ সূচক দিগ্দাহের ন্যায়ই যেন সেই কিরণজাল আকাশকে আরক্তবর্ণ করিতেছিল এবং সম্মুখে আগত জগৎ-লক্ষ্মীর চরণের অলক্তকরসের ন্যায়ই যেন সেই কিরণ-জাল দিনের আলোক লোহিতবর্ণ করিতেছিল।

(থ) চন্দ্রাপীড় নির্গত হইলে সকল দিক্ হইতে সামন্তনরপতিগণ আসিয়া তাঁহাকে প্রণাম করিতে লাগিলেন; তখন তাঁহাদের বহুসংখ্যক হস্তিসমূহ তাড়াতাড়ি চলিতে লাগিল, পরস্পর সঙ্ঘর্ষবশতঃ ছত্রসমূহ ভগ্ন হইতে লাগিল; আদরে মস্তক অবনত করায় মণিময় মুকুটগুলি মস্তক হইতে শিথিল হইয়া পড়িল; রত্নময় কর্ণপূরগুলি অবনত হইল; মণিময় কুণ্ডলগুলি গালের উপরে আসিয়া দুলিতে লাগিল এবং চন্দ্রাপীড় তাঁহাদের নাম বলিবার জন্য আদেশ করিলে সেনাপতি, সকলের নাম বলিয়া দিতে লাগিলেন। (দ) গন্ধ-মাদননামে সেই গন্ধহস্তীটা চন্দ্রাপীড়ের পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতেছিল; তাহার কুম্ভমণ্ডল

(१) सम्भ्रमगजघटा (२) आदरादनवरतप्रणामशिथिलित...। (३) आवर्जितकर्णपूरैः।

मान-स्थूलमुक्ताकलापावचूलेन सित-कुसुम-माला-जाल-शबल-शिरसा संलग्न-सन्ध्यातपेन तिर्य्यगावर्ज्जित-श्वेतगङ्गाप्रवाहेण तारागण-दन्तुरित-शिखर-(१) शिलातलेन मेरुगिरिणेव गन्धमादनेनानुगम्यमानः, (द) कनकालङ्कारप्रभा-प्रतान-(२) कल्माषितावयवेन च दत्तकुङ्कुमस्थासकेनेवाकृष्यमाणेनेन्द्रायुधेन सनाथीकृतपुरोभागः शनैः शनैः प्रथममेव शतक्रतवीमाशामभिप्रतस्थे। (ध)

अथ चलितगजघटा-कम्पित-धवलातपत्र-(३) वनम्, अनेककल्लोल-परम्परा-

प्रचुरैः सिन्दूररेणुभिः पटलो रक्तीकृतकुम्भदेशस्तेन। चलितस्थै दोलायमानः स्थूलमुक्ताकलापो यस्य तादृश अवचूलः ध्वजाग्रबद्धाधोमुखवस्त्रं यस्य तेन "अवचूलः (पुं) ध्वजाग्रबद्धाधोमुखवस्त्र" इति शब्दकल्पद्रुमः। तथा सितकुसुममालानां जालेन समूहेन शबलं विचित्रं शिरो यस्य तेन। अतएव संलग्नः सन्ध्याया आतपो रागो यत्र तेनेति सिन्दूररञ्जितकुम्भसादृश्यम्। तिर्य्यक् आवर्ज्जितः पतितः श्वेतो गङ्गाप्रवाहो यस्मात्तेनेति प्रलम्बध्वजगतपताकासादृश्यम्। तथा तारागणेन नक्षत्रसमूहेन दन्तुरितं विषमीकृतं शिखरशिलातलं यस्य पाषाणो यस्य तेनेति सितकुसुममालासादृश्यम्। ईदृशेन मेरुगिरिणेव सुमेरुपर्वतेनेव गन्धमादनेन तदाख्येन पूर्ववर्णितेन गन्धहस्तिना अनुगम्यमानश्चन्द्रापीडः। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गसङ्कीर्णः श्रौतुपमालङ्कारः।

(ध) कनकेति। कनकालङ्कारप्रभाणां प्रतानेन बाहुल्येन कल्माषिता विचित्रीकृताः अवयवा अङ्गानि यस्य तेन, अतएव दत्ता गात्रेषु अर्पिताः कुङ्कुमस्थासकाः कुङ्कुमद्रवकृतहस्तबिम्बचित्राणि यस्मिन् तेनेव सता अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आकृष्यमाणेन केनाप्याकृष्य नीयमानेन इन्द्रायुधेन पूर्ववर्णितेन तदाख्यघोटकेन सनाथीकृतः ससंयुक्तीकृतः पुरोभागः सम्मुखदेशो यस्य सः, चन्द्रापीडः। शतक्रतोरिन्द्रस्येयमिति शातक्रतवी तामाशां पूर्वां दिशम्।

(न) अथेति। अथ चन्द्रापीडप्रस्थानानन्तरं, चलितासु गजघटासु कम्पितं धवलातपत्राणां आतपत्र-

প্রচুর সিন্দুররেণুতে রঞ্জিত করা হইয়াছিল; পিঠের উপরে যে ধ্বজ ছিল, তাহার পতাকা-সংলগ্ন বড় বড় মুক্তার মালা ভূতলে ঝুলিতেছিল; এবং শ্বেতবর্ণ পুষ্পমালাসমূহে তাহার মস্তক বিচিত্র করা হইয়াছিল; সুতরাং সন্ধ্যার রক্তিমা পতিত হইলে, গঙ্গার শ্বেতবর্ণ প্রবাহ নীচের দিকে পড়িতে লাগিলে এবং উপরের প্রস্তরখণ্ড নক্ষত্রসমূহে অসমানতল হইলে সুমেরুপর্ব্বতের ন্যায় সেই গন্ধমাদনকে দেখা যাইতেছিল। (ধ) কোন ভৃত্য চন্দ্রাপীড়ের অগ্রে অগ্রে সেই ইন্দ্রায়ুধকে আকর্ষণ করিয়া নিয়া যাইতেছিল, সুবর্ণময় অলঙ্কারের প্রভারাশিতে তাহার সকল অঙ্গ বিচিত্র করিয়াছিল তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন কুঙ্কুমরস-দ্বারা তাহার অঙ্গে হাতের পাঞ্জা চিত্র করিয়া দেওয়া হইয়াছে—এই ভাবে চন্দ্রাপীড় প্রথমেই পূর্ব্বদিক্-অভিমুখে প্রস্থান করিলেন।

(ন) তিনি প্রস্থান করিলে সকল সৈন্যগণ অদ্ভুত কোলাহল করিতে করিতে ভূতল

(१) दन्तुरितशिलातलेन। (२)...प्रभाकल्माषित...। (३)...कम्पितातपत्र...।

पतित-चन्द्रमण्डल-प्रतिविम्ब-सहस्रम्, महाप्रलय-जलधि-जलमिव प्लावितमही-तलम्, अत्र तोद्भूतकलकलम्, अखिलं (१) सञ्चचाल बलम्। (न)

उच्चलितस्य चास्य स्वभवनादुपपादितप्रस्थानमङ्गलो दुकूल-(२) वासाः सितकुसुमाङ्गरागो महता बलसमूहेन नरेन्द्रवृन्दैश्चानुगम्यमानः (३) धृतधवलात-पत्रो द्वितीय इव युवराजस्त्वरितपदसञ्चारिण्या करिण्या वैशम्पायनः समीपमा-जगाम (४) (प)। आगत्य च रजनिकर इव (५) रवेरासन्नवर्त्ती बभूव। (फ)

श्वेतच्छत्राणां वनं समूहो यस्मिन् तत्, अतएव अनेकासु कल्लोलपरम्परासु महातरङ्गश्रेणीषु पतितं चन्द्रमण्डल-प्रतिविम्बानां सहस्रं समूहो यस्य तादृशं, महाप्रलयकालीनजलधिजलमिव, प्लावितमहीतलं, अद्भुत आश्चर्यः उद्भूत उत्पन्नः कलकलः कोलाहलो यत्र तत्, अखिलं बलं चन्द्रापीडसैन्यं सञ्चचाल तत्पश्चादिति शेषः। अत्रोपमालङ्कारः।

(प) उच्चलितस्येति। किञ्च, उच्चलितस्य प्रस्थितस्य अस्य चन्द्रापीडस्य समीपमाजगामेति सम्बन्धः। उपपादितं वैजयिकहोमादिना ऋत्विग्भिः सम्पादितं प्रस्थानमङ्गलं यस्य सः, दुकूलवासाः परिहितसूक्ष्मवस्त्रः सितकुसुमैरङ्गरागो गात्रशोभा यस्य सः। धृतं केनचिद्भृत्येन मस्तकोपरि गृहीतं धवलातपत्रं यस्य सः, वैशम्पायनः, द्वितीयो युवराज इव, तादृशाडम्बरशालित्वादिति भावः। करिण्या तदारोहणेनेत्यर्थः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(फ) आगत्येति। आगत्य च वैशम्पायनः रवेः सूर्य्यस्य रजनिकरश्चन्द्र इव आसन्नवर्त्ती चन्द्रापीडस्य पार्श्ववर्त्ती बभूव। शुक्लपक्षप्रथमभागे दिवसावसाने नभसि चन्द्रो रवेरासन्नवर्त्ती भवतीति द्रष्टव्यम्। अत्रो-पमालङ्कारः। तथा रजनिकरो रवेरासन्नवर्त्ती भवति वैशम्पायनस्तु बभूवेति कालभेदात्प्रक्रमभङ्गदोषः, स च रजनिकरो यथा भवति तथा बभूवेति पाठेन समाधेयः।

প্লাবিত করিয়া তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিল; হস্তিসমূহ চলিতে লাগিলে আরোহি-গণের শ্বেতবর্ণ ছত্রসমূহ কম্পিত হইতে লাগিল, তাহাতে বহুতর বড় বড় তরঙ্গশ্রেণীর উপরে চন্দ্রমণ্ডলের প্রতিবিম্বসমূহ পতিত হইলে প্রলয়কালীন সমুদ্রজলপ্রবাহের ন্যায় সেই সৈন্য-গণকে দেখা যাইতে লাগিল।

(প) বৈশম্পায়ন দ্বিতীয় যুবরাজের ন্যায় একটা দ্রুতগামিনী হস্তিনীতে আরোহণ করিয়া নিজবাটী হইতে, প্রস্থিত চন্দ্রাপীড়ের নিকটে আগমন করিলেন; পুরোহিতগণ তাঁহার যাত্রাকালীন মঙ্গলকার্য্য সম্পাদন করিয়াছিলেন, তাঁহার পরিধানে সূক্ষ্ম বস্ত্র ছিল, শ্বেতবর্ণপুষ্পে শরীরের শোভা করা হইয়াছিল, এবং কোন ভৃত্য মস্তকের উপরে শ্বেতবর্ণ ছত্র ধারণ করিয়াছিল, বিশাল সৈন্যশ্রেণী এবং সামন্তরাজগণ তাঁহারও পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতেছিলেন। (ফ) চন্দ্র যেমন সূর্য্যের পার্শ্ববর্ত্তী হন, সেইরূপ বৈশম্পায়ন আসিয়া চন্দ্রাপীড়ের পার্শ্ববর্ত্তী হইলেন।

---

(१) सबलं। (२) —धवलदुकूल...। (३)—अनुगम्यमानः।
(४) समाजगाम (५) शशिधर इव।

अनन्तरमितश्चेतश्च 'निर्गतो युवराजः' इति समाकर्ण्य प्रधावतां बलानां भरेण चलित-कुलशैल-कीलित-जलधि-जल-तरङ्ग-गतेव तत्क्षणमाचकम्पे मेदिनी (ब)। सम्मुखागतैरन्यैरन्यैश्च प्रणमद्भिर्भूमिपालैः, अंशुलता-जाल-जटिल-चूलिकानां मणिमुकुटानामालोकेनोन्मिषितबहुलरोचिषाञ्च पत्रभङ्गिनीनां (१) केयूरमण्डलीनां प्रभासन्तानेन क्वचिद्विकीर्यमाण-चाष-पक्ष-क्षोदा इव, क्वचिदुत्पतित-शिखि-कुल-चलच्चन्द्रक-शत शारा इव, क्वचिदकाल-जलधर-तडित्तरला इव, क्वचित् सकल्पतरुपल्लवा इव, क्वचित् सशतक्रतुचापा इव (२) क्वचित् सबालातपा

(ब) अनेति। इतश्चेतश्च इतस्ततः इत्यर्थः युवराजो निर्गत इति वाक्यं समाकर्ण्य प्रधावतां तत्पश्चादिति शेषः, बलानां सैन्यानां भरेण, मेदिनी पृथिवी, चलितैः पक्षवत्तया गमनशीलैः कुलपर्वतैः प्रागुक्तैर्महेन्द्रादिभिः कीलिता विद्धा या जलधिस्तस्य जलतरङ्गगतेव सती तत्क्षणमाचकम्पे। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। चलितगजघटासाम्यद्योतनार्थं चलितकुलशैलकीलितेति विशेषणम्।

(भ) सम्मुखेति। परस्परं सम्मुखागतैः अन्यैश्च अन्यैश्च भिन्नभिन्नैः प्रणमद्भिर्भूमिपालैर्हेतुभिः। अंशुलतानां किरणश्रेणीनां जालेन जटिला विषमाः चूलिकाः चूडाः प्रान्तदेशा येषां तेषां मणिमुकुटानामालोकेन, तथा उन्मिषितानि उद्गतानि बहुलानि रोचींषि दीप्तयो यासां तासां पत्रभङ्गिनीनां पत्रलताविशिष्टानां केयूरमण्डलीनां प्रभासन्तानेन दीप्तिप्रवाहेण च कर्त्रा, क्वचिद्देशे विकीर्यमाणा विक्षिप्यमाणाः चाषाणां पक्षिणां पक्षक्षोदाः पतत्रचूर्णानि यासु ता इव, दश दिशः अक्रियन्त इत्यन्वयः। एवमन्यत्र। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। क्वचित् उत्पतितस्य उड्डीनस्य शिखिकुलस्य मयूरसमूहस्य चलता चन्द्रकशतेन मेचकसमूहेन पुच्छगतविचित्रचिह्नसमूहेनेति यावत् शारा विचित्रा इव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। क्वचित् अकाले यो जलधरो मेघस्तस्य तडिता विद्युता तरलाश्चपला इव। अत्रापि गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। क्वचित् कल्पतरुपल्लवैः सह विद्यमाना इति सकल्पतरुपल्लवा इव। गुणोत्प्रेक्षा। क्वचित् शतक्रतुचापैरिन्द्रधनुर्भिः सहेति

(ব) তদনন্তর "যুবরাজ বাটী হইতে নির্গত হইয়াছেন" এই কথা শুনিয়া সৈন্যগণ তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবিত হইতে লাগিল; তাহাদের পদভরে পৃথিবী, গমনশীল কুল-পর্ব্বতগণদ্বারা গ্রথিত-সমুদ্র-জল-স্থিত হইয়াই যেন কাঁপিতে লাগিল। (ভ) সামন্তরাজগণ পরস্পর পরস্পরের সম্মুখে উপস্থিত হইয়া নমস্কার করিতে লাগিলেন, তখন তাঁহাদের মণিময় মুকুটের প্রান্তভাগ কিরণজালে আলোকিত ছিল, সেই আলোকে এবং নানাবিধ-পত্রলতা-বিশিষ্ট ও অত্যন্ত-দীপ্তিশালী কেয়ূরসমূহের আলোকমালাতে, কোন জায়গায় দশ দিকে সোণাচড়ার (পাখীর) পাখা চূর্ণ করিয়া যেন বিক্ষিপ্ত করা হইতেছে বলিয়া বোধ হইতেছিল; কোন স্থানে উড্ডীন ময়ূরগণের গমনশীল পুচ্ছ-চিত্রেই যেন দশ দিক্ বিচিত্র করিয়াছিল; কোন স্থানে অকাল-মেঘের বিদ্যুতেই যেন দশ দিক্ চঞ্চল করিয়াছিল; কোন স্থানে দশ দিক্ যেন কল্পতরুর পল্লবযুক্ত, কোন স্থানে যেন ইন্দ্রধনুসমন্বিত এবং কোন স্থানে যেন নবো-

---

(१) पत्रभङ्गीनां। (२) सशतयज्ञचापा इव।

इवाक्रियन्त (१) दश दिशः (भ)। धवलान्यपि विविध-मणि-निकर-कल्माषैरुत्सर्पिभिश्चूड़ामणि-मरीचिभिर्मायूराणीवाराजन्त (२) राज्ञामातपत्राणि। (म)

क्षणेन च तुरगमयमिव महीतलम्, कुञ्जरमयमिव दिक्चक्रवालम्, आतपत्रमण्डलमयमिवान्तरिक्षम्, ध्वजवनमयमिवाम्बरतलम्, इभमदगन्धमय इव समीरणः, भूपालमयीव प्रजासृष्टिः, आभरणांशुमयीव दृष्टिः, (३) किरीटमय इवातपः, चामरमय इव दिवसः, (४) जयशब्दमयमिव त्रिभुवनमभवत् (य)। सर्वतश्च कुलपर्वताकारैः प्रचलद्भिर्मत्तवारणैः, उत्पातचन्द्रमण्डलनिभैश्च प्रेङ्खद्भिरातपत्रैः (५) संवर्त्तकाम्भोदगम्भीरभीमनादेन च ध्वनता दुन्दुभिना, तारकावर्ष-

सम्बतक्रतुचापा इव। गुणोत्प्रेक्षा। क्वचिच्च बालातपेन नवोदितरविकिरणेन सहेति सबालातपा इव, दश दिशः अक्रियन्त। अत्रापि गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) धवलानीति। धवलान्यपि राज्ञामातपत्राणि छत्राणि, विविधानां मणीनां तत्किरणानामित्यर्थः निकरेण समूहेन कल्माषैर्विचित्रैर्नानावर्णैः, उत्सर्पिभिः ऊर्द्ध्वप्रसारिभिः चूड़ामणिमरीचिभिः करणैः, मायूराणि मयूरपिच्छनिर्म्मितानीव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) क्षणेनेति। दिक्चक्रवालं दिक्समूहः। ध्वजवनमयमिव केतुसमूहमयमिव। इभमदगन्धमय इव हस्तिदानजलसौरभमय इव। दृष्टिर्दर्शनं आभरणांशुमयी राज्ञामलङ्कारकिरणमयीव। अत्र विकारार्थे मयट्प्रत्ययाद्विकारस्य च अन्यथारूपत्वेन गुणत्वात् सर्वत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) सर्वत इति। किञ्च कुलपर्वताकारैरित्यार्थोपमालङ्कारः। सर्वतः प्रचलद्भिर्मत्तवारणैर्मत्तहस्तिभिः। प्रलयसमये जगतामुत्पातसूचनायैव चन्द्रमण्डलसम्बलनमिति द्योतनार्थमुत्पातपदम्। अत्राप्यार्थी-

দিত সূর্য্য-কিরণ-সংযুক্ত করিয়াছিল। (ম) রাজগণের ছত্রসমূহ শ্বেতবর্ণ হইলেও, সেগুলি নানাবিধ মণির কিরণসমূহে বিচিত্র হইয়া এবং ঊর্দ্ধগামী চূড়ামণির কিরণে যেন ময়ূরপুচ্ছ-নির্ম্মিতের ন্যায় বিরাজ করিতে লাগিল।

(য) ক্ষণকালমধ্যে ভূতল যেন ঘোটকময় হইয়া গেল, দিঙ্মণ্ডল যেন হস্তিময় হইয়া পড়িল, আকাশ যেন ছত্রময় ও ধ্বজময় হইয়া উঠিল, বায়ু যেন হস্তীর মদজল-গন্ধময় হইল, সকল লোকই যেন রাজময় বলিয়া বোধ হইতে লাগিল, দৃষ্টিপাত যেন অলঙ্কারের কিরণময় হইয়া উঠিল, রৌদ্র যেন মুকুটময় হইয়া গেল, দিনটা যেন চামরময় হইয়াছে বলিয়া বোধ হইতে লাগিল এবং ত্রিভুবন যেন জয়-জয়শব্দময় হইয়া পড়িল। (র) এবং কুলপর্ব্বতের ন্যায় বৃহৎ-আকার মত্তহস্তিগণ সকল দিক্ ব্যাপ্ত করিয়া যাইতে লাগিল; ঔৎপাতিক

(१) क्रियन्ते। (२) राजन्ते, अरज्यन्त। (३) दृष्टिः। (४) किरीटमयं इव दिवसः, जय…।
(५) सलिलातपत्रैः।

सदृशेन विसर्पता गजशीकरनिकरेण, धूमकेतुधूसरैश्चोल्लसद्भिरवनिरजोदण्डकैः, निर्घात-पात-परुष-गम्भीरघोषैश्च करिकण्ठगर्जितैः, क्षतज-कण-वर्ष-बभ्रुणा च भ्रमता मतङ्गज-कुम्भ-सिन्दूर-रेणुना, संक्षुभित-जलधि-जल-कल्लोल-चञ्चलाभिश्च विसर्पन्तीभिः (१) तुरङ्ग-(२) मालाभिः, अन्धकारितदिगन्तरेण चानवरतं क्षरता (३) गज-मदजल-धारा-(४) दुर्दिनेन, कलकलेन च भुवनान्तरव्यापिना महा-प्रलयकाल इव संवृत्ते। (ख)

बल-बहल-(५) कोलाहलभीता इव धवल-ध्वज-निवह-निरन्तराहृता ययुः

पमालङ्कारः। प्रेङ्खद्भिः सञ्चलद्भिः। संवर्त्तकाम्भोदवत् प्रलयकालीनमहामेघवत् गम्भीरो भीमो भयानकश्च नादो यस्य तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। ध्वनता शब्दायमानेन। तारकावर्षसदृशेन नक्षत्रवृष्टितुल्येन इत्यार्थोपमा, विसर्पता समन्तात्प्रसरता, गजशीकरनिकरेण हस्तिशुण्डानिर्गतजलबिन्दुसमूहेन। धूमकेतुवद्धूसरैरिति लुप्तोपमा, उल्लसद्भिरुत्तिष्ठद्भिः, अवनिरजोदण्डकैः दण्डवदुद्धूयमानधूलीश्रेणीभिः। निर्घातः प्रागुक्त-लक्षणो वायुस्तस्य पातवत् परुषाः कर्कशाः गम्भीराश्च घोषाः शब्दा येषां तैः। क्षतजकणवर्षवत् रक्तबिन्दु-वृष्टिवत् बभ्रुणा पिङ्गलवर्णेनेति लुप्तोपमा, मतङ्गजकुम्भसिन्दूररेणुना हस्तिकुम्भस्थितसिन्दूरकणेन। संक्षुभिता उद्वेलिता ये जलधिजलकल्लोलास्तद्वच्चञ्चलाभिरिति लुप्तोपमा, विसर्पन्तीभिः प्रचलन्तीभिः तुरङ्गमालाभिर्घोटक-श्रेणीभिः। अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि दिगन्तराणि येन तेन, गजमदजलधारादुर्दिनेन हस्तिदानजल-धारावृष्ट्या। तथा भुवनान्तरव्यापिना कलकलेन सैन्यानां कोलाहलेन च करणेन, महाप्रलयकालः सम्प्राप्त उत्पन्न इव, तत्राप्याकुलत्वं तच्चलनादवश्यम्भावादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च सर्वथा विनाशो भाव्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ख) बलेति। धवलेन ध्वजनिवहेन निरन्तरं निरवकाशं यथा तथा आहृता आच्छन्नाः दश दिशः, बलानां सैन्यानां बहलेन बहुलेन कोलाहलेन भीता इव सत्यः, क्वापि अनिर्दिष्टस्थाने ययुः अदृश्यतां गता

চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায় ছত্রসমূহ চলিতে লাগিল; তাড্যমান দুন্দুভি, প্রলয়কালের মহামেঘের ন্যায় গম্ভীর ও ভয়ঙ্কর শব্দ করিতে লাগিল; হস্তিগণের শুণ্ড হইতে নক্ষত্রবৃষ্টির ন্যায় জলবিন্দুসমূহ পড়িতে লাগিল; ভূতল হইতে ধূমকেতুর ন্যায় ধূসরবর্ণ ধূলী উঠিতে লাগিল; হস্তিগণ নির্ঘাত-বায়ু-পতনের ন্যায় কর্কশ ও গম্ভীর শব্দে গর্জন করিতে লাগিল; হস্তিগণের কুম্ভস্থল হইতে রক্তবৃষ্টির ন্যায় সিন্দূরের রেণু উড়িতে লাগিল; উদ্বেলিত সমুদ্রজলের মহাতরঙ্গের ন্যায় ঘোটকগণ চলিতেছিল; হস্তিগণের মদজল-ধারা, সকল দিক্ অন্ধকার করিয়া অনবরত ক্ষরিত হইতেছিল এবং সৈন্যগণের কোলাহলে জগৎসংসার ব্যাপ্ত হইল—এই সকল কারণে সেই সময়ে যেন মহাপ্রলয়কাল উপস্থিত হইল।

(গ) শ্বেতবর্ণ ধ্বজসমূহে ঘনভাবে আবৃত দশ দিক্, সৈন্যগণের অত্যন্ত কোলাহলে ভীত

(१)···प्रविसर्पन्तीभिः। (२) तुरङ्गम..। (३) अनवरतक्षरता। (४) क्वचित् गजपदं नास्ति।
(५) बहलबल...।

क्वापि दश दिशः (ल)। मलिनावनि-(१) रजःसंस्पर्शशङ्कितमिव समद-गज-घटावचूल-सहस्र-संवृतमतिदूरमम्बरं (२) अपससार (व)। प्रबल-वेत्रि-वेत्रलता-(३) समुत्सार्य्यमाणा इव तुरग-खुररजोधूसरं (४) अर्ककिरणा मुमुचुः पुरोभागम् (श)। इभ-कर-शीकर-निर्वापण-त्रस्त इवातपत्र-संच्छादितातपो दिवसो ननाश (ष)। बल-भर-(५) जर्जरीकृता मद-कल-करि-चरण-शत-

इत्यर्थः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, ध्वजनिरन्तरावरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तथा दिक्षु कार्य्ये च कोलाहलभीतापसृतकुलकामिनीव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिश्चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(व) मलिनेति। समदानां गजघटानां हस्तिसमूहानां अवचूलसहस्रेण पृष्ठस्थध्वजपताकासमूहेन संवृतं आच्छन्नं अम्बरमाकाशं कर्त्तृ, मलिनानां अवनिरजसां धूलीनां संस्पर्शात् शङ्कितमिव सत् अतिदूरमपससार, तत्सैन्यानां दूर एव दृश्यतां ययाविति भावः। अत्रापि पूर्ववदुत्प्रेक्षा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, अतिशयोक्तिश्च, तथा अम्बरे स्त्रीरजःस्पर्शशङ्कया अपसृतजनव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिश्चेत्येतेषां पूर्ववत् सङ्करः।

(श) प्रबलेति। अर्ककिरणाः प्रबलस्य राजनियोगात् पूर्णप्रभावस्य वेत्रिणो वेत्रयष्टिधारिणो रक्षिजनस्य वेत्रलतया समुत्सार्य्यमाणा अपसार्य्यमाणा इव सन्तः, तुरगखुररजोधूसरं पुरोभागं मुमुचुस्तत्यजुः, राज-पुरोगामिसाधारणजनवदिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, परित्यागं प्रति तुरगखुररजोधूसरपदस्यार्थो हेतुरिति पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं तथा कार्य्ये चार्ककिरणेषु राजपुरःपरित्यागरूपसाधारणजनव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरित्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ष) इभेति। आतपत्रैः संच्छादित आतपो रविकिरणो यत्र तादृशः स दिवसः, इभानां हस्तिनां करशीकरैः शुण्डाग्निःसृतजलविन्दुभिर्यन्निर्वापणं आत्मनो विलयस्तेन त्रस्तो भीत इव सन्, ननाश अदृश्यतां गतः, आतपत्रैरावरणाद्दिवालोको नासीदिति भावः। जलविन्दुभिर्वह्नेरिव दिवालोकस्य निर्वापणसम्भावनेति बोध्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, दिवसनाशं प्रति आतपत्राच्छादनं हेतुरिति पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तथा दिवस-नाशासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरित्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(स) बलेति। भूमिर्भूतलं बलानां सैन्यानां भरेण जर्जरीकृता क्षुण्णा, तथा मदकलानां मदमत्तानां

হইয়াই যেন কোথাও চলিয়া গেল। (ব) আকাশতল, মদমত্ত-হস্তিগণের পৃষ্ঠবর্ত্তী পতাকা-সমূহে আচ্ছন্ন হইয়া, মলিন ধূলির সংস্পর্শের আশঙ্কায়ই যেন অতিদূরে সরিয়া গেল। (শ) সূর্য্যের কিরণসমূহ, বেত্রযষ্টিধারী প্রবল রক্ষিপুরুষের বেত্রযষ্টিদ্বারা অপসারিত হইয়াই যেন, অশ্বগণের খুরের ধূলীতে ধূসরবর্ণ সম্মুখভাগ পরিত্যাগ করিয়াছিল। (ষ) ছত্রসমূহে দিনের আলোক আবৃত হইয়াছিল, সুতরাং সেই দিনটা, হস্তিগণের শুণ্ড হইতে নির্গত জলবিন্দুসমূহে আপনার

(१) मलिनीकृतमिव। (२) अम्बरतलं। (३) प्रचलितवेत्रलता, प्रचुरवेत्रलता...।
(४)...धूसरतामीक्ष इवार्क..., धूसरतामीतार्क...। (५) बहलबलभर...।

তাড়িতা (১) দ্বিতীয়েব প্রয়াণভেরী ভৈরবং ভূমী ররাস (খ)। গুল্‌ফদ্বয়সে চ তুরঙ্গ-মুখ-বিনিঃসৃত-সিত-ফেন-পল্লবিতে (২) মদপয়সি মদস্রুতাং করিণাং প্রচস্খলুঃ পদে পদে পদাতয়ঃ (গ)। হরিতাল-পরিমলনিভেন চাতিপটুনা গজমদামোদেনানুলিপ্তস্য সামজস্যেবাপয়যৌ (৩) নিখিলান্যগন্ধগ্রহণসামর্থ্যং ঘ্রাণেন্দ্রিয়স্য। (ঘ)

ক্রমেণ চ প্রসর্পতো বলস্য পুরঃপ্রধাবতাং জন-কদম্বকানাং কোলাহলেন, তারতর-

---

করিণাং চরণপ্রপাতেন পদসমূহেন তাড়িতা চ সতী, দ্বিতীয়া প্রয়াণভেরীব প্রস্থানদুন্দুভিরিব ভৈরবং ভয়ানকং যথা তথা ররাস দধ্বান। অত্র দ্রব্যোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ, তথা শব্দকরণং প্রতি পূর্ববিশেষণদ্বয়ার্থো হেতুরিতি পদার্থহেতুকং কাব্যলিঙ্গঞ্চানয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(গ) গুল্‌ফেতি। পদাতয়ঃ সৈন্যাঃ পদে পদে প্রতিপদক্ষেপং, গুল্‌ফদ্বয়সে পাদগ্রন্থিপরিমিতে। প্রমাণে দ্বয়সচ্‌প্রত্যয়ঃ। তুরঙ্গাণাং মুখেভ্যো বিনিঃসৃতৈঃ সিতৈঃ শুভ্রৈঃ ফেনৈঃ পল্লবিতে বিস্তারিতে, মদস্রুতাং মদজলস্রাবিণাং করিণাং মদপয়সি দানজলে প্রচস্খলুঃ স্খলিত্বা পতিতবন্তঃ। অত্র গুল্‌ফদ্বয়সত্বাসম্বন্ধেঽপি তৎসম্বন্ধোক্তেরতিশয়োক্তিরলঙ্কারঃ।

(ঘ) হরীতি। হরিতালস্য স্বনামখ্যাতধাতুবিশেষস্য পরিমলনিভেন সৌরভসদৃশেন, অতিপটুনা নিতান্ততীব্রেণ চ গজমদামোদেন হস্তিনাং দানজলসৌরভেণ অনুলিপ্তস্য সংবদ্ধস্য সঞ্চিতস্য চ, সামজস্য তৎকরিণ ইব ঘ্রাণেন্দ্রিয়স্য জনগণনাসিকায়াঃ, নিখিলান্যগন্ধগ্রহণসামর্থ্যং অপয়যৌ বিননাশ, গজমদামোদেন স্বস্বমদামোদেন চ পরিপূর্ণত্বাদিতি ভাবঃ। অত্র লুপ্তোপমাশ্রৌতোপময়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ। "সামজস্তু গজে পুংসি সামোত্থে পুনরন্যবৎ।" ইতি মেদিনী।

(ক) ক্রমেণেতি। প্রসর্পতো বলস্য গচ্ছতঃ সৈন্যস্য। জনকদম্বকানাং লোকসমূহানাম্। তারতর-

---

নির্ব্বাণ হইয়া যাইবার ভয়েই যেন অদৃশ্য হইয়া গিয়াছিল। (খ) সৈন্যগণের পদভরে ভূতল জর্জ্জরিত হইতেছিল, আবার মদমত্ত হস্তিগণের চরণসমূহদ্বারাও তাড়িত হইতেছিল, সুতরাং সেই ভূতল দ্বিতীয় প্রয়াণদুন্দুভির ন্যায় ভয়ঙ্কর শব্দ করিতেছিল। (গ) মদস্রাবী হস্তিগণের মদজল, ভূতলে পড়িতেছিল, সেগুলি আবার অশ্বগণের মুখনিঃসৃত শুভ্রবর্ণ ফেনপুঞ্জে বিস্তৃত হইয়া গুল্‌ফ-(গোড়ালি, গুরমুরিয়া) পরিমাণে উচু হইয়াছিল, সুতরাং পদাতি সৈন্যগণ প্রত্যেক পদক্ষেপে তাহাতে স্খলিত হইয়া পড়িয়া যাইতেছিল। (ঘ) হরিতালের গন্ধের তুল্য এবং অত্যন্ততীব্র হস্তিগণের মদজলের গন্ধ, যাহাদের নাসিকায় যাইতেছিল, সেই সকল হস্তিগণের নাসিকার ন্যায় সৈন্যগণের নাসিকারও অন্য সকল গন্ধ গ্রহণ করিবার শক্তি লোপ পাইয়াছিল।

(ক) ক্রমে প্রচলিত সৈন্যগণের অগ্রগামী লোকসমূহের কোলাহলে, জয়ঢাকের অতিবৃহৎ

---

(১)...সঞ্চরচ্চরণসন্তাড়িতা, চরণশতখণ্ডিতা। (২)...পল্লবে। (৩) অপয়যৌ, সমুপয়যৌ, সমাযযৌ।

दीर्घेण च काहलानां निनादेन, खुर-रव-मिश्रितेन च वाजिनां हेषारवेण, (१) अनवरत-कर्णताल-स्वन-(२) सम्पृक्तेन च दन्तिनामाडम्बररवेण, ग्रैवेयक-किङ्किणी-क्वणितानुसृतेन (३) च गतिवशाद्विषम-(४) विराविणीनां घण्टानां टङ्कृतेन, मङ्गल-शङ्ख-शब्द-संवर्द्धित-ध्वनीनाञ्च प्रयाणपटहानां निनादेन, मुहुर्मुहु-रितस्ततस्ताड्यमानानाञ्च डिण्डिमानां (५) निःस्वनेन, जर्जरीकृतश्रवणपुटस्य मूर्च्छेवाभवज्जनस्य। (क)

शनैः शनैश्च बलसंक्षोभजन्मा क्षितेरनेकवर्णतया क्वचिज्जीर्ण-शफर-क्रोड़-धूम्रः, क्वचित् क्रमेलक-सटा-सन्निभः, क्वचित् परिणत-रल्लक-रोम-पल्लव-मलिनः,

दीर्घेण अत्यन्तोच्चैस्तरेण, काहलानां बृहड्ढक्कानाम्। अनवरतो यः कर्णतालयोरत्युच्चतालपत्रवद्विशालयोः कर्णयोः स्वनः शब्दस्तेन सम्पृक्तः सम्मिलितस्तेन। आडम्बररवेण विशालबृंहितध्वनिना। ग्रैवेयकाणि कण्ठाभरणानि तेषु याः किङ्किण्यः क्षुद्रघण्टिकास्तासां क्वणितै रवैरनुसृतः अनुगतस्तेन, गतिवशात् विषम-विराविणीनां भयङ्करशब्दकारिणीनां घण्टानां कण्ठलम्बितानामित्यर्थः टङ्कृतेन 'टं टं' शब्देन। मङ्गलशङ्खशब्दैः संवर्द्धिता ध्वनयो येषां तेषां, प्रयाणपटहानां यात्राढक्कानां। जर्जरीकृतं प्रव्यथितं श्रवणपुटं यस्य तस्य जनस्य मूर्च्छा मोहः अभवदिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) शनैरिति। बलसंक्षोभात् सैन्यस्य ससंरम्भचलनाज्जन्म यस्य स तादृशो रेणुरुत्पपातेति वक्ष्यमाण-क्रिययान्वयः। क्षितेर्गमनाधारभूतभूतलस्य अनेकवर्णतया हेतुना। क्वचित् धूसरमृत्तिकामयभूमौ, जीर्ण-शफरस्य परिणतप्रोष्ठीमत्स्यविशेषस्य क्रोड़वत् धूम्रो धूम्रलवर्णः। क्वचित् पिङ्गलमृत्तिकामयभूतले, क्रमेलकस्य उष्ट्रस्य सटासन्निभो जटातुल्यः। क्वचित् कृष्णमृत्तिकामयस्थाने, परिणतस्य वृद्धस्य रल्लकस्य हरिणविशेषस्य रोम्णां पल्लववत् गुच्छवत् मलिनः कृष्णवर्णः। "रल्लकः कम्बले मृतः। तथैव कम्बलमृगे" इति हेमः। क्वचित् पाण्डुमृन्मयस्थले, वटलकुचादिपत्रेषु क्रिमिभिर्भक्षणाया: कृतत्वात् पवनसम्बन्धिनी ऊर्णा भवन्ति पत्रोर्णा, परिष्कृत-

শব্দে, খুরের শব্দ-মিশ্রিত অশ্বগণের হ্রেষারবে, হস্তিগণের অবিশ্রান্ত-সঞ্চালিত বৃহৎকর্ণ-শব্দের সহিত বিশাল বৃংহিতধ্বনিতে, এবং তাহাদের কণ্ঠালঙ্কারের অন্তর্গত কিঙ্কিণীর শব্দমিশ্রিত গমনবেগে ভয়ঙ্করশব্দকারী ঘণ্টাসমূহের 'টংটং' শব্দে, মাঙ্গলিক শঙ্খের শব্দে পরিবর্দ্ধিত প্রয়াণ-ঢক্কার শব্দে এবং সকলদিকে অনবরত বাদ্যমান ডিণ্ডিমের (ডেঙ্করীর) ধ্বনিতে লোকের কর্ণযুগল জর্জরিত করিয়াছিল এবং তাহাতেই যেন তাহাদের মূর্চ্ছা উপস্থিত হইয়াছিল।

(খ) সৈন্যগণের সম্মর্দ্দবশতঃ ভূতল হইতে ধূলি উঠিতে লাগিল; ভূতল নানাবর্ণ বলিয়া কোন স্থলে সেই ধূলিগুলি বৃদ্ধ প্রোষ্ঠীমৎস্যের ক্রোড়ের ন্যায় ধূসরবর্ণ, কোন স্থলে উষ্ট্রের জটার ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ, কোন স্থলে বৃদ্ধ হরিণবিশেষের লোমগুচ্ছের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ, কোন স্থানে

(१) हेषारवेण। (२)...स्वर...। (३)...अनुगृहीतेन। (४) गतिवशविषम...।
(५) विरदडिण्डिमानां।

क्वचित् पत्नोर्ण-(१) तन्तुपाण्डुरः, क्वचिज्जरठ-मृणालदण्डधवलः, क्वचिज्जरत्कपि-केशर-(२) कपिलः, क्वचिद्धर-(३) वृषभ-रोमन्थ-फेन-पिण्ड-पाण्डुरः, (ख) त्रिपथगाप्रवाह इव हरिचरणप्रभवः, (ग) कुपित इव मुञ्चन् क्षमाम्, (घ) आरब्ध-परिहास इव रुन्धन्नयनानि, (ङ) तृषित इव पिबन् करि-कर-शीकर-जलानि, (च) पक्षशालिवोत्पतन् गगनतलम्, (छ) अलिनिवह इव मुञ्चन्

कौशेयवस्त्रं तस्य तन्तुवत् पाण्डुरः। "पत्रोर्णं धौतकौशेय"मित्यमरः। क्वचित् श्वेतमृत्तिकास्थाने, जरठः परिणतो यो मृणालदण्डस्तद्वत् धवलः। क्वचित् पिङ्गलवर्णमृत्तिकामयस्थानान्तरे, जरतः स्थविरस्य कपेर्वानरस्य केशरवत् कपिलः पिङ्गलवर्णः। क्वचित् पाण्डुवर्णमृत्तिकामयस्थानान्तरे, हरवृषभस्य शिववृषस्य रोमन्थेन चर्वितचर्वणेन यः फेनपिण्डस्तद्वत् पाण्डुरः। एषु प्रत्येकवाक्य एव लुप्तोपमालङ्कारः। अविशेषे हरवृषमिति विशेषोपादानादविशेषे विशेषाख्यदोषः, वरवृषमिति पाठेऽपि स एव, हरपदपरित्यागे तु तद्दोषाभावः।

(ग) त्रिपथेति। त्रिपथगाया गङ्गायाः प्रवाह इव, हरीणामश्वानां चरणेभ्यः पक्षे हरेर्नारायणस्य चरणात्, प्रभवतीति सः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(घ) कुपित इति। कुपितो जन इव, क्षमां भूतलं सहिष्णुताञ्च मुञ्चन् परित्यजन्। एकत्र अधीरत्वादन्यत्र उड्डयनादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ङ) आरब्धेति। आरब्धः परिहासः कैश्चित् सह नर्म्म येन स तादृशो जन इव, नयनानि लोकानां चक्षूंषि परिहासजनानां नयनानि च रुन्धन् आवृण्वन्। करेण नयनावरणं लौकिकपरिहासे प्रचलितम्। पूर्णोपमा।

(च) तृषित इति। तृषितः पिपासार्त्तो जन इव, करिकरशीकरजलानि हस्तिशुण्डानिःसृतजलबिन्दून् पिबन् आर्द्रीभूय शोषयन्, पीतानि कुर्वंश्च। पूर्णोपमा।

(छ) पक्षेति। पक्षवान् पक्षीव, गगनतलं उत्पतन् उड्डयमानः। पूर्णोपमा।

পরিষ্কৃত পট্টবস্ত্রের সূতার ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ, কোন স্থানে পরিণত মৃণালের ন্যায় শুভ্রবর্ণ, কোন স্থানে বৃদ্ধ বানরের কেশরের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ, আবার কোন স্থানে শিবের বৃষের চর্ব্বিতচর্ব্বণের সময় উৎপন্ন ফেন-পুঞ্জের ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ ছিল। (গ) নারায়ণের চরণকমল হইতে গঙ্গা-প্রবাহের ন্যায় অশ্বগণের খুর হইতে সেই ধূলিসমূহ উৎপন্ন হইতেছিল; (ঘ) ক্রুদ্ধ লোক যেমন সহিষ্ণুতা ত্যাগ করে, সেই ধূলিসমূহও তেমন ভূতল ত্যাগ করিতেছিল; (ঙ) পরিহাস আরম্ভ করিয়া কোন লোক যেমন হস্তদ্বারা অপর লোকের নয়ন আচ্ছাদন করে, সেই ধূলিসমূহও তেমন লোকের নয়ন আচ্ছাদন করিতেছিল; (চ) পিপাসাতুর লোক যেমন জল পান করে, সেই ধূলিসমূহও তেমন হস্তিগণের শুণ্ড হইতে নিঃসৃত জলবিন্দু সকল পান (শোষণ) করিতেছিল; (ছ) সেই ধূলিগুলি পক্ষীর ন্যায় আকাশে উঠিতেছিল; (জ) ভ্রমর-

(१) उत्पत्नोर्णा...। (२)...केश...। (३) वर...।

मदलेखाम्, (ञ) मृगपतिरिव रचयन् करिकुम्भस्थलीषु पदम् (झ) उपात्त-विजय इव म्लक्षन् पताकाः, (१) (ञ) जरागम इव पाण्डुरीकुर्वन् शिरांसि, (ट) मुद्रयन्निव पक्ष्माग्रसंस्थितो दृष्टिम्, (ठ) आजिघ्रन्निव मकरन्द-मधु-विन्दु-पङ्क्लग्नः (२) कर्णोत्पलानि, (ड) मद-कल-करि-कर्ण-ताल-ताड़न-त्रस्त इव विशन् (३) कर्ण-(४) शङ्खोदर-विवराणि, (ढ) पीयमान इवोन्मुखीभिरवनि-

(ञ) अलीति। अलिनिवहो भ्रमरसमूह इव, मदलेखां हस्तिनां मदजलश्रेणीं चुम्बन् स्पृशन् तत्संयोगं कुर्वंश्च। पूर्णोपमा।

(झ) मृगेति। मृगपतिः सिंह इव, करिकुम्भस्थलीषु पदं प्रतिष्ठां पदक्षेपञ्च रचयन् कुर्वन्, एकत पतनादन्यत्राक्रमणादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ञ) उपात्तेति। उपात्तविजयी युद्धे लब्धजयो राजेव, पताका वैजयन्तीः म्लक्षन् स्पृशन् अपहरंश्च। जिता हि विजितशत्रूणां पताका हरतीति प्रसिद्धं। पूर्णोपमा।

(ट) जरेति। जरागमो वार्द्धक्यमिव, लोकानां शिरांसि पाण्डुरीकुर्वन्; एकत्र कैश्यव्यापनादन्यत्र कैशपाकादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ठ) मुद्रयन्निति। पक्ष्मणां नयनलोम्नां अग्रेषु संस्थितः सन् दृष्टिं मुद्रयन् सङ्कोचयन्निव, तत्पतन-शङ्कया लोकानां नयनोन्मीलनासम्भवादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ड) मकेति। मकरन्देषु तेषां कर्णोत्पलानामेव किञ्जल्केषु ये मधुविन्दुपङ्काः माद्रसविन्दवस्तेषु लग्नः संसक्तः सन्; लोकानां कर्णोत्पलानि आजिघ्रन् तद्गन्धं गृह्णन्निव। अत्र मकरन्दमधुशब्दयोः पर्यायतया आपाततः पुनरुक्ततामप्रतीतावपि परं मकरन्दशब्दस्य किञ्जल्कार्थपर्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः क्रियोत्प्रेक्षया सङ्कीर्यते। "मकरन्दः (पुं)...किञ्जल्के क्लीं" इति शब्दकल्पद्रुमः।

(ढ) मदेति। मदकलानां मदमत्तानां करिणां कर्णतालाभ्यां तालवृन्तव्यजनाभ्यां कर्णाभ्यां यत्ताड़न प्रहारस्तस्मात् त्रस्तो भीत इव सन्, कर्णयोः शङ्खानां ललाटास्थ्नाञ्च उदरविवराणि अभ्यन्तरच्छिद्राणि विशन् प्रविशन्। क्रियोत्प्रेक्षा।

সমূহের ন্যায় হস্তিগণের মদধারাতে সংযুক্ত হইতেছিল; (ঝ) সিংহের ন্যায় হস্তিগণের কুম্ভস্থলে অবস্থান করিতেছিল; (ঞ) বিজয়ী রাজা যেমন যুদ্ধে বিজিত শত্রুর পতাকা সকল গ্রহণ করেন, সেই ধূলিসমূহও তেমন রথের পতাকা সকল গ্রহণ (স্পর্শ) করিতেছিল; (ট) বার্দ্ধক্যের ন্যায় লোকের মস্তক শুভ্রবর্ণ করিতেছিল; (ঠ) লোকের নয়ন-লোমের অগ্রে থাকিয়া যেন তাহাদের দৃষ্টি সঙ্কুচিত করিতেছিল; (ড) কর্ণোৎপলের কেশর-স্থিত গাঢ় মধুবিন্দুতে সংলগ্ন হইয়া যেন সেই কর্ণোৎপলগুলির আঘ্রাণ করিতেছিল; (ঢ) মদমত্ত হস্তিগণের বৃহৎ কর্ণের তাড়নের ভয়েই যেন তাহাদের কর্ণ ও ললাটাস্থির ভিতরের ছিদ্রে

(१) पताका। (२)...बिन्दुवृन्दः। (३) आविशन्। (४) करिकर्ण...।

पति-मुकुटमणि-भङ्ग-(१) मकरिकाभिः, (ण) अभ्यर्च्यमान इव तुरग-मुख-विक्षेप-विप्रुतैः फेन-पल्लव-कुसुम-स्तवकैः, (त) अनुगम्यमान इव मत्त-गज-घटा-कुम्भ-भित्ति-सम्भवेन धातुधूलिवलयेन, (थ) आलिङ्ग्यमान इव चलच्चामर-कलापविधुतेन (२) पटवासपांशुना, (द) प्रोत्साह्यमान इव (३) नरपति-शेखर-सहस्र-परिच्युतैः कुसुमकेशररजोभिः, (ध) उत्पातराहुरिव दिवसकर-मण्डलमकाण्ड एव पिबन्, (न) नृप-प्रस्थान-मङ्गल-प्रतिसर-वलय-मालिकासु

(ण) पीयेति। उन्मुखीभिः ऊर्ध्ववदनाभिः, अवनिपतीनां राज्ञां मुकुटेषु याः मणिभङ्गमकरिकाः रत्नखण्डनिर्म्मिता मकराकाराश्चाभिः पीयमान इव, तदभ्यन्तरगतत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(त) अभ्यर्च्येति। तुरगाणां मुखविक्षेपैर्विप्रुतैर्विक्षिप्तैः, फेनपल्लवाः विस्तृतफेना एव कुसुमस्तवकास्तैः, अभ्यर्च्यमानः पूज्यमान इव, तदुपरि पतनादिति भावः। अत्र निरङ्गरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षा।

(थ) अन्विति। मत्तगजघटायाः कुम्भभित्तेः सम्भवति प्रसरतीति तेन, धातुधूलिवलयेन गैरिकादि-रेणुमण्डलेन, अनुगम्यमान इव, तस्यापि धूल्यनुसरणादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(द) आलिङ्ग्येति। चलतां स्पन्दमानानां राज्ञां समीपे भृत्यैरान्दोलितानामित्यर्थः चामराणां कलापेन समूहेन विधुतः सञ्चालितस्तेन, पटवासपांशुना पिष्टातकरेणुना आलिङ्ग्यमान इव, परस्परसंयोगादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ध) प्रोत्साह्येति। नरपतीनां शेखरसहस्रात् शिरोवेष्टनमालासमूहात् परिच्युतैः कुसुमकेशररजोभिः पुष्पकिञ्जल्कपरागैः, प्रोत्साह्यमानः प्रसर्त्तुं प्रकृष्टमुत्साहं नीयमान इव, तेषामपि प्रसरणेन प्रवर्त्तित्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(न) उत्पातेति। उत्पातराहुः असमयोदयात् लोकानामुत्पातसूचको राहुः स इव, अकाण्ड एव असमय एव दिवसकरमण्डलं सूर्य्यबिम्बं पिबन् आक्रमन् ग्रसंश्च। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(प) नृपेति। नृपाणां प्रस्थाने प्रयाणवेलायां ये मङ्गलप्रतिसराः माङ्गलिकहस्तसूत्राणि त एव वलयानि

প্রবেশ করিতেছিল; (ণ) রাজগণের মুকুটে মণিখণ্ডদ্বারা যে মকরাকার অংশ নির্ম্মিত ছিল, সেইগুলি উন্মুখ হইয়া যেন সেই ধূলিসমূহকে পান করিতেছিল; (ত) অশ্বগণের মুখবিক্ষেপে ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত বিস্তৃত ফেনরূপ পুষ্পগুচ্ছদ্বারা সেই ধূলি যেন পূজিত হইতেছিল; (থ) মদমত্ত হস্তিগণের কুম্ভস্থল হইতে নির্গত গৈরিকাদিধাতুর রেণুগুলি যেন সেই ধূলিসমূহের অনুগমন করিতেছিল; (দ) হস্তীর কুম্ভস্থিত আবীরের রেণুগুলি, আন্দোলিত চামর সমূহদ্বারা সঞ্চালিত হইয়া সেই ধূলিসমূহকে যেন আলিঙ্গন করিতেছিল; (ধ) রাজগণের মস্তকমালা হইতে নির্গত পুষ্পের রেণুসকল, সেই ধূলিগুলিকে যেন বিস্তৃত হইয়া উড়িবার জন্য উৎসাহিত করিতেছিল; (ন) সেই ধূলিসমূহ, ঔৎপাতিক রাহুর ন্যায় অসময়েই সূর্য্যমণ্ডলকে গ্রাস করিতেছিল; (প) যাত্রা করিবার সময়ে রাজগণ হস্তে যে মাঙ্গলিক সূত্র বন্ধন

---

(१)...मणिपत्रभङ्ग...। (२)...विधुतेन। (३) प्रसाध्यमानः, प्रोत्साध्यमानः।

(१) गोरोचनाचूर्णायमानः, (प) क्रकच-क्षत-चन्दन-चोद-धूसरो रेणुरुत्पपात (फ)। अपरिमाण-बल-संघट्ट-समुपचीयमानश्च शनैः शनैः संहरन्निव विश्वमशेषं, अकाल-काल-मेघ-पटल-मेदुरो विस्तारमुपगन्तुमारेभे। (ब)

तेन च क्रमेणोपचीयमानबहलमूर्त्तिना दिग्विजयमङ्गलध्वजेन, रिपु-कुल-कमल-प्रलय-नीहारेण, राजलक्ष्मी-विलास-पटवासचूर्णेन, अहितातपत्र-पुण्डरीक-षण्ड-तुषारेण, (२) सेनाभर-(३) पीड़ित-महीतल-मूर्च्छान्धकारेण, चलच्चल-(४)

तेषां मालिकासु राजिषु, गोरोचनाचूर्णायमानः गोरोचनारेणुवदाचरन् दृश्यमान इत्यर्थः। अत्र काव्यगतोपमालङ्कारः।

(फ) क्रकचेति। क्रकचेन करपत्रेण क्षतस्य छेदनवेलायां विहितो यश्चन्दनचोदः चन्दनतरुकाष्ठसक्तुः तद्वत् धूसरः, रेणुमूर्त्तलधूलिः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ब) अपरीति। किञ्च अपरिमाणबलस्य असंख्यसैन्यस्य संघट्टेन पदसम्मर्द्देन समुपचीयमानो वर्द्धमानः, अतएव अशेषं विश्वं सर्वं जगत् शनैः शनैः, संहरन्निव व्याप्नुवा सङ्कोचयन्निव, अकाले यत् कालं कृष्णवर्णं मेघपटलं तद्वन्मेदुरः सान्द्रः, स रेणुरिति शेषः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालुप्तोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(भ) तेनेति। किञ्च, तेन रजसा त्रिभुवनमलङ्कृतम् इत्यन्वयः। अत्र तृतीयैकवचनान्तपदानि रजसेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। उपचीयमाना वर्द्धमाना बहला विशाला मूर्त्तिर्यस्य तेन। अतएव दिग्विजयस्य मङ्गलध्वजेन माङ्गलिककेतुदण्डस्वरूपेण, तदुत्थानादिति भावः। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। रिपुकुलान्येव कमलानि पद्मानि तेषां प्रलये विनाशे नीहारेण तुषारस्वरूपेण, तुषारपातेन पद्मानामिव तन्निपातेन रिपुकुलानां विनाशसूचनादिति भावः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। राजलक्ष्म्या विलासस्य वेशविन्यासस्य पटवासचूर्णं पिष्टातकरेणुः फल्गुरिति यावत् तेन। वीरभोग्या हि राजलक्ष्मीर्वीरभरोत्थितेनैव रेणुनात्मानमलङ्करोतीति भावः। अत्र रजसि पटवासचूर्णत्वारोपः शाब्दः, राजसम्पत्त्यां विलासिस्त्रीत्वारोपस्तु आर्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकमलङ्कारः। निरङ्गरूपकमिति केचित् अहितानां शत्रूणां आतपत्राणि छत्राण्येव पुण्डरीकाणि श्वेतपद्मानि तेषां षण्डस्य समूहस्य तुषारो हिमं तेन। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। रिपुकुलेत्यादिना विनाशकत्वेन हिमत्वारोपः, अत्र तु आवरकत्वेनेति भेदः। सेनाया भरेण

করিয়াছিলেন, তাহার উপরে সেই ধূলিসমূহকে গোরোচনা চূর্ণের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ফ) এবং করাত দিয়া চন্দনগাছ কাটিবার সময় যে গুঁড়ো বাহির হয়, তাহার মত ধূসরবর্ণ সেই ধূলোগুলি উড়িতে লাগিল। (ব) অকাল সম্ভূত কৃষ্ণবর্ণ মেঘসমূহের ন্যায় ঘনীভূত সেই ধূলিসমূহ, অসংখ্য সৈন্যগণের পদসংঘর্ষে বৃদ্ধি পাইয়া, ধীরে ধীরে সমগ্র ভূমণ্ডলকেই যেন সঙ্কুচিত করিতে করিতে ক্রমে বিস্তার পাইতে আরম্ভ করিল।

(ভ) এবং সেই ধূলিসমূহের বিশালমূর্ত্তি ক্রমে বৃদ্ধি পাইতে লাগিলে সেগুলিকে দিগ্বিজয়ের মাঙ্গলিকধ্বজস্বরূপ দেখা যাইতে লাগিল; আর সেগুলি শত্রুগণরূপ পদ্মবনের

---

(१)···प्रतिसरमालिकासु। (२)···खण्डनतुषारेण। (३) सैन्यभर...। (४) चलच्चलबल...।

जलद-काल-कदम्ब-कुसुमोद्गमेन, दिवसकर-कर-(१) कमल-वनोद्दलन-द्विपयूथेन, गगन-महीतल-प्लावन-प्रलय-पयोधि-पूरेण, त्रिभुवन-लक्ष्मी-शिरोऽवगुण्ठन-पटेन, (भ) महावराह-केशर-निकर-कर्वुरेण, प्रलयानल-धूम-राजि-मांसलेन, (म) पातालतलादिवोत्तिष्ठता, चरणेभ्य इव निर्गच्छता, लोचनेभ्य इव निष्पतता, दिग्भ्य इवागच्छता, नभस्तलादिव पतता, पवनादिवोल्लसता, रविकिरणेभ्य इव सम्भवता, (य) अनपहृतचेतनेन निद्रागमेन, अनवगणित-

पीडितस्य महीतलस्य मूर्च्छा मोहस्तस्य अन्धकारस्तिमिरं तेन। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः। जलदं वर्षं कैन्यमेव जलदकालः प्रावृट् तस्य कदम्बकुसुमोद्गमेन विषमत्वात्। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। दिवसकरस्य सूर्यस्य कराः किरणा एव कमलवनानि तेषां उद्दलनं विनाशने द्विपयूथं हस्तिसमूहस्तेन। द्विपयूथं यथा कमलवनानि विनाशयति तथाऽसौ रजोराशिरपि सूर्यकिरणानहृश्यतामयनेन विनाशयति खेति भावः। अत्र पूर्ववदलङ्कारः। गगनमेव महीतलं तस्य प्लावने प्रलयपयोधिपूरस्तेन। अत्रापि पूर्ववदेवालङ्कारः। त्रिभुवनलक्ष्म्या अवगुण्ठनपटस्तेन। अत्र त्रिभुवनशोभायां स्त्रीत्वारोप आर्थः, रजोराशौ तदवगुण्ठनपटत्वारोपस्तु शाब्द इत्यर्कदेशविवर्तिरूपकमलङ्कारः। अत्रापि निरङ्गं रूपकमिति केचित्।

(भ) महेति। महावराहस्य नारायणतृतीयावतारस्य केशरनिकरवत् कर्वुरेण विचित्रवर्णेन। प्रलयानलस्य धूमराजिवत् मांसलेन परिपुष्टेन। अनयोः प्रत्येकं लुप्तोपमालङ्कारः।

(म) पातालेति। पातालतलादुत्तिष्ठतेव मूलादर्शनात्, सैन्यानां चरणेभ्यो निर्गच्छतेव प्रत्येकचरणलग्नत्वात्, सैनिकानां लोचनेभ्यो निष्पततेव तत्रापि लग्नत्वात्, दिग्भ्य आगच्छतेव तासु सर्वास्वेव दर्शनात्, नभस्तलात् पततेव तत्र दृष्टिपथं यावद्दर्शनात्, पवनादुल्लसता वायुतः प्रादुर्भवतेव सर्ववायुप्रवहणात्, तथा रविकिरणेभ्यः सम्भवतेव तत्रापि सर्वत्र दर्शनात्। एषु प्रत्येकवाक्ये क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च सर्वतोविसारित्वं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(य) अनपेति। अनपहृता न विलोपिता चेतना चैतन्यं येन तेन, निद्रागमेन निद्राविशेषरूपेण।

তুষার, রাজলক্ষ্মীর বেশবিন্যাসের আবীর, শত্রুগণের ছত্ররূপ পদ্মবনের হিম, সৈন্যগণের পদভরে পরিপীড়িত মহীতলের মূর্চ্ছার অন্ধকার, প্রচলিত সৈন্যরূপ বর্ষাকালের কদম্বপুষ্প, সূর্য্যকিরণরূপ পদ্মবন দলিত করিতে হস্তিসমূহ, আকাশরূপ মহীতল প্লাবন করিতে প্রলয়কালীন সমুদ্রের প্রবাহ এবং ত্রিভুবনলক্ষ্মীর মস্তকাবগুণ্ঠন করিবার বস্ত্রস্বরূপ বিরাজ করিতেছিল; (ম) আর সেই ধূলিসমূহ আদিবরাহের কেশর-সমূহের ন্যায় বিচিত্রবর্ণ এবং প্রলয়াগ্নির ধূমসমূহের ন্যায় পরিপুষ্ট দেখা যাইতেছিল; (য) আর সেই ধূলিগুলি পাতাল হইতে যেন উঠিতেছিল, সৈন্যগণের চরণ হইতে যেন নির্গত হইতেছিল, তাহাদের নয়ন হইতে যেন নিঃসৃত হইতেছিল, সকল দিক্ হইতে যেন আসিতেছিল, আকাশ হইতে যেন পড়িতেছিল, বায়ু হইতে যেন আবির্ভূত হইতেছিল এবং সূর্য্যের কিরণ হইতে যেন উৎপন্ন হইতেছিল; (র) এবং সেই

(१) दिवसकरकमल, दिवसकरकिरणकमल...।

सूर्य्येण (१) अन्धकारेण, अघर्म्मकालोपस्थितेन भूमिगृहेण, अनुदिततारागणनिवहेन बहुलनिशाप्रदोषेण, अपतित-सलिलेन (२) जलधरसमयेन, अभ्रान्त-भुजङ्गेन (३) रसातलेन, (र) हरिचरणेनेव संवर्द्धमानेन त्रिभुवनमलङ्घ्यत रजसा। (ल)

विकचकुवलयवनमिव नवोदकेन गगनतलमवष्टभ्यमानमलक्ष्यत क्षीरोद-

रजसो नेत्रनिमीलनहेतुतया निद्रासाम्यं अथ च चेतनानपहरणात्ततो वैशिष्ट्यमिति भावः। अतएवात्र अधिकारूढवैशिष्ट्यरूपकमलङ्कारः। न अवगमितः अस्तगमनादवज्ञातः सूर्य्यो येन तेन, अन्धकारेण तिमिररूपेण। सर्वपदार्थावरणहेतुत्वादन्धकारसाम्यं अथ च सति सूर्य्ये प्रादुर्भावात्ततो वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। अघर्म्मकाले अर्थाद्ग्रीष्मकाले उपस्थितेन भूमिगृहेण भूगर्भान्तर्गतगृहस्वरूपेण। ग्रीष्मकाले हि लोकैः रविकिरणसन्तापशान्तये भूगर्भगृहमाश्रीयते, रविकिरणनिवारणहेतुतया भूगर्भगृहसाम्यं अथ च अग्रीष्मकाले उपस्थितत्वात्ततो वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। न उदितस्तारागणानां निवहः समूहो यत्र तेन, बहुलनिशाप्रदोषेण कृष्णपक्षरजनीमुखस्वरूपेण। निविडान्धकारोपगमात् कृष्णपक्षरजनीमुखसाम्यं तारागणानुदयाच्च तद्वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। ताराणामतिप्राचुर्य्यद्योतनार्थं गणनिवहेति पर्य्यायशब्दद्वयोपादानम्। न पतितं सलिलं वर्षाजलं यत्र तेन, जलधरसमयेन वर्षाकालेन। सूर्य्यावरणाद्वर्षाकालसाम्यं वृष्टिजलाभावाच्च तद्वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। न भ्रान्ता विचरिताः भुजङ्गाः सर्पा यत्र तेन, रसातलेन पातालस्वरूपेण। गाढ़ान्धकारप्रादुर्भावात् पातालसाम्यं सर्पविचरणाभावाच्च ततो वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदेवालङ्कारः।

(ल) हरीति। हरेर्वामनस्य चरणेनेव संवर्द्धमानेन रजसा धूलिना त्रिभुवनं अलङ्घ्यत व्याप्यत। अत्र त्रिभुवनलङ्घनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः पूर्णोपमा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(व) विकचेति। क्षीरोदस्य सागरस्य फेनवत् पाण्डुना, नवोदकेन नूतनवृष्टिजलेन, विकचकुवलयवनमिव प्रस्फुटितनीलोत्पलवनमिव, क्षीरोदफेनपाण्डुना क्षितिक्षोदेन धूलिना, गगनतलं अवष्टभ्यमानं आच्छाद्यमानं व्याप्यमानं, अलक्ष्यत लोकैरिति शेषः। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णा श्रौत्युपमालङ्कारः।

ধূলিসমূহ সকলেরই নিদ্রাস্বরূপ হইয়াছিল বটে, কিন্তু কাহারও চৈতন্য হরণ করে নাই; অন্ধকারস্বরূপ প্রাদুর্ভূত হইয়াছিল বটে, কিন্তু সূর্য্যাস্তের পর প্রাদুর্ভূত হয় নাই; ভূতলের অভ্যন্তরস্থিত গৃহস্বরূপ হইয়াছিল বটে, কিন্তু গ্রীষ্মকালে উপস্থিত হয় নাই; কৃষ্ণপক্ষের প্রদোষকালস্বরূপ দেখা যাইতেছিল বটে, কিন্তু নক্ষত্রসমূহ উঠে নাই; বর্ষাকালস্বরূপ হইয়াছিল বটে, কিন্তু বৃষ্টির জল পড়ে নাই; পাতালস্বরূপ বোধ হইতেছিল বটে, কিন্তু সর্পগণ ভ্রমণ করে নাই; (ল) এইরূপ সেই ধূলিসমূহ, বামনদেবের চরণের ন্যায় বৃদ্ধি পাইতে পাইতে ত্রিভুবন ব্যাপ্ত করিয়াছিল।

(ব) নূতন বৃষ্টির জলে যেমন প্রস্ফুটিত নীলোৎপলবন আচ্ছন্ন করে, সেইরূপ ক্ষীরোদ সাগরের ফেনের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ভূতলের ধূলিসমূহ গগনতল আচ্ছন্ন করিয়াছে বলিয়া লোকে

---

(१) अनपहृतलोचनेनानवगमितसूर्य्येण। (२) पतितसलिलेन। (३)...भुजङ्गमेन।

फेनपाण्डुना (१) क्षितिक्षोदेन (व)। बहुलरजोधूसरितमशिशिरकिरणबिम्बमवचूलचामरमिव निष्प्रभमभवत् (श)। दुकूलपट-(२) धवला कदलिकेव कलुषतामाजगाम गगनापगा (ष)। नरपालबलभरमतिगुरुमसहमाना (३) पुनरिव भारावतारणार्थममरलोकमारुरोह रजोमिषेण (४) मही (स)। निःशेष-निपीतातपं (५) अन्तर्दह्यमानमिव जलधिजलेषु धूसरित-रवि रथ-ध्वजपटमपतदवनिरजः (ह)। मुहूर्त्तेन च गर्भवासमिव, संहारसागरजलमिव,

---

(श) बहुलेति। बहुलैः रजोभिर्धूलिभिः धूसरितं धूसरवर्णीकृतं, अशिशिरकिरणबिम्बं सूर्य्यमण्डलं, अवचूलचामरमिव ध्वजाग्रलम्बितवस्त्रखण्डं चामरमिव। अत्रोपमालङ्कारः।

(ष) दुकूलेति। दुकूलपटवत् सूक्ष्मवसनवत् धवला, गगनापगा स्वर्नदी मन्दाकिनी, कदलिका तद्दीयपताकेव, कलुषतामाविलतां आजगाम प्राप, तद्रजःसम्पातादिति भावः। अत्र मन्दाकिन्याः कालुष्यप्राप्त्यसम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारो लुप्तोपमाश्रौतोपमाभ्यां सङ्कीर्य्यते।

(स) नरेति। अतिगुरुं अत्यन्तविशालं नरपालबलभरं राजसैन्यभारं असहमाना वोढ़मशक्नुवती मही पृथिवी, भारावतारणार्थं रजोमिषेण धूलिच्छलेन, पुनरमरलोकं स्वर्गं आरुरोहेव, रावणवधादिभारावतारणार्थं पूर्वारोहणवदिति भावः। अत्र सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ह) निःशेषेति। धूसरितो धूसरवर्णीकृतो रविरथस्य ध्वजपटः पताका येन तत्, तथा निःशेषेण साकल्येन निपीतो यस्य आतपः सूर्य्यालोको येन तत्, अत एवातपपानात् अन्तर्दह्यमानमिव अभ्यन्तरे सन्तप्यमानमिव सत्, अवनिरजो भूतलधूलिः, जलधिजलेषु अपतत्, सन्तापस्य शीतक्रियायाः शान्तिकरत्वादिति भावः। अत्र तद्धूलेर्जलधिजलेषु पतनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, क्रियोत्प्रेक्षा चैषां तेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(क्ष) मुहूर्त्तेनेति। किञ्च पृथिवी मुहूर्त्तेन क्षणेनैव गर्भवासं मातुर्गर्भाशयं विवेशेव। इत्थं सर्वत्रान्वय

দেখিতেছিল। (শ) সেই ধূলিরাশিতে ধূসরবর্ণ সূর্য্যমণ্ডল, পতাকাবদ্ধ চামরের ন্যায় প্রভাশূন্য হইয়া গেল। (ষ) সূক্ষ্ম বস্ত্রের ন্যায় শুভ্রবর্ণ মন্দাকিনীর জল, সেই সৈন্যগণের পতাকার ন্যায় ধূলিরাশিতে মলিনতা প্রাপ্ত হইল। (স) রাজসৈন্যগণের গুরুতর ভার বহন করিতে অসমর্থ হইয়া পৃথিবী যেন, সেই ভার নামাইবার জন্য ধূলিচ্ছলে পুনরায় স্বর্গে আরোহণ করিতে লাগিল। (হ) সেই ধূলিরাশি সূর্য্য রথের পতাকা ধূসরবর্ণ করিয়া সূর্য্যের সমস্ত কিরণ পান করিয়াছিল বলিয়া অন্তরে যেন দগ্ধ হইতেছিল, তাই সমুদ্রের জলে যাইয়া পড়িতেছিল। (ক্ষ) এবং ক্ষণকালমধ্যে পৃথিবী যেন মাতার গর্ভে, প্রলয়কালীন

---

(१) क्षीरोदपाण्डुना। (२) दुकूलपट्ट...।
(३)...भरमसहमाना। (४) रजोनिभेन। (५)...पीतातपं।

कृतान्तजठरमिव, महाकालमुखमिव, नारायणोदरमिव, ब्रह्माण्डमिव विवेश पृथिवी (ख)। मृन्मय इव बभूव दिवसः पुस्तमय्य इव (१) चकाशिरे ककुभः, (२) रेणुरूपेणेव परिणतमम्बरतलम्, (३) एकमहाभूतमयमिव त्रैलोक्यमासीत्। (क)

अथ निजमदोष्मतप्यमानानां दन्तिनां (४) दिशि दिशि करविवरविनिःसृतैः (५) चरद्भिः क्षीरोद-क्षोद-धवलैः (६) शीकरासारैः कर्णपल्लव-प्रहृति-विसृतेन (७) च विसर्पता दानजलबिन्दुदुर्द्दिनेन, हेषारवविप्रकीर्णैश्च वाजिनां लालाजल-

तद्ग्रसमान्धकारितत्वादिति च भावः। संहारे प्रलयसमये यः सागरस्तज्जलं। ब्रह्माण्डं ब्रह्मकोषं। अत्र प्रत्येकवाक्ये क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क) मृन्मय इति। दिवसो मृन्मयो मृद्विकार इव बभूव, ककुभो दिशः पुस्तमय्यो धूलिलेपविकारा इव सत्यः चकाशिरे विरेजिरे। अनयोः प्रत्येकं गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। "पुस्तं (क्ली) लेप्यादिशिल्पकर्म…।" इति शब्दकल्पद्रुमः। अम्बरतलं कर्त्तृ, रेणुरूपेण परिणतमिव, अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा त्रैलोक्यं कर्त्तृ, एकमहाभूतमयमिव केवलक्षितिमयमिव आसीत्, अन्येषां जलाकाशादीनां धूलिभिस्तिरोहितत्वादिति भावः। अत्रापि गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

अहो धूलिवर्णनमपहाय यदि तु सेनायाः प्रत्यङ्गमवर्णयिष्यन् तदा स्खलितोऽपि महामनोरममभविष्यत्।

(ख) अथेति। निजमदोष्मणा स्वकीयतेजस्तापेन सन्तप्यमानानां, दन्तिनां हस्तिनां। करविवरविनिःसृतैः, शुण्डाच्छिद्रनिर्गतैः, चरद्भिर्गच्छद्भिः, क्षीरोदक्षोदधवलैः क्षीरोदसागरजलबिन्दुवत् शुभ्रैः शीकरासारैर्जलबिन्दुवृष्टिभिः, तथा, कर्णपल्लवाभ्यां विस्तृतकर्णाभ्यां प्रहृत्या ताड़नेन विसृतं विक्षिप्तं तेन, विसर्पता प्रसरता, दानजलबिन्दूनां दुर्द्दिनेन वृष्ट्या, तथा हेषारवैर्विप्रकीर्णानि विक्षिप्तानि तैः, वाजिनामश्वानां ये लालाजललवा मुखनिर्गतजलबिन्दवस्तेषां जालकैः समूहैश्च, रजसि तस्मिन् धूलिराशौ उपशमिते निवारिते सति। अत्र तैस्ताद्दशरजसामुपशमनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। तथा दिक्षु पुनरपि जात आलोकः प्रकाशो यासु तासु

সমুদ্রের জলে, যমের উদরে, মহাকালের মুখে, নারায়ণের উদরে এবং ব্রহ্ম-কোষের ভিতরে প্রবেশ করিল। (ক) এবং দিনটা যেন মৃত্তিকাময় হইয়া গেল; দিক্‌সমূহ যেন মৃত্তিকালেপময় হইয়া দীপ্তি পাইতে লাগিল; আকাশ যেন ধূলিরূপে পরিণত হইল এবং ত্রিভুবন যেন কেবল পৃথিবীময় হইয়া গেল।

(খ) তদনন্তর স্বকীয় তেজের উত্তাপে উত্তপ্ত হস্তিগণের শুণ্ড হইতে, ক্ষীরোদসাগরের জলবিন্দুর ন্যায় শুভ্রবর্ণ জলবিন্দুসমূহ নির্গত হইয়া সকল দিকে পড়িতে লাগিল; বিশাল কর্ণযুগলের তাড়নে বিক্ষিপ্ত হইয়া মদজলবৃষ্টি, সকল দিকে ছড়াইয়া যাইতেছিল; আবার অশ্বগণের মুখ হইতে হ্রেষারবে বিক্ষিপ্ত হইয়া লালাময় জলবিন্দুসমূহ নির্গত হইতে লাগিল;

(१) प्रस्तमय्य इव। (२) दिशः। (३) अम्बरं। (४) क्वचित् दन्तिनामिति पाठो नास्ति। (५)…निःसृतैः। (६) क्षीरोदधवलैः। (७)… विसृतेन।

लव-जालकैरुपशमिते रजसि, पुनरपि जातालोकासु (१) दिक्षु, सागरसलिलादिव (२) उन्मग्नमालोक्य तदपरिमाणं बलमुपजातविस्मयः सर्वतो दत्तदृष्टिर्वैशम्पायनश्चन्द्रापीडमाबभाषे। (ख)

"युवराज! किं न जितं (३) देवेन महाराजाधिराजेन तारापीडेन यज्जेष्यसि; का दिशो न वशीकृताः या वशीकरिष्यसि; कानि दुर्गाणि न प्रसाधितानि यानि प्रसाधयिष्यसि; कानि द्वीपान्तराणि नात्मीकृतानि यान्यात्मीकरिष्यसि; कानि रत्नानि नोपार्जितानि यान्युपार्जयिष्यसि; (ग) के वा न प्रणता राजानः, कैर्न विरचितः शिरसि बाल-कमल-कुड्मल-कोमलः सेवाञ्जलिः, कैर्न (४) मसृणीकृताः प्रतिबद्धहेमपट्टैर्ललाटैः सभाभुवः, कैर्न घृष्टाः पादपीठे चूडामणयः, कैर्न प्रतिपन्ना वेत्रयष्टयः, (५) कैर्नोद्धूतानि (६) चामराणि, कैर्नोच्चा-

---

सतीषु, तत् अपरिमाणं असंख्यं बलं सैन्यं, सागरसलिलात् समुद्रजलात् उन्मग्नं उत्थितमिव आलोक्य, उपजातविस्मयो वैशम्पायनः, सर्वतो दत्तदृष्टिः सन् चन्द्रापीडमाबभाषे इत्यन्वयः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) युवेति। प्रसाधितानि स्वसाधनेनायत्तीकृतानि। प्रसाधयिष्यसि स्वसाधनेनायत्तीकरिष्यसि। आत्मीकृतानि "सप्त विभागवता धर्म्मा दारा स्थानः कथं जयः।" इत्यादिवचनात् जयेन स्वाङ्कृतानि स्वा-स्वदीकृतानीत्यर्थः।

(घ) क इति। न प्रणताः, देवतारापीडस्याग्रादिति भावः। अपि तु सर्व एव प्रणता इत्यर्थः। एवमग्रेऽपि। एषु प्रश्नवाक्येषु अर्थापत्तिरलङ्कारः। बालं नवं यत् कमलकुड्मलं पद्ममुकुलं तद्वत् कोमलः, सेवा उपासना तदर्थमञ्जलिः सेवाञ्जलिः। अत्रार्थापत्तिपुनरुक्तवदाभासयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। प्रतिबद्धः अलङ्करणाय योजितः हेमपट्टः स्वर्णफलकं येषु तादृशैर्ललाटैः सभाभुवः, न मसृणीकृताः श्लक्ष्णीकृताः। प्रतिपन्ना प्रतिहारिभावेन गृहीताः। उद्धूतानि आन्दोलितानि। किरीटेषु यानि पत्राणि पर्णाकाराश्चा-

---

তাহাতে সেই ধূলিরাশি নিবারিত হইলে এবং পুনরায় সকল দিকে আলোক প্রকাশ পাইলে, সেই অসংখ্য সৈন্য যেন সমুদ্রের জল হইতে উঠিল; এইরূপ দেখিয়া বৈশম্পায়নের বিস্ময় জন্মিল, তখন তিনি সকল দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া চন্দ্রাপীড়কে বলিতে লাগিলেন।

(গ) "যুবরাজ! মহারাজাধিরাজ তারাপীড় কি জয় করেন নাই, যাহা তুমি জয় করিবে; কোন্ দিক্ অধিকার করেন নাই, যাহা তুমি অধিকার করিবে; কোন্ দুর্গ আয়ত্ত করেন নাই, যাহা তুমি আয়ত্ত করিবে; কোন্ দ্বীপান্তর আত্মসাৎ করেন নাই, যাহা তুমি আত্মসাৎ করিবে; কোন্ রত্ন উপার্জন করেন নাই, যাহা তুমি উপার্জন করিবে; (ঘ) এবং তাঁহার প্রতাপে কোন্ কোন্ রাজা বা অবনত হ'ন নাই, কোন্ কোন্ রাজা বা আপনার মস্তকে

---

(१) पुनरुपजातालोकासु। (२) सागरादिव। (३) किमजितं किं किमर्जितं। (४) कैन।
(५) वेत्रलताः। (६) उद्धूतानि।

रिता जयशब्दाः, कैषां न पीताः किरीटपत्रमकरैः सलिलधारा इव निर्म्मला-
स्त्वच्चरण-(१) नख-मयूख-राजयः (च)। एते हि (२) चतुरुदधिजलावगाह-
दुर्ल्ललित-बल-मदावलिप्ता दशरथ-भगीरथ-भरत-दिलीपालर्क-मान्धातृप्रतिमाः
कुलाभिमानशालिनः सोमपायिनो मूर्द्धाभिषिक्ताः पृथिव्यां सर्व्वपार्थिवा रक्षा-
भूतिमिवाभिषेक-पयः-पात-पूतैश्चूड़ामणिपल्लवैरुद्वहन्ति मङ्गल्यां भवच्चरणरजः-

---

त्रानि मकराः स्वनामप्रसिद्धा जलजन्तुविशेषा इव तैः, सलिलधारा इव, निर्म्मलाः, तस्य तारापीड़स्य चरणनखानां मयूखराजयः किरणश्रेणयः, न पीताः नमस्कारकाले न ग्रस्ताः, अपि तु सर्व्वेषामेवेत्यर्थः। अत्र लुप्तोपमा श्रौतीपमा अर्थापत्तिश्चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ङ) हे तारापीड़ेन विजिता राजानो भवन्तमपि प्रणिपतन्तीत्याह एत इति। हि तथाहि। चतुर्णां उदधीनां समुद्राणां जलेषु यः अवगाहः द्वीपान्तरविजयगमनार्थमवतरणं तद्देव दुर्ल्ललितं हठकारिता येषां तेषां तथोक्तानां बलानां सैन्यानां मदेन दर्पेण अवलिप्ता दर्पिताः। दशरथादयः प्रसिद्धाः, अलर्को नाम दानशीलः कश्चिद्राजर्षिर्म्महाभारताश्वमेधपर्व्वणि प्रसिद्धः, तत्प्रतिमास्तैस्तुल्याः। कुलाभिमानशालिनो महाकुलोत्पत्त्यहङ्कारविशिष्टाः। सोमपायिनः सोमयागं विधाय सोमरसपायिनो नियतयज्ञानुष्ठायिन इत्यर्थः। मूर्द्धसु अभिषिक्ता राज्यप्राप्तिकाले कृताभिषेकाः, पृथिव्यां सर्व्वपार्थिवाः, अभिषेकपयःपातेन अभिषेकीय-जलसम्पर्केण पूतैः, चूड़ामणिपल्लवैर्विस्तृतचूड़ामणिभिः, रक्षाभूतिमिव रक्षार्थकयज्ञीयभस्मेव, मङ्गल्यां कल्याणकरीं, भवतस्तव चरणयोः रजःसंहतिं धूलिसमूहं उद्वहन्ति नमस्कारकाले धारयन्ति। अत्र तेषां राज्ञां प्राधान्यप्रतिपादनकार्य्यं प्रति बहुतरकारणोपन्यासात् समुच्चयः श्रौतोपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

নূতন পদ্মকলিকার ন্যায় কোমল অঞ্জলিপুট স্থাপন করেন নাই; কোন্ কোন্ রাজা বা স্বর্ণ-অলঙ্কৃত নিজ নিজ ললাটদ্বারা (নমস্কার করিয়া করিয়া) সভার ভূমিতল মসৃণ (পালিস) করেন নাই; কোন্ কোন্ রাজা বা নমস্কার করিবার সময় মহারাজ তারাপীড়ের পাদপীঠে আপনাদের চূড়ামণি ঘর্ষণ করেন নাই; কোন্ রাজা বা (প্রতিহারীর ন্যায়) বেত্রযষ্টি ধারণ করেন নাই; কোন্ কোন্ রাজা বা চামর আন্দোলন করেন নাই; কোন্ কোন্ রাজা বা জয়শব্দ উচ্চারণ করেন নাই; এবং মকর যেমন সমুদ্রের জলধারা পান করে, সেইরূপ কোন্ কোন্ রাজারই বা মুকুটের স্বর্ণপত্র-নির্ম্মিত মকরাকার অংশগুলি, মহারাজ তারাপীড়ের চরণ-নখের নির্ম্মল কিরণশ্রেণী পান করে নাই। (ঙ) যে সৈন্যগণ অন্যান্য দ্বীপ জয় করিতে যাইবার নিমিত্ত চারি সমুদ্রের জলে অবগাহন করিয়া অত্যন্ত সাহসিকতা প্রকাশ করিয়াছে, সেই সৈন্যগণের গর্বে গর্বান্বিত এবং দশরথ, ভগীরথ, ভরত, দিলীপ, অলর্ক ও মান্ধাতার তুল্য গুণবান্, কুলগৌরবসম্পন্ন, সোমরসপায়ী ও রাজ্যে অভিষিক্ত পৃথিবীর এই সকল রাজগণ, অভিষেক-জল-সংস্পর্শে পবিত্র আপন আপন চূড়ামণিদ্বারা, যজ্ঞীয় রক্ষাভস্মের

---

(१) त्वच्चरण...। (२) एते हि ते।

संहतिम् (ङ)। एभिरियमादिपर्वतैरिवापरैर्धृता धरित्री, एतानि चाप्यमीषामाप्लावितदशदिगन्तरालानि सैन्यानि भवन्तमुपासते (च)। तथाहि पश्य, (१) यस्यां यस्यां दिशि विक्षिप्यते चक्षुः, तस्यां तस्यां रसातलमिवोद्गिरति, वसुधेव सूते, ककुभ इव वमन्ति, गगनमिव वर्षति, दिवस इव सृजति बलानि (छ)। अपरिमितबलभराक्रान्ता मन्ये स्मरति महाभारत-समर-संक्षोभस्य (२) अद्य क्षितिः (ज)। एष शिखरदेशेषु (३) परिस्खलित-(४) मण्डलो ध्वजान् गणयन्निव कुतूहलाद्भ्रमति कदलिकावनान्तरेषु मयूख-

(च) एभिरिति। अपरैः प्रकृतभिन्नैः आदिपर्वतैर्महेन्द्रादिभिः कुलपर्वतैरिव एभिर्वर्णितपूर्वैः राजभिः, इयं धरित्री पृथिवी धृता धारिता रक्षिता च। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। आप्लावितानि व्याप्तानि दशानां दिशां अन्तरालानि मध्यभागा यैस्तानि, एतानि दृश्यमानानि अमीषां राज्ञां सैन्यानि च भवन्तं उपासते दिग्विजयसाहाय्याय सहगमनेन सेवन्ते। एतदपि दैवस्य तारापीडस्यैव प्रभावादिति भावः।

(छ) तदेव दर्शयति तथाहीति। रसातलं पातालं कर्त्तृ, बलानि सैन्यानि उद्गिरतीव। सीमादर्शनाभावादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। एवमन्यत्रापि। वसुधा बलानि सूते प्रसवतीव। ककुभो दिशो बलानि वमन्तीव। गगनं कर्त्तृ, बलानि वर्षतीव। दिवसो बलानि सृजति उत्पादयतीव।

(ज) अपरीति। अपरिमितबलभराक्रान्ता क्षितिः, अद्य महाभारते ग्रन्थे व्याख्यातो यः समरः कुरु-पाण्डवयुद्धं स महाभारतसमरः, शाकपार्थिवादित्वान्मध्यपदलोपी समासः, तस्य संक्षोभः सम्मर्दः तस्य स्मरति, इत्यहं मन्ये। तत्तुल्यभराक्रान्तत्वादिति भावः। अत्र मन्ये इत्युपादानाद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। संक्षोभस्येति "अधीगर्थदयेशां कर्मणि" इति कर्मणि षष्ठी।

(झ) एष इति। शिखरदेशेषु ध्वजानामितोपरिभागेषु परिस्खलितं प्रतिविम्बितत्वात् पतितं मण्डलं यस्य सः, एष मयूखमाली सूर्यः, कुतूहलात् गणयन्निव ध्वजानामिव संख्यां कुर्वन्निव, कदलिकावनान्तरेषु

ন্যায় মঙ্গলকর তোমার চরণ-ধূলিসমূহ বহন করিতেছেন। (চ) অপর কুলপর্ব্বতগণের ন্যায় এই রাজগণই এই পৃথিবীকে রক্ষা করিতেছেন এবং ইঁহাদের এই সৈন্যগণ সকল দিক্ ব্যাপ্ত করিয়া আজ তোমার সেবা করিতেছে। (ছ) তাহাই দেখ,—যে দিকে যে দিকে দৃষ্টিপাত করিবে, সেই সেই দিকেই 'পাতাল যেন সৈন্য উদ্গিরণ করিতেছে, পৃথিবী যেন সৈন্য প্রসব করিতেছে, দিক্সমূহ যেন সৈন্য বমন করিতেছে. আকাশ যেন সৈন্য বর্ষা করিতেছে এবং দিনেই যেন সৈন্য সৃষ্টি করিতেছে' বলিয়া বোধ হইবে। (জ) আমি মনে করি—আজ পৃথিবী, তোমার অসংখ্য সৈন্যের ভারে আক্রান্ত হইয়া মহাভারতবর্ণিত সেই কুরুপাণ্ডবের যুদ্ধ-সঙ্ঘর্ষ স্মরণ করিতেছে। (ঝ) ধ্বজসমূহের উপরিভাগে নিজের প্রতিবিম্ব পতিত হওয়ায় সূর্য্য যেন কৌতুকবশতঃ গণনা করিয়া করিয়া পতাকাসমূহের অভ্যন্তরে ধ্বজগুলি বমন

(१) पश्य पश्य। (२) महाभारतसंक्षोभस्य, महाभारतबलसमरसंक्षोभस्य।
(३) मत्तेभकरटभित्तिशिखरदेशेषु। (४) स्खलित…।

माली (झ)। सर्वतश्च मदजलमुचां करिणामेलापरिमल-सुरभिणि वेणिकावाहिनि मदवारिणि निरन्तरमग्ना (१) निपतित-(२) मधुकर-कुल-कलकल-कलिला (३) कालिन्दी-जल-कल्लोल-कलितेव (४) भाति भूतधात्री (ञ)। सैन्यभरसंक्षोभभयात् (५) सरित इव गगनतलं (६) उत्पतिता आच्छादयन्ति (७) एता दिक्चक्रवालमिन्दुधवला ध्वज-पङ्क्तयः (८) (ट)। सर्वथा चित्रं, यदद्य विघटित-सकल-कुल-शैल-सन्धि-बन्धा (९) सहस्रधः शकली-

---

पताकासमूहान्तरालेषु ध्वजान् स्वर्णवेष्टितोपरिभागान् केतून् वमति उद्गिरतीव। प्रत्येकध्वजोपरिभागे सूर्यमण्डलस्य प्रतिविम्बितत्वात् ते ध्वजाः सूर्येणोड्डीयमाना इव भान्तीति सरलार्थः। अत्र प्रथमा वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा द्वितीया च प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "कदली वैजयन्त्याञ्च रम्भायां हरिणान्तरे।" इत्यादि विश्वः।

(ञ) सर्वत इति। किञ्च सर्वतः समन्तात्, मदजलमुचां दानजलस्राविणां करिणां, एलायाश्चन्द्रबालायाः परिमलवत् सौरभवत् सुरभिणि सौरभवति वेणिकावाहिनि प्रवाहेण सञ्चारिणि मदवारिणि, निरन्तरमग्ना निरवकाशं क्लिन्नेत्यर्थः, तथा निपतितस्य तन्मदजलोपरि गतस्य मधुकरकुलस्य भ्रमरसमूहस्य कलकलैः कोलाहलैः कलिला गहना दुष्प्रवेशा, भूतधात्री धरित्री, कालिन्दीजलस्य यमुनाजलस्य कल्लोलैः महातरङ्गैः कलिता व्याप्तेव सती भाति, करिणां मदजलप्रवाहस्य यमुनाजलतुल्यकृष्णवर्णत्वादिति भावः। अत्र एलेत्यत्र लुप्तोपमा, मदजले निरन्तरमग्नत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "कलिलं गहनं समे।" इत्यमरः।

(ट) सैन्येति। सैन्यभरसंक्षोभभयात् गगनतलमुत्पतिता उड्डीनाः सरितो नद्य इव एता इन्दुधवला ध्वजपङ्क्तयः दिक्चक्रवालं दिङ्मण्डलं आच्छादयन्ति। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णा जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) सर्वथेति। चित्रमाश्चर्य्यम्, यदद्य धरित्री, बलभरेण विघटिता विश्लेषिताः सकलानां कुलशैलानां सन्धिबन्धाः संयोगबन्धनानि यस्याः सा तादृशी सती, सहस्रधा न शकलीभवति न खण्डखण्डतां

করিতেছেন বলিয়া বোধ হইতেছে। (ঞ) এবং সকল দিকে মদস্রাবী হস্তিগণের, এলাচীর সৌরভের ন্যায় সৌরভযুক্ত মদজল প্রবাহিত হইতেছে, ভ্রমরগণ তাহার উপর পড়িয়া কোলাহল করিতেছে, পৃথিবী সেই মদজলে ঘনভাবে নিমগ্ন হইয়া যমুনার জলতরঙ্গে ব্যাপ্ত হইয়াই যেন বিরাজ করিতেছে। (ট) চন্দ্রের ন্যায় শুভ্রবর্ণ এই সকল ধ্বজসমূহ দিঙ্মণ্ডল আচ্ছাদন করিয়াছে, তাহাতে বোধ হইতেছে যে, কতকগুলি নদী, সৈন্যগণের পদভরে বেদনা পাইবার ভয়েই যেন আকাশে উঠিয়া অবস্থান করিতেছে। (ঠ) সর্ব্বপ্রকারে আশ্চর্য্যের বিষয় এই

---

(१) मदवारिणि मग्ना। (२) निरन्तरनिपतित...। (३)...कलिता, कलङ्ककालिका, ललिता।
(४) कलितेव, कवलितेव। (५) सैन्यसंक्षोभभयात्, धरणिमपहाय।
(६) गगनं। (७) संच्छादयन्ति। (८) विजयपङ्क्तयः। (९) शैलबन्धा।

भवति बलभरेण धरित्री, यद्वा बलभर-पीड़ित-वसुधा-धारण-विधुरा न चलन्ति (१) फणिनां पत्य : फणाभित्तयः।" (ठ)

इत्येवं वदत एव तस्य युवराजः समुच्छ्रितानेकतोरणां तृणमय-प्राकार-मन्दिर-सहस्र-सम्बाधां, (२) उल्लासित-धवल-पट-मण्डप-शोभिनीं (३) आवास-भूमिमवाप (ड)। तस्यामवतीर्य्य राजवत् सर्वाः क्रियाश्चकार। सर्वैश्च तैः समेत्य नरपतिभिरमात्यैश्च विविधाभिः कथाभिर्विनोद्यमानस्तं दिवसमशेषमभि-नवपितृवियोगजन्मना शोकावेगेनायास्यमानहृदयो दुःखेनात्यवाहयत् (ढ)। अति-वाहितदिवसश्च यामिनीमपि स्वशयनीयस्य नातिदूरे निहितशयननिषण्णेन (४)

प्राप्नोति। अत्र शकलीभवनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। बलभरेण पीड़िताया वसुधाया धारणेन विधुरा विह्वलाः, फणिनां पत्यः सर्पराजस्य अनन्तस्य फणाभित्तयो विस्तृतफणामण्डलानि न चलन्ति न स्खलन्ति, तदपि चित्रमित्यर्थः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः।

(ड) इतीति। वदत एव तस्येत्यनादरे षष्ठी। दिग्विजयतो निवृत्तौ तद्वचनमनादृत्येत्यर्थः। समुच्छ्रितानि अत्युच्चानि अनेकानि तोरणानि बहिर्द्वाराणि यस्यास्तां, तृणमये प्राकारे तन्मध्य इत्यर्थः मन्दिरसहस्रेण च गृहसमूहेन सम्बाधा व्याप्ता तां, उल्लासितेन उत्थापितेन धवलेन पटमण्डपशतेन वसनमयगृहसमूहेन शोभत इति तां, आवासभूमिं पूर्वनिर्म्मितनिवासस्थानम्।

(ढ) तस्यामिति। सर्वाः क्रियाः सैन्यपर्य्यवेक्षणसेनापतिसम्भाषणनियोगादीः। समेत्य मिलित्वा। विनोद्यमानः प्रसाद्यमानः। अभिनवात् पितृवियोगात् जन्म यस्य तेन। आयास्यमानं सन्ताप्यमानं हृदयं यस्य स चन्द्रापीडः, अशेषं सकलं तं दिवसं दुःखेनात्यवाहयत्।

(ण) अतीति। किञ्च अतिवाहितदिवसश्चन्द्रापीडः। स्वशयनीयस्य निजशय्यायाः, नातिदूरे निहितं

যে, সৈন্যগণের পদভরে সমস্ত কুলপর্ব্বতগণের সন্ধিবন্ধন বিশ্লেষিত হওয়ায় পৃথিবী আজ সহস্র খণ্ডে বিভক্ত হইয়া যাইতেছে না এবং সৈন্যগণের পদভরে পরিপীড়িত পৃথিবীর ধারণে বিহ্বল হইয়া অনন্তনাগের ফণাগুলি, স্থানচ্যুত হইতেছে না।"

(ড) বৈশম্পায়ন এইরূপ বলিতেছিলেন, এই অবস্থায় যুবরাজ চন্দ্রাপীড়, পূর্ব্বনির্দ্দিষ্ট বাসস্থানে যাইয়া উপস্থিত হইলেন ; সে স্থানের বাহিরের দ্বারগুলি অত্যন্ত উচ্চ ছিল, তৃণময় প্রাচীরের মধ্যস্থল বহুসংখ্যক মন্দিরে পরিপূর্ণ ছিল এবং উত্তোলিত বহুসংখ্যক শুভ্রবর্ণ পটমণ্ডপে (তাঁবুতে) সে স্থানটি শোভা পাইতেছিল। (ঢ) চন্দ্রাপীড় সেই বাসস্থানে হস্তিনীর পৃষ্ঠ হইতে অবতরণ করিয়া রাজার ন্যায় সকল কার্য্য সম্পাদন করিলেন, এবং সেই সকল রাজগণ ও মন্ত্রিগণের সহিত মিলিত হইয়া নানাবিধ কথোপকথনে আনন্দ অনুভব করিতেছিলেন বটে, কিন্তু নূতন পিতৃবিয়োগবশতঃ শোকাবেগে হৃদয় সন্তপ্তও হইতেছিল, তাই তিনি দুঃখেতেই সেই সমস্ত দিনটা অতিবাহিত করিলেন। (ণ) দিন অতিবাহিত করিলে পর রাত্রিতে নিজের

(१) दलन्ति। (२)...मन्दिरसम्बाधां। (३)...सं शोभिनीं। (४) नातिदूरनिषण्णेन।

वैशम्पायनेन, अन्यतश्च समीपे (१) क्षितितल-विन्यस्त-(२) कुथप्रसुप्तया पत्रलेखया सह, अन्तरा पितृसक्ताम्, अन्तरा मातृसम्बद्धम्, अन्तरा शुकनासमयं कुर्वन्नालापं नात्युपजातनिद्रः (३) प्रायेण जाग्रदेव निन्ये (ण)। प्रत्यूषे (४) चोत्थाय तेनैव क्रमेणानवरतप्रयाणकैः प्रतिप्रयाणकमुपचीयमानेन सेनासमुदायेन जर्जरयन् वसुन्धराम्, आकम्पयन् गिरीन्, उत्सिञ्चन् (५) सरितः, रिक्तीकुर्वन् सरांसि, चूर्णयन् काननानि, समीकुर्वन् विषमाणि, दलयन् दुर्गाणि, पूरयन् निम्नानि, निम्नयन् स्थलानि प्रातिष्ठत (६) (त)।

...यापितं यत् शयनं शय्या तत्र निषण्णेन स्थितेन। अन्यतः स्वशय्यायाः अन्यस्मिन् पार्श्वे। क्षितितले विन्यस्तं यत् कुथं विचित्रकम्बलं तस्मिन् प्रसुप्ता शयिता तया पत्रलेखया च सह। अन्तरा मध्ये मध्ये। पितरि तारापीड़े सक्तं सम्बन्धं। शुकनासमयं तद्विषयकं आलापं कुर्वन्। न अतिरिक्तेण उपजाता निद्रा यस्य सः, अतएव प्रायेण बाहुल्येन जाग्रदेव सन् यामिनीमपि तां रात्रिमपि निन्ये यापयामास।

(त) प्रत्यूष इति। अनवरतप्रयाणकैरविश्रान्तप्रस्थानैः। प्रतिप्रयाणकं प्रतिदिवसीयप्रस्थानसमय इत्यर्थः। उभयत्राप्यत्रार्थे कप्रत्ययः। उपचीयमानेन वर्द्धमानेन, तत्तद्देशीयाधीनभूपतिभिः स्वसैन्यसम्मेलनादिति भावः। सेनासमुदायेन वाहिनीसमूहेन। जर्जरयन् जर्जरां कुर्वन् भरेण परिपीडयन्नित्यर्थः। उत्सिञ्चन् जलोत्तोलनेनाल्पजलाः कुर्वन्। रिक्तीकुर्वन् पानाद्यर्थजलानयनादिना जलशून्यीकुर्वन्। विषमाणि उच्चावचानि स्थलानि समीकुर्वन्। दुर्गाणि दुर्गमाणि मार्गवर्त्तिपर्वतादिस्थलानि, दलयन् ध्वंसयन्। निम्नानि मार्गवर्त्तिगर्त्तादीनि पूरयन् मृत्तिकादिभिः समीकुर्वन्। स्थलानि मृत्तिकास्तूपादीनि, निम्नयन् समीकरणायापेक्षिकनिम्नानि कुर्वन्। यानवाहनादीनामनायासेन गमनार्थमिति सर्वत्र भावः। प्रातिष्ठतेति "समवप्रविभ्यः" इत्यात्मनेपदम्।

শয্যার অনতিদূরে সংস্থাপিত একখানি শয্যার উপরে বৈশম্পায়ন অবস্থান করিতে লাগিলেন এবং নিকটেই অপর পার্শ্বে ভূতলে একখানি বিচিত্র কম্বল পাতা ছিল, পত্রলেখা তাহার উপরে শয়ন করিয়াছিল, এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় তাহাদের সহিত মধ্যে মধ্যে পিতার সম্বন্ধে, মধ্যে মধ্যে মাতার সম্বন্ধে এবং মধ্যে মধ্যে শুকনাসের সম্বন্ধে কথোপকথন করিতে লাগিলেন, তাহাতে অধিক নিদ্রা হইল না, প্রায়শই জাগিয়া রহিলেন—এই ভাবে সেই রাত্রিও অতিবাহিত করিলেন। (ত) প্রভাতকালে গাত্রোত্থান করিয়া সেই ভাবেই অবিশ্রান্ত গমন করিতে লাগিলেন; প্রত্যেক দিন প্রস্থান করিবার সময়ে নূতন নূতন সৈন্য আসিয়া যোগ দিতে লাগিল, তাহাতে নিজের সৈন্য অত্যন্ত বৃদ্ধি পাইল, সেই সৈন্যসমূহদ্বারা পৃথিবীকে জর্জরিত করিয়া, পর্ব্বত কাঁপাইয়া, নদী সেচিয়া, জলাশয়গুলিকে জলশূন্য করিয়া, বন ভাঙ্গিয়া, উচু নীচু

---

(१) शयनीयसमीपे। (२) क्षितितले विन्यस्त...। (३) नातिजातनिद्रः।
(४) प्रत्यूषसि। (५) उपसिञ्चन्। (६) प्रतिष्ठता।

शनैः शनैश्च स्वेच्छया परिभ्रमन्, नमयन्नुन्नतान्, उन्नमयन्नवनतान्, (१) आश्वासयन् भीतान्, रक्षन् शरणागतान्, उन्मूलयन् विटपकान्, उत्सादयन् कण्टकान्, अभिषिञ्चन् स्थानस्थानेषु राजपुत्रान्, समर्जयन् रत्नानि, प्रतीच्छन्नुपायनानि, गृह्णन् करान्, आदिशन् देशव्यवस्थाः, (२) स्थापयन् स्वचिह्नानि, कुर्वन् कीर्त्तनानि, लेखयन् शासनानि, पूजयन्नग्रजन्मनः, प्रणमन् मुनीन्, पालयन्नाश्रमान्, जनयन् (३) जनानुरागम्, प्रकाशयन् विक्रमम्, आरोपयन् प्रतापम्, उपचिन्वन् यशः, विस्तारयन् गुणान्, प्रख्यापयन्

(ख) विजयप्रकारमाह शनैरिति। उन्नतान् धनबलदर्पोद्धतान् नृपतीन्, नमयन् विजयेनावनतीकुर्वन्। अवनतान् स्वयमेव वशीभूतान् नृपतीन्, उन्नमयन् दानमानादिना वर्द्धयन्। विटपकान् धूर्त्ताधिपान्। कुत्सायां कप्रत्ययः। "विटपो न स्त्रियां स्तम्बशाखाविस्तारपल्लवे। विटाधिपे ना" इति मेदिनी। कण्टकान् क्षुद्रशत्रून्। "रोमाञ्चे क्षुद्रशत्रौ च द्रुमाङ्गे कण्टकोऽस्त्रियाम्।" इति त्रिकाण्डशेषः। उपायनानि वशीभूतनृपतिदत्तोपहारद्रव्याणि, प्रतीच्छन् स्वीकुर्वन्। देशव्यवस्थाः देशशासननियमान् आदिशन् आयत्तीभूतनृपतिभ्य इत्यर्थः। स्वचिह्नानि स्वकीयविजयचिह्नानि स्तम्भादीनि। कीर्त्तनानि आत्मनो विजयघोषणाः। शासनानि अधीनतासूचकलेख्यपत्राणि, लेखयन् विजितनृपतिभिरिति शेषः। अग्रजन्मनो ब्राह्मणान्। आश्रमान् ब्रह्मचर्य्यादीन्। आरोपयन् प्रवर्त्तयन्। उपचिन्वन् सदाचारादिना प्रवर्द्धयन्। वेलावनानि समुद्रतीरवर्त्तीन्यरण्यानि आक्रमन् सम्यगुल्लङ्घयन्। "वेला काले च सीमायामब्धेः कूलविकारयोः।"

জায়গা সমান করিয়া, দুর্গম পর্ব্বতগুলিকে ধ্বংস করিয়া, হ্রদগুলিকে পূরণ করিয়া, মৃত্তিকাস্তূপ নিম্ন করিয়া প্রস্থান করিতে লাগিলেন।

(খ) চন্দ্রাপীড় এই ভাবে ইচ্ছানুসারে ধীরে ধীরে পরিভ্রমণ করতঃ, বলগর্ব্বে গর্ব্বিত রাজগণকে বশীভূত করিলেন, আপনা হইতেই অবনত রাজগণকে দানমানাদিদ্বারা উন্নত করিলেন, ভীত রাজগণকে আশ্বস্ত করিলেন, শরণাগত রাজগণকে রক্ষা করিলেন, ধূর্ত্তনায়কগণকে উন্মূলিত করিলেন, ক্ষুদ্র শত্রুগণকে উৎসন্ন করিলেন, স্থানে স্থানে রাজপুত্রদিগকে অভিষিক্ত করিলেন, বহুতর রত্ন উপার্জ্জন করিলেন, বশীভূত রাজাদের নিকট হইতে উপহার গ্রহণ করিলেন, কর আদায় করিলেন, বিজিত দেশ-সমূহে শাসনের নিয়মপদ্ধতি বলিয়া দিলেন, স্থানে স্থানে নিজের বিজয়চিহ্ন স্থাপন করিলেন, সকল দেশেই আপনার জয় ঘোষণা করিলেন, বিজিত রাজগণদ্বারা অধীনতাসূচক শাসনপত্র (দলিল) লেখাইয়া লইলেন, ব্রাহ্মণদিগের সম্মান করিলেন, মুনিগণকে নমস্কার করিলেন, আশ্রমগুলির রক্ষার ব্যবস্থা করিলেন, আপনার প্রতি লোকের অনুরাগ জন্মাইলেন; সকল দেশেই বিক্রম প্রকাশ করিলেন, প্রভাব খাটাইলেন, যশ বৃদ্ধি করিলেন, গুণ বিস্তার করিলেন, সচ্চরিত্র বিখ্যাত করিলেন এবং সমুদ্রের তীরবর্ত্তী বনগুলিকে

(१) उन्नतान् नमयन् इतिमात्रः पाठः क्वचित्।

(२)···व्यवस्था। (३) क्वचित् जनयन् इति पाठो नास्ति।

सञ्चरितम्, (१) आमृद्नंश्च (२) वेलावनानि, बलरेणुभिराधूसरीकृत-सकल-सागरसलिलः पृथिवीं विचचार (थ)। प्रथमं प्राचीम्, ततस्त्रिशङ्कुतिलकाम्, ततो वरुणलाञ्छनाम्, अनन्तरञ्च सप्तर्षितारागबलां दिशं विजिग्ये (३) (द)। एवं (४) वर्षत्रयेण चात्मीकृताशेषद्वीपान्तरं सकलमेव चतुरम्भोधि (५) खात-वलय-परिखा-प्रमाणं बभ्राम महीमण्डलम् (ध)। ततः क्रमेणावजित-(६) सकल-भुवन-तलः प्रदक्षिणीकृत्य वसुधां (७) परिभ्रमन्, कदाचित् कैलास-समीपचारिणां हेमकूटधाम्नां (८) किरातानां सुवर्णपुरं नाम निवासस्थानं

इत्यादि मेदिनी। बलरेणुभिः सैन्योत्थापितधूलीभिः आधूसरीकृतानि तीरविचरणकाले सम्यग् धूसवर्णीकृतानि सकलानां सागराणां सलिलानि येन स तादृशश्चन्द्रापीडः।

(द) प्रथममिति। प्रथमं प्राचीं पूर्वां दिशं विजिग्ये विजितवान्। त्रिशङ्कुसदाख्यो राजा तिलक इव यस्यां तां, दक्षिणां दिशम्। त्रिशङ्कुर्नाम राजा स्वर्गमारोहन् देवराजेन दक्षिणस्यां दिश्यधःक्षिप्त इति रामायणवार्त्ता। वरुणो लाञ्छनं अधिपतितया चिह्नं यस्यां तां, पश्चिमां दिशम्। सप्तर्षितारामि-र्नक्षत्रात्मकमरीच्यादिसप्तर्षिभिः शबलां विचित्रां उत्तरां दिशं। तथा च वृहत्संहितायां—"एकैकस्मिन् ऋक्षे शतं शतं ते चरन्ति वर्षाणाम्। प्रागुत्तरतश्चैते सदोदयन्ते ससाध्वीकाः।"

(ध) वर्षेति। आत्मीकृतानि स्वत्वास्पदीकृतानि अशेषाणि समस्तानि द्वीपान्तराणि यस्य तत्, तथा चतुर्णामम्भोधीनां समुद्राणां खातवलयं खाताग्रमण्डलमेव परिखा तया प्रमाणं परिमाणं यस्य तत् तथोक्तं सकलमेव महीमण्डलं बभ्राम। अभ्यन्तरवर्त्तिस्थानविशेषपरित्यागशङ्कानिरासार्थं सकलपदमिति नाधिकपदत्व-दोषः।

(न) तत इति। हेमकूटोनाम हिमालयादुत्तरस्थितः पर्वतविशेषो धाम आश्रयो येषां तेषां, किरा-तानां म्लेच्छविशेषाणां। पूर्वजलनिधेः पूर्वसमुद्रात् नातिविप्रकृष्टं अनतिदूरवर्त्ति। जयाद्ध आयत्तीकृतवान्।

মর্দ্দিত করিলেন ; এই ভাবে সৈন্যগণের পদভরে উত্থিত ধূলিরাশিদ্বারা সকল সমুদ্রের জল ধূসরবর্ণ করিয়া সমগ্র পৃথিবী বিচরণ করিলেন। (দ) প্রথমে পূর্ব্বদিক্, তাহার পর ত্রিশঙ্কু-শোভিত দক্ষিণদিক্, তাহার পর বরুণ-চিহ্নিত পশ্চিমদিক্ এবং তদনন্তর নক্ষত্ররূপি-সপ্তর্ষি-শোভিত উত্তরদিক্ জয় করিলেন। (ধ) এই ভাবে তিন বৎসরে অন্যান্য সকল দ্বীপ আয়ত্ত করিয়া চারি সমুদ্রের খাতরূপ পরিখাদ্বারা পরিমিত সমগ্র পৃথিবীমণ্ডলই পরিভ্রমণ করিলেন। (ন) তাহার পর ক্রমশঃ সমগ্র ভুবনমণ্ডল জয় করিয়া, পৃথিবী প্রদক্ষিণ করিয়া, পরিভ্রমণ করতঃ, সুবর্ণপুরনামে একটি স্থান জয় করিয়া আয়ত্ত করিলেন ; সেই সুবর্ণপুর, কৈলাসপর্ব্বতের নিকটে বিচরণকারী হেমকূটপর্ব্বতনিবাসী ম্লেচ্ছগণের বাসস্থান ছিল এবং পূর্ব্বসমুদ্র হইতে

(१) उद्योतयन् पौरुषं इति क्वचिदधिकः पाठः। (२) आधुन्वन् वेला, आमर्द्दयंश्च वेला…।
(३) जिग्ये। (४) क्वचित् एवमिति नास्ति। (५) चतुरुदधि…। (६) निर्जित, आवर्जित…।
(७) वसुन्धरां। (८) हेमजकूटनाम्नां, हेमजटनाम्नां, हेमजटानाम्नां।

नातिविप्रकृष्टं (१) पूर्वजलनिधिं जित्वा जग्राह (न)। तत्र च निखिल-धरणितल-(२) पर्यटनखिन्नस्य निजबलस्य विश्रामहेतोः कतिपयान् दिवसानतिष्ठत्। (प)

एकदा तु तत्रस्थ एवेन्द्रायुधमारुह्य मृगयानिर्गतः (३) विचरन् कानने (४) शैलशिखरादवतीर्णं (५) यदृच्छया किन्नरमिथुनमद्राक्षीत् (फ)। अपूर्वदर्शनतया तु (६) समुपजातकुतूहलः कृतग्रहणाभिलाषस्तत्समीपमादरादुपसर्पित-तुरगः (७) समुपसर्पन्, (८) अदृष्टपूर्वपुरुषदर्शनत्रासप्रधावितञ्च तत् पलायमानमनुसरन्, अनवरतपार्ष्णिप्रहारद्विगुणीकृतजवेनेन्द्रायुधेन एकाकी निर्गत्य निजबल-(९) समूहात् सुदूरमनुससार (१०) (ब)। "अत्र ग्रहीष्यामि अत्र ग्रहीष्यामि

(प) तत्रेति। किञ्च तत्र सुवर्णपुरे। निखिलधरणितलपर्यटनेन खिन्नस्य परिश्रान्तस्य।

(फ) एकदेति। यदृच्छया स्वाधीनभावेन स्वेच्छया विचरदिति शेषः। किन्नरमिथुनं तुरङ्गवदनदम्पती, अद्राक्षीत् युवराज इत्यनुकृष्यते।

(ब) अपूर्वेति। अपूर्वं पूर्वमकृतं दर्शनं यस्य तस्य भावस्तया हेतुना। उपसर्पितः सञ्चालितस्तुरगो येन सः। अदृष्टपूर्वस्य पुरुषस्य मानुषस्य चन्द्रापीडस्य दर्शनेन यस्त्रासो भयं तेन प्रधावितं वेगेन चलितं, तत् किन्नरमिथुनं। अनवरतं यः पार्ष्णिप्रहारः पादमूलाभ्यां ताड़नं तेन द्विगुणीकृतो जवो वेगो यस्य तेन। "पार्ष्णिः कुभ्यां चमूपृष्ठे पादमूलोन्मदस्त्रियोः।" इति हेमचन्द्रः।

(भ) अत्रेति। अत्र द्विविपदान्तरस्थाने, ग्रहीष्यामि मया इदं किन्नरमिथुनमिति शेषः। इति अनया

অধিক দূরবর্ত্তী ছিল না। (প) সমস্ত পৃথিবী পর্যটন করায় সৈন্যগণ পরিশ্রান্ত হইয়াছিল, সুতরাং চন্দ্রাপীড় সেই সুবর্ণপুরে কয়েক দিন বিশ্রাম করিবার নিমিত্ত অবস্থান করিলেন।

(ফ) সেই সুবর্ণপুরে থাকিবার সময়েই একদিন চন্দ্রাপীড় ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া মৃগয়া করিবার নিমিত্ত নির্গত হইয়া বনমধ্যে বিচরণ করিতে করিতে দেখিতে পাইলেন যে, দুইটি কিন্নর পর্ব্বতের শৃঙ্গ হইতে নামিয়া ইচ্ছানুসারে বিচরণ করিতেছে। (ব) তাহাদিগকে পূর্ব্বে কখনও দেখেন নাই বলিয়া তাঁহার কৌতূহল জন্মিল এবং ধরিবার ইচ্ছা হইল, তাই তিনি যত্নপূর্ব্বক অশ্বচালনা করিয়া সেই কিন্নরদম্পতীর নিকট যাইতে লাগিলেন; এদিকে তাহারাও সেই প্রথম মনুষ্য দর্শন করিয়া ভয়ে দ্রুতবেগে পলায়ন করিতে লাগিল, চন্দ্রাপীড়ও তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিলেন, এই ভাবে তিনি, অবিশ্রান্ত গুল্ফপ্রহার করায় দ্বিগুণবেগবান্ ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া একাকী নির্গত হইয়া নিজ সৈন্যগণ হইতে বহুদূরে যাইয়া পড়িলেন। (ভ) 'এইখানেই ধরিব, এইখানেই ধরিব, এই ধরিয়াছি, এই ধরিয়াছি' এইরূপ ভাবিতে

---

(१) विप्रकृतं। (२) धरणीतल...। (३)...विनिर्गतः। (४) कानने। (५) शैलशिखरावतीर्णं। (६) अपूर्वतया तु। (७)...तुरङ्गः। (८) समुपससर्प। (९) बलसमूहात्। (१०) उपससार

"इदं गृहीतं इदं गृहीतं" इत्यतिरभसाकृष्टचेता महाजवतया तुरङ्गमस्य मुहूर्त्तमात्रेणैकपदमिवासहायस्तस्मात् प्रदेशात् पञ्चदशयोजनमात्रमध्वानं जगाम (भ)। तच्चानुबध्यमानं किन्नरमिथुनमालोकयत एवास्य सम्मुखापतितमचलतुङ्गशिखरमारुरोह (म)। आरूढे च तस्मिन् शनैः शनैस्तदनुसारिणीं निवर्त्य दृष्टिम्, अचल-शिखर-प्रस्तर-प्रतिहत-(१) गतिप्रसरं विधृततुरङ्गः (२) चन्द्रापीडस्तस्मिन् काले समारूढ-(३) श्रम-खेदार्द्र-शरीरमिन्द्रायुधमात्मानञ्चावलोक्य (४) क्षणमिव विचार्य्य स्वयमेव विहस्याचिन्तयत् (य) 'किमिति निरर्थकमयमात्मा मया शिशुनेवायासितः। किमनेन गृहीतेनागृहीतेन वा किन्नरयुगलेन प्रयोजनम्। यदि (५) गृहीतमिदं ततः किम्,

भावनया अतिरभसेन महावेगेन महानन्देन वा आकृष्टं चेतो यस्य सः। एकपदमिव एकपदपरिमितस्थानमित्यर्थः। पञ्चदशभिर्योजनैः प्रमितमिति पञ्चदशयोजनमात्रं, प्रमाणे मात्रट्प्रत्ययः षष्टिक्रोशपरिमितं पन्थानमित्यर्थः। "स्याद्योजनं क्रोशचतुष्टयेन" इति लीलावती।

(म) तच्चेति। किञ्च, अनुबध्यमानं अनुस्त्रियमाणं। आलोकयत एवास्य आलोकयन्तमिमं चन्द्रापीडमनादृत्य। अनादरे षष्ठी। सम्मुखं आपतितं उपस्थितं, अचलतुङ्गशिखरं पर्वतस्योच्चशृङ्गम्।

(य) आरूढ इति। किञ्च तस्मिन् किन्नरमिथुने आरूढे सति। अचलशिखरस्य पर्वतशृङ्गस्य प्रस्तरैः प्रतिहतः प्रतिबद्धो गतिप्रसरो गमनवेगो यस्य सः, अतएव विधृततुरङ्गः। समारूढेन समुत्पन्नेन श्रमस्वेदेन परिश्रमजनितघर्म्मेण आर्द्रं क्लिन्नं शरीरं यस्य तं। आत्मानं स्वदेहम्।

(र) किमितीति। आत्मा देहः। आयासितः व्यर्थपथागमनेन परिश्रमितः। इदं किन्नरयुगलम्।

ভাবিতে অত্যন্ত আনন্দে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া একাকী চন্দ্রাপীড়, অশ্বটা অত্যন্ত বেগগামী ছিল বলিয়া এক মুহূর্ত্তে সেই স্বর্ণপুর হইতে এক-পদ-পরিমিত স্থানের ন্যায় ষাট ক্রোশ পথ চলিয়া গেলেন। (ম) কিন্তু চন্দ্রাপীড় তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ-ই যাইতেছিলেন এবং দেখিতেছিলেন, এই অবস্থাতেই সেই কিন্নর দুইটি সম্মুখবর্ত্তী কোন পর্ব্বতের উচ্চ শৃঙ্গে যাইয়া আরোহণ করিল। (য) তাহারা পর্ব্বতের শৃঙ্গে আরোহণ করিলে চন্দ্রাপীড় ধীরে ধীরে সে দিক্ হইতে চোখ ফিরাইলেন এবং পর্ব্বত-শৃঙ্গের প্রস্তরে গমনবেগ রুদ্ধ হইতেছিল বলিয়া ঘোড়াটা ধরিলেন, সে সময়ে পরিশ্রমবশতঃ ঘর্ম্মজল নির্গত হইয়া শরীর আর্দ্র করিয়াছিল—এই অবস্থায় আপনাকে ও ইন্দ্রায়ুধকে দেখিয়া, ক্ষণকাল মনে মনে বিতর্ক করিয়া, আপনা আপনিই হাস্য করিয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন—(র) 'কেন আমি বালকের ন্যায় এই শরীরকে অনর্থক পরিশ্রম করাইলাম; এই কিন্নর দুইটাকে ধরিলেই বা কোন্ ফল হইত, আর না ধরায়ই বা কোন্

(१) ...अचलशिखरप्रतिहत...। (२) ...तुरङ्गमः।
(३) समुपारूढ...। (४) आलोक्य। (५) क्वचित् यदीति नास्ति।

अथ न गृहीतं ततोऽपि किम्? अहो मे मूर्खतायाः प्रकारः, अहो यत्किञ्चन-कारितायामादरः, अहो निरर्थकव्यापारेष्वभिनिवेशः, अहो बालिशचरितेष्वा-सक्तिः (र)। साधुफलं कर्म्म क्रियमाणं वृथा जातम्। अवश्यकर्त्तव्या (१) क्रिया प्रस्तुता विफलीभूता। सुहृत्कार्य्यमुपपाद्यमानं नोपपन्नम्। राजधर्म्मः प्रवर्त्तितो न निष्पन्नः। गुर्व्वर्थः प्रारब्धो न परिसमाप्तः। विजिगीषुव्यापार-(२) प्रयत्नो न सिद्धः (ल)। कस्मादहमाविष्ट इवोत्सृष्टनिजपरिवार एतावतीं (३) भूमिमायातः (व)। कस्माच्च मया निष्प्रयोजनमिदमनुसृतमश्वमुख-द्वयमिति विचार्य्यमाणे सत्ययं (४) आत्मैव मे पर इव हासमुपजनयति (श)।

आश्चर्य्ये अहोशब्दाः। प्रकारो विशेषः। यत्किञ्चन निष्प्रयोजनं यत्किञ्चित् कार्य्यं करोतीति स तस्य भावस्तस्यां, आदरो महायत्नः। अभिनिवेश आग्रहः। बालिशचरितेषु मूढजनव्यवहारेषु आसक्तिरैकाग्रता।

(ल) साध्विति। साधु उत्कृष्टं फलं यस्य तत्तादृशं क्रियमाणं कर्म्म दिग्विजयरूपं, वृथा जातं, इतः प्रतिनिवृत्त्यसम्भवेन तत्फलभोगासम्भवादिति भावः। अवश्यकर्त्तव्या क्रिया दुष्टनिग्रहशिष्टानुग्रहात्मक-सुशासनरूपा, प्रस्तुता आरब्धा, विफलीभूता, इतो मे प्रतिनिवृत्त्यसम्भवात्। सुहृदां मित्रनृपतीनां कार्य्यं राज्येषु सुशासनव्यवस्थापनरूपं, उपपाद्यमानं मयैव निष्पाद्यमानं सत् न उपपन्नं न सम्पूर्णं इतो गमना-सम्भवात्। राजधर्म्मो दिग्विजयात्मकः, प्रवर्त्तित आरब्धः, न निष्पन्नः पुनः स्वदेशगमनासम्भवात्। गुर्व्वर्थः पितृकार्य्यं तत्कीर्त्तिप्रसारणं, प्रारब्धो न परिसमाप्तः, अत्रैव मे विलयेन परं पराजयघोषणासम्भवात्। विजिगीषुव्यापाराय दिग्विजयात्मकाय प्रयत्नो न सिद्धः, पुनर्गृहगमनासम्भवात्।

(व) कस्मादिति। आविष्ट इव भूतग्रस्त इव सन्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(श) कस्मादिति। किञ्च। अश्वमुखद्वयं किन्नरयुगलं। पर इव अन्य इव।

অনিষ্ট হইয়াছে? যদি ইহাদিগকে ধরিতে পারিতাম, তাহা হইলেই বা কি হইত, আর যে ধরিতে পারি নাই, তাহাতেই বা কি হইয়াছে? কি আশ্চর্য্য! আমার মূর্খতার রকম দেখ, যে কোন কার্য্য করিতে আমার যত্ন, অনর্থক কার্য্যে আমার আগ্রহ! এবং মূর্খের ব্যবহারে আমার আসক্তি। (ল) যাহার ফল উৎকৃষ্ট, সেই কার্য্য করিতেছিলাম; কিন্তু তাহা আজ বৃথা হইল; যাহা অবশ্যকর্ত্তব্য, সেই কার্য্য আরম্ভ করিয়াছিলাম, তাহা বিফল হইয়া গেল; মিত্রগণের কার্য্য করিতেছিলাম, সম্পন্ন হইল না; রাজার নিয়ম আরম্ভ করিয়াছিলাম, সম্পূর্ণ হইল না; পিতার কার্য্য আরম্ভ করিয়াছিলাম, সমাপ্ত হইল না; বিজিগীষুর কার্য্যসাধনে যত্ন করিয়াছিলাম, সিদ্ধ হইল না। (ব) কেন আমি ভূতাবিষ্টের ন্যায় নিজের পরিজনদিগকে পরিত্যাগ করিয়া এত দূরে আসিলাম। (শ) বিনা প্রয়োজনে কেন আমি এই কিন্নর দুইটার অনুসরণ করিলাম, ইহার বিচার করিতে লাগিলে আমার এই আত্মাই অন্যের ন্যায়

(१) कर्त्तव्यक्रियां। (२)...व्यापारं।
(३) उत्सृष्टा निजपरिवारं उत्सृष्टपरिवार एव तावतीं। (४) यत् सत्यं।

न जाने कियताध्वना विच्छिन्नमितो बलमनुयायि मे (ष)। महाजवो हीन्द्रायुधो निमेष-(१) मात्रेणातिदूरमतिक्रामति (स)। न चागच्छता मया तुरगवेगवशात् किन्नरमिथुने बद्धदृष्टिना (२) अस्मिन्नविरल-तरु-शत-शाखा-गुल्म-लता-सन्तान-गहने निरन्तर निपतित-(३) शुष्क-पर्णावकीर्ण-तले महावनी पन्था निरूपितः, येन प्रतिनिवृत्य यास्यामि (ह)। न चास्मिन् प्रदेशे प्रयत्नेनापि परिभ्रमता मया (४) मर्त्त्यधर्म्मा कश्चिदासाद्यते, यः सुवर्णपुरगामिनं पन्थानमुपदेक्ष्यति (क्ष)। श्रुतं हि मया बहुशः कथ्यमानं, 'उत्तरेण सुवर्णपुरं सीमान्तलेखा पृथिव्याः सर्वजनपदानाम्, ततः परतो निर्म्मानुषमरण्यम्,

(ष) ननु वृथानिर्वेदमपहाय गत्वा स्वजनैः सह संयुज्यतामित्याह न जाने इति।

(स) अथेदानीमेवागतोऽसीति न तथातिदूरे बलमित्याह महेति। हि यस्मात्।

(ह) ननु तथापि पन्थानं पश्यन्नेवागतोऽसीति तेनैव परिचितेन पथा प्रतिगम्यतामित्याह न चेति। अविरलेन घनेन तरुशतस्य वृक्षसमूहस्य, शाखानां, गुल्मानां स्तम्बानां, लतानाञ्च सन्तानेन परम्परया गहने निविड़े, तथा निरन्तरं निरवकाशं यथा स्यात् तथा निपतितैः शुष्कपर्णैः अवकीर्णं आच्छन्नं तलं निम्नदेशो यस्य तस्मिन्। न च निरूपितः नैव सम्यग् दृष्टः। अत्र निरूपणाभावं प्रति किन्नरमिथुने बद्धदृष्टित्वं तुरगवेगः अविरलेत्यादिविशेषणद्वयार्थश्च हेतुरिति पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

(क्ष) अथैवमेव तत् कश्चिज्जनं पन्थानं पृष्ट्वा गच्छ इत्याह नचेति। मर्त्त्यधर्म्मा मानवः। प्रयत्नेनापि नासाद्यते न लब्धुं शक्यते। सुतरां जिज्ञासयापि निरूपणासम्भव इति भावः।

(क) ननु कथं मर्त्त्यधर्म्मा नासीदेत इत्याह श्रुतमिति। हि यस्मात्। कथ्यमानं वृद्धैरिति शेषः। सुवर्णपुरं उत्तरेण सुवर्णपुरस्यादूरे उत्तरस्यां दिशि। उत्तरेणेति "अदूरे एनोऽपञ्चम्या" इत्येनप्रत्ययः, तद्योगे सुवर्णपुरमिति "द्वितीयैनेने"ति द्वितीया। पृथिव्याः सर्वजनपदानां सीमान्तलेखा अवधिशेषरेखा।

হাস্ত অন্যায়। (ষ) জানি না—আমার অশ্বগামী সৈন্যগণ এ স্থান হইতে কত পথে বিভক্ত হইয়া রহিয়াছে। (স) কারণ—মহাবেগবান্ ইন্দ্রায়ুধ এক নিমেষেই বহুদূর অতিক্রম করিয়া থাকে। (হ) আমি আসিবার কালে অশ্বের বেগবশতঃ এবং কিন্নর দুইটার প্রতি নিশ্চল দৃষ্টি রাখায় এই মহাবনের পথ নিরূপণ করিতে পারি নাই যে, ফিরিয়া যাইব; বিশেষতঃ ঘন ঘন বৃক্ষসমূহ, শাখা, গুল্ম ও লতাসমূহে এই মহাবন অত্যন্ত নিবিড় ছিল এবং ঘনভাবে নিপতিত শুষ্কপত্রসমূহে ইহার নিম্নদেশ আচ্ছন্ন ছিল। (ক্ষ) আমি এই প্রদেশে বিচরণ করিয়া বিশেষ যত্ন করিলেও এমন কোন মানুষ পাইব না, যে স্বর্ণপুরগামী পথ বলিয়া দিবে। (ক) কারণ—আমি প্রাচীনদিগকে বহুতর বলিতে শুনিয়াছি যে, 'সুবর্ণপুরের উত্তরে পৃথিবীর সমস্ত দেশের শেষ সীমার রেখা রহিয়াছে, তাহার পর মনুষ্যহীন অরণ্য এবং

(१) निमिष···। (२) निबद्धदृष्टिना। (३)...पतित...। (४) कश्चित् सधैति नास्ति।

तस्यातिक्रम्य कैलासगिरिरिति'। अयञ्च कैलासः (क)। तदिदानीं प्रतिनिवृत्यैकाकिना स्वयमुत्प्रेक्षयोत्प्रेक्ष्य दक्षिणामाशां केवलमङ्गीकृत्य गन्तव्यम् (ख)। 'आत्मकृतानां हि दोषाणां नियतमनुभवितव्यं फलमात्मनैव' इत्यवधार्य्य वामकरतल-वलित-(१) रश्मिपाशस्तुरङ्गमं व्यावर्त्तयामास। (ग)

व्यावर्त्तिततुरङ्गमश्च (२) पुनश्चिन्तितवान्—'अयमुद्भासित-प्रभा-भास्वरो भगवान् भानुरधुना दिवसश्रियो रशनामणिरिव नभस्तलमध्यं (३) अलङ्करोति (घ)। परिश्रान्तश्चायमिन्द्रायुधः, तदेनं तावदाग्रहीत-कतिपय-दूर्वा-प्रवाल-कवलं कस्मिंश्चित् सरसि शिलाप्रस्रवणे वा सरिदम्भसि वा स्नातपीतोदकमपनीतश्रमं कृत्वा स्वयञ्च सलिलं पीत्वा कस्यचित्तरोरधश्छायायां मुहूर्त्त-

---

कैलासगिरिर्वर्त्तत इति शेषः। इति कथ्यमानमित्यन्वयः। अयञ्च सन्निधौ दृश्यमानः स कैलासः। सुतरामत्र मानुषप्रचारोऽपि नास्तीति भावः।

(ख) तदिति। तस्मात्। स्वयमुत्प्रेक्षयोत्प्रेक्ष्य आत्मनैव सम्भाव्य सम्भाव्य, दक्षिणामाशां दिशं अङ्गीकृत्य गन्तव्यत्वेन स्वीकृत्य अवलम्ब्येत्यर्थः, केवलं गन्तव्यं। तथा च यदि स्वजनः प्राप्यत इति भावः।

(ग) आत्मेति। नियतं निश्चितं। इत्यवधार्य्य मनसा निश्चित्य। वामकरतलेन वलित आकृष्य धृतः रश्मिपाशः प्रग्रहरज्जुर्येन सः। तुरङ्गमिन्द्रायुधम्।

(घ) व्यावर्त्तितेति। उद्भासितप्रभाभिः सन्दीप्तद्युतिभिः भास्वरो विशेषेण दीप्तिमान्, भानुः सूर्य्यः, दिवसश्रियो रशनामणिरिव काञ्चीदामरत्नमिव नभस्तलस्य आकाशस्य मध्यमलङ्करोति, मध्याह्नः प्रवृत्त इत्यर्थः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) परीति। एनमिन्द्रायुधं, आग्रहीता मुखेन धृताः खादिता इत्यर्थः कतिपये दूर्वाप्रवालानां

তাহা অতিক্রম করিয়া কৈলাসপর্ব্বত অবস্থান করিতেছে'; এই সেই কৈলাসপর্ব্বত দেখা যাইতেছে। (খ) সুতরাং এখন একাকীই এখান হইতে ফিরিয়া আপনা আপনিই বিবেচনা করিয়া করিয়া দক্ষিণ দিক্ অবলম্বনপূর্ব্বক কেবলই গমন করিতে হইবে। (গ) 'নিজকৃত দোষের ফল, নিশ্চয় নিজেরই ভোগ করিতে হয়' এইরূপ মনে মনে স্থির করিয়া বামহস্তদ্বারা লাগাম টানিয়া ধরিয়া ঘোড়াটী ফিরাইলেন।

(ঘ) ঘোড়াটী ফিরাইয়া আবার চিন্তা করিতে লাগিলেন—'প্রখর কিরণসমূহে অত্যন্ত দীপ্তিমান্ এই সূর্য্যদেব, এখন দিনলক্ষ্মীর কাঞ্চীদামস্থিত মণির ন্যায় আকাশের মধ্যস্থান অলঙ্কৃত করিতেছেন। (ঙ) এই ইন্দ্রায়ুধও পরিশ্রান্ত হইয়া পড়িয়াছে, অতএব ইহাকে কয়েকটি দূর্ব্বাপল্লবের গ্রাস ভক্ষণ করাইয়া, কোন সরোবরে কিংবা পার্ব্বত্য-প্রস্রবণে অথবা নদীর জলে

---

(१)...वलित..। (२)...तुरङ्गश्च, तुरगश्च। (३) क्वचित् नभस्तलमिति नास्ति।

मात्रं विश्रम्य ततो गमिष्यामि' (ङ)। इति चिन्तयित्वा सलिलमन्विष्यन् (१) मुहुर्मुहुरितस्ततो दत्तदृष्टिः पर्य्यटन् नलिनीजलावगाहोत्थितस्याचिरादपक्रान्तस्य च महतो गिरिचरस्य वनगजयूथस्य चरणोत्थापितैः (२) पङ्कपटलैरार्द्रीकृतम्, करावकृष्टैश्च समृणालमूलनालैः (३) कमलकलापैः कल्माषितम्, आर्द्रार्द्रैश्च शैवलप्रवालैः श्यामलितोद्देशम्, उद्दलितैश्च कुमुद-(४) कुवलय-कह्लार-कुड्मलैरन्तरान्तरा विच्छुरितम्, उत्खातैश्च सकर्द्दमैः शालूककन्दैराकीर्णम्, खण्डितैश्च (५) कुसुमस्तवकशारैर्धनपल्लवैराच्छादितम्, आलूनाभिश्च कुसुमो-

---

दूर्वापल्लवानां कवला ग्रासा येन तम्। शिलाप्रस्रवणे पर्वतनिर्झरे, सरिदम्भसि नदीजले वा, आदौ स्नातं स्नानमग्नीकृतं परश्च पीतं उदकं येन तं, अतएव अपनीतः श्रमो यस्य तं तादृशं।

(च) इतीति। पर्य्यटन् चन्द्रापीडो मार्गमद्राक्षीदिति परेणान्वयः। नलिन्याः पद्मयुक्तस्य सरोवरस्य जले अवगाहात् स्नानात् परमुत्थितस्य। "नलिनी पद्मिनी पद्म-व्योमसिन्धु-सरोवरे। नलिकायाञ्च नलिनी" इति विश्वः। अपक्रान्तस्य अपसृतस्य। पङ्कपटलैः कर्द्दमसमूहैः। आर्द्रीकृतमित्यतो द्वितीयैकवचनान्तपदानि मार्गमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। करावकृष्टैः शुण्डाभिराकृष्यानीतैः। अपि चेति चकाराणामर्थः सर्वत्र। कल्माषितं चित्रीकृतम्। आर्द्रार्द्रैरचिरोत्तोलनादतिशयेन जलक्लिन्नैः, शैवलप्रवालैः शैवालपल्लवैः श्यामलिताः श्यामवर्णीकृताः उद्देशाः स्थानानि यस्य तम्। उद्दलितैर्भङ्क्त्वोत्थापितैः, कुमुदानि श्वेतोत्पलानि, कुवलयानि नीलोत्पलानि, कह्लाराणि सौगन्धिकानि, तेषां कुड्मलैर्मुकुलैः, अन्तरान्तरा मध्ये मध्ये विच्छुरितं रञ्जितम्। उत्खातैरुत्पाटितैः शालूककन्दैरुत्पलानां मूलैः, आकीर्णं व्याप्तम्। "शालूकमेषां कन्दः स्या"दित्यमरः। अत्र शालूकशब्देनैव चरितार्थत्वे पुनर्मूलार्थककन्दशब्दोपादानादधिकपदतादोषः, कन्दपदपरित्यागेनैवासौ समाधेयः। खण्डितैर्भग्नैः कुसुमस्तवकशारैः पुष्पगुच्छविचित्रैः। आलू-

---

স্নান ও জলপান করাইয়া, ইহার পরিশ্রম দূর করিয়া আপনিও জলপান করিয়া কোন বৃক্ষের নীচের ছায়াতে কিছুকাল বিশ্রাম করিয়া তাহার পরে যাইব' (চ) এইরূপ চিন্তা করিয়া জলের অন্বেষণে ইতস্ততঃ বারংবার দৃষ্টিপাত করিয়া বিচরণ করিতে করিতে একটি পথ দেখিতে পাইলেন। পর্ব্বতচারী কতকগুলি বন্য হস্তী সরোবরের জলে অবগাহনপূর্ব্বক উঠিয়া সদ্যই চলিয়া গিয়াছে, তাহাদের চরণদ্বারা উত্থাপিত কর্দ্দমসমূহে সেই পথটি আর্দ্র করিয়াছিল; শুণ্ডদ্বারা মৃণাল, মূল ও নালদণ্ডের সহিত উত্তোলিত কতকগুলি পদ্মে, সেই পথটি বিচিত্র করিয়াছিল; জলক্লিন্ন শেওলার পল্লবে তাহার বহুস্থান শ্যামবর্ণ করিয়াছিল; উদ্ধৃত শ্বেতোৎপল, নীলোৎপল ও সুঁধির কলিকাতে মধ্যে মধ্যে সে পথটি রঞ্জিত করিয়াছিল; কর্দ্দমের সহিত উত্তোলিত শালূকে ব্যাপ্ত ছিল; ভগ্ন ও পুষ্পগুচ্ছে বিচিত্র এইরূপ বনপল্লবে আচ্ছাদিত ছিল; ছিন্ন

---

(१) अन्विष्यमाणः, अन्वेषमाणः, अन्वेषयन्। (२) अपक्रान्तस्य, अतिमहतः, गिरिचरस्य चरणोत्तारितैः।
(३) करिकलभकृष्टैः सनालनालैः। (४) कमलकुमुद...। (५) आखण्डितैश्च।

प्रविष्टोल्लसत्-(१) षट्पदाभिर्वनलताभिराकुलितम्, अभिनवकुसुम-(२) परिमलवाहिना च तमालपल्लवरस-(३) श्यामेन मदजलेन सर्वतः सिक्तं मार्गमद्राक्षीत्। (च)

उपजातजलाशयशङ्कश्च (४) तं प्रतीपमनुसरन्, उद्ग्रीवदृश्यैरुपरिच्छत्रमण्डलाकारैः सरल-साल-सल्लकी-प्रायैरविरलैरपि निःशाखतया विरलैरिवोपलक्ष्यमाणैः पादपैरुपेतेन, (छ) स्थूल-कपिल-बालुकेन, (ज) शिलाबहुलतया (५)

नाभिश्छन्नाभिः, कुसुमेषु उपविष्टाः सन्तः उल्लसन्तः स्फुरन्तः षट्पदा भ्रमरा यासु ताभिः। आकुलितं व्याप्तम्। तथा अभिनवकुसुमस्य सद्यःप्रस्फुटितपुष्पस्य परिमलं सौरभं तद्वत् सुगन्धमित्यर्थः वहतीति तेन। अतएवात्र असम्बन्धे सम्बन्धरूपा निदर्शनालङ्कारः। तमालपल्लवस्य रसवत् निर्यासवत् श्यामेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(छ) उपेति। उपजाता जलजादिचिह्नदर्शनादुत्पन्ना जलाशयस्य शङ्का सम्भावना यस्य सः, चन्द्रापीडः, तं मार्गं प्रतीपं प्रतिकूलं यथा स्यात्तथा अनुसरन् तदाभिमुख्येन गच्छन् कैलासतलेन कञ्चिदध्वानं गत्वा तरुषण्डं ददर्शेत्यन्वयः। उद्ग्रीवं यथा स्यात्तथैव दृश्यैरत्युच्चैरित्यर्थः, उपरि भागे छत्रमण्डलस्य आतपत्रावरणवलयस्य आकार इव आकारो येषां तैः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। सरलसालसल्लक्यः स्वनामख्यातपार्वत्यवृक्षविशेषाः प्रायाः बहुला येषु तैः, अविरलैर्घनैरपि निःशाखतया शिखरपर्य्यन्तशाखाहीनतया हेतुना, विरलैरघनैरिव उपलक्ष्यमाणैर्दृश्यमानैः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। पादपैरुपेतेन—इत्यतः क्लीवलिङ्गानि तृतीयैकवचनान्तपदानि कैलासतलेनेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि।

(ज) स्थूलेति। स्थूलाः पीवराः कपिलाः पिङ्गलवर्णाश्च बालुकाः सिकता यस्मिन् तेन।

(झ) शिलेति। शिलाबहुलतया हेतुना, विरला अल्पाः, तृणानि, उलपा विस्तीर्णा लताश्च यस्मिन् तेन। "लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि" इत्यमरः।

বন লতাতে ব্যাপ্ত ছিল, ভ্রমরগণ সেই লতার ফুলের উপর বসিয়া শোভা পাইতেছিল এবং নূতন পুষ্পের ন্যায় সৌরভবাহী ও তমালপল্লবের নির্যাসের ন্যায় শ্যামবর্ণ হস্তিগণের মদজলে সেই পথটির সকল স্থান সিক্ত ছিল।

(ছ) সেই পথ দেখিয়া, নিকটে জলাশয় আছে বলিয়া চন্দ্রাপীড়ের ধারণা জন্মিল; তখন তিনি সেই পথের অভিমুখে কৈলাসপর্ব্বতের নীচ দিয়া যাইতে লাগিলেন; সেই স্থানে বহুতর বৃক্ষ ছিল, সেগুলিকে উদ্গ্রীব হইয়া দেখিতে হইত; সেগুলির উপরিভাগ, ছত্রের ন্যায় মণ্ডলাকার পত্র ও পল্লবে আচ্ছন্ন ছিল; তাহার মধ্যে সরল, সাল ও সল্লকীবৃক্ষই অধিক পরিমাণে ছিল, এবং ঘন হইলেও শাখা না থাকায় ফাঁক ফাঁক হইয়া রহিয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছিল। (জ) সে স্থানে পিঙ্গলবর্ণ বড় বড় বালি ছিল; (ঝ) প্রস্তরময় বলিয়া

---

(१) कुसुमोपविष्टनिष्पिष्टोल्लसत...। (२)...बकुलकुसुम...। (३)...सरस...।
(४)...जलाशय। (५) शिलातलबहुलतया।

विरलतृणोलपेन, (झ) वन-द्विप-दशन-दलित-मनःशिला-धूलि-कपिलेन, (ञ) आभङ्गिनीभिरुत्कीर्णाभिरिव पत्रभङ्गकुटिलाभिः पाषाणभेदक-मञ्जरीभिर्जटिलीकृतशिलातलेन, (ट) अनवरत-गलद्गुग्गुलु-द्रुम-द्रवार्द्रीकृत-दृषदा, (ठ) शिखर-स्रुत-शिला-जतु-रस-पिच्छिलोपलेन, (ड) टङ्कन-हय-खुर-खण्डित-हरिताल-क्षोद-पांशुलेन, (ढ) आखु-नखरोत्खात-बिल-विप्रकीर्ण-(१) काञ्चन-चूर्णेन, (ण) सिकता-निमग्न-चमर-(२) कस्तूरिका-मृगी-खुर-

---

(ञ) वनेति। वनद्वीपानां वन्यहस्तिनां दशनैर्दन्तैर्दलितानां मर्द्दितानां मनःशिलानां पार्वत्यधातु-विशेषाणां धूलिभिः रेणुभिः कपिलेन पिङ्गलवर्णेन।

(ट) आभङ्गीति। आभङ्गी विविधभङ्गिरासामस्तीति ताभिः, अतएव उत्कीर्णाभिरिव पाषाणं सन्तक्ष्य निर्म्मिताभिरिव स्थिताभिः, पत्रभङ्गवत् कपोलादौ पत्रलताचिह्नवत् कुटिलाभिर्वक्राभिः, पाषाण-भेदकानां वृक्षविशेषाणां मञ्जरीभिः जटिलीकृतानि विषमितानि शिलातलानि पाषाणयोरन्तराणि यस्य तेन। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालुप्तोपमयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः। "पाषाणभेदनः (पुं) वृक्षविशेषः" इति कल्पद्रुमः।

(ठ) अनेति। अनवरतं गलद्भिः गुग्गुलुद्रुमाणां द्रवैर्निर्य्यासैः आर्द्रीकृता दृषदः पाषाणा यस्मिन् तेन।

(ड) शिखरेति। शिखरात् शृङ्गात् स्रुतेन गलितेन शिलाजतुरसेन तदाख्यधातुद्रवेण पिच्छिला उपलाः प्रस्तरा यस्मिन् तेन।

(ढ) टङ्कनेति। टङ्कनानि पाषाणविदारणास्त्राणीव ये हयानामश्वानां खुरास्तैः खण्डितानां चूर्णितानां हरितालानां क्षोदैश्चूर्णैः पांशुलं धूलिमयं तेन। "टङ्कः पाषाणदारणः" इत्यमरः।

(ण) आखिति। आखूनां उन्दुरूणां नखरैर्नखैः उत्खातेभ्यः कृतेभ्यो बिलेभ्यो गर्त्तेभ्यः विप्र-कीर्णानि विक्षिप्तानि काञ्चनचूर्णानि सुवर्णरेणवो यस्मिन् तेन।

(त) सिकतेति। सिकतासु वालुकासु निमग्ना अवगाढा चमराणां हरिणविशेषाणां कस्तूरिका-मृगीणाञ्च खुरपङ्क्तिः खुरचिह्नश्रेणिर्यस्मिन् तेन।

তৃণ ও লতা অল্পই ছিল। (ঞ) বন্য হস্তিগণের দন্তদ্বারা চূর্ণিত মনঃশিলার রেণুতে সে স্থানটি পিঙ্গলবর্ণ হইয়াছিল। (ট) হাড়জোড়া গাছের মঞ্জরীতে দুই দুইখানা পাথরের মধ্যস্থান দুর্গম করিয়াছিল; সেগুলি, কপোল-চিত্রিত পত্রলতাচিহ্নের ন্যায় বক্র ছিল এবং নানাবিধ ভঙ্গী থাকায় সেগুলিকে পাষাণ হইতে খোদিতের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ঠ) গুগ্গুলু-বৃক্ষ হইতে অনবরত নির্য্যাস গলিত হইয়া পাথরগুলিকে আর্দ্র করিয়াছিল; (ড) শৃঙ্গ হইতে গলিত শিলাজতুর রসে পাথরগুলি পিছল হইয়াছিল; (ঢ) সাবলের ন্যায় ঘোড়ার খুরদ্বারা বিদীর্ণ হরিতালের রেণুতে সে স্থানটা লিমগ্ন হইয়াছিল; (ণ) মূষিকের নখ-নির্ম্মিত গর্ত্ত হইতে সুবর্ণরেণু সকল বিক্ষিপ্ত থাকিত; (ত) চমরমৃগ ও কস্তূরীমৃগের খুরের চিহ্ন

---

(१)...अवकीर्ण...। (२)...चमरक...।

पङ्क्तिना, (त) संशीर्ण-रङ्कु (१) रल्लक-रोम-प्रकर-निचितेन, (थ) विषम-शिलाच्छेदोपविष्ट-जीवञ्जीवक-युगलेन, (द) वनमानुषमिथुनाध्यासिततट-गुहामुखेन, (ध) गन्धपाषाण-परिमलामोदिना, वेत्रलताप्रतानप्ररूढवेणुना (२) कैलासतलेन, (न) कञ्चिदध्वानं गत्वा तस्यैव कैलासशिखरिणः पूर्वोत्तरे दिग्भागे जलभारालसं (३) जलधर-व्यूहमिव बहुल-पक्ष-क्षपान्धकारमिव (४) पुञ्जीकृतमत्यायतं तरुषण्डं (५) ददर्श (प)। तत्र (६) सम्मुखादागतेन (७)

(त) संशीर्णेति। संशीर्णेन देहात् पतितेन रङ्कूणां रल्लकानाञ्च हरिणविशेषाणां रोमप्रकरेण लोमसमूहेन निचितं व्याप्तं तेन।

(थ) विषमेति। विषमेषु उच्चावचेषु शिलाच्छेदेषु प्रस्तरखण्डेषु उपविष्टानि जीवञ्जीवकयुगलानि चकोरपक्षिमिथुनानि यस्मिन् तेन। जीवं प्राणिनं जीवयति विषनाशनेनेति जीवञ्जीवकः। "जीवञ्जीवश्चकोरे स्याद् द्रुमभेदेऽपि पुंस्ययम्।" इति मेदिनी।

(द) वनेति। वनमानुषाणां मिथुनैर्दम्पतीभिः अध्यासितानि तटगुहामुखानि पार्वत्यगह्वरद्वाराणि यत्र तेन।

(ध) गन्धेति। गन्धपाषाणानां गन्धकानां परिमलेन सौरभेण आमोदिना आह्लादकारिणा। "गन्धपाषाणः (पुं) गन्धकः।" इति शब्दकल्पद्रुमः। वेत्रलतानां प्रतानेषु गुच्छेषु प्ररूढा उत्पन्ना वेणवो वंशा यस्मिन् तेन। कैलासतलेन कैलासपर्वतस्य निम्नदेशेन।

(न) कञ्चिदिति। कञ्चिदध्वानं कियन्तं पन्थानं। जलधरव्यूहं मेघसमूहमिव, तथा बहुलपक्षस्य कृष्णपक्षस्य क्षपाया रात्रेरन्धकारमिव, निबिडतया गाढकृष्णवर्णमिति भावः। अत्यायतं बहुस्थानव्यापि, तरुषण्डं वृक्षसमूहं। अत्र श्रौतोपमाद्वयस्य परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(प) तत्रेति। कुसुमरजसां पुष्पपरागाणां कषायैः सौरभैः आमोदिना आह्लादकारिणा, "कषायः

সকল বালুকারাশির উপরে পড়িয়াছিল; (থ) রঙ্কুমৃগ ও কম্বলমৃগের গাত্র হইতে লোমসমূহ পতিত হইয়া সে স্থানটা ব্যাপ্ত করিয়াছিল; (দ) উচু নীচু পাথরখণ্ডের উপরে বহুতর চকোরপক্ষী বসিয়াছিল; (ধ) পর্ব্বতগহ্বরের দ্বারে বহুসংখ্যক বনমানুষদম্পতী অবস্থান করিতেছিল; (ন) গন্ধকের গন্ধে আমোদ জন্মাইতেছিল এবং বেতের ঝাড়ের ভিতরে বাঁশের ঝাড় জন্মিয়াছিল; (প) চন্দ্রাপীড় সেই কৈলাসপর্ব্বতের নীচ দিয়া কিছু পথ অতিক্রম করিয়া সেই কৈলাসপর্ব্বতেরই পূর্ব্বোত্তর কোণে, জলভারে মন্থর মেঘসমূহের ন্যায় এবং কৃষ্ণ পক্ষের রাত্রির অন্ধকারের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ, বহুস্থানব্যাপী ও পুঞ্জীকৃত বৃক্ষসমূহ দেখিতে পাইলেন। (ফ) পুষ্পরেণুর সৌরভে আহ্লাদজনক, জলসংস্পর্শে শীতল,

(१) संशीर्णजीर्णरङ्कु, सङ्कीर्णशङ्कु, सङ्कीर्णजीर्णरल्लक…। (२)…प्रतानवताप्ररूढ…। (३) जलभारालसजल…। (४) बहुलक्षपा… (५) विविधतरुषण्डं। (६) तत्र। (७) सम्मुखागतेन।

कुसुम-(१) रजः-कषायामोदिना जलसंसर्गशिशिरेण शीकरिणा (२) चन्दन-रस-स्पर्शेन (३) आलिङ्ग्यमान इव जलतरङ्गमारुतेन, कमलमधुपानमत्तानाञ्च श्रोत्रहारिभिः कलहंसानां कोलाहलैराहूयमान इव प्रविवेश (४)। (फ)

प्रविश्य च तस्य तरुषण्डस्य मध्यभागे मणिदर्पणमिव त्रैलोक्यलक्ष्म्याः, स्फटिकभूमिगृहमिव वसुन्धरादेव्याः, (५) निर्गमन-(६) मार्गमिव सागराणाम्, निस्यन्दमिव दिशाम्, अवतारमिव जलाकारं (७) गगनतलस्य, कैलासमिव द्रवतामापन्नम्, तुषारगिरिमिव विलीनम्, चन्द्रातपमिव रसतामुपेतम्, हराट्टहासमिव जलीभूतम्, त्रिभुवन-पुण्यराशिमिव सरोरूपेणावस्थितम्,

सुरभौ रसे" इति त्रिकाण्डशेषः, जलसंसर्गेण शिशिरः शीतलस्तेन, शीकरिणा जलविन्दुवता, तथा चन्दन-रसस्य स्पर्श इव स्पर्शो यस्य तेन, जलतरङ्गमारुतेन आलिङ्ग्यमान इव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तरङ्ग-शब्देन जलार्थस्यापि बोधनात् तद्वाचकमपि जलपदमिति नाधिकपदत्वदोषः। कमलमधुपानमत्तानां कलहंसानां श्रोत्रहारिभिर्मधुरतया कर्णाकर्षकैः कोलाहलैराहूयमान इव च सन् तत् तरुषण्डं प्रविवेश च इत्यन्वयः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) प्रविश्येति। किञ्च प्रविश्य तस्य तरुषण्डस्य मध्यभागे अच्छोदं नाम सरो ददर्शेति दूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र द्वितीयान्तपदानि अच्छोदं नाम सर इत्यस्य विशेषणानि। त्रैलोक्यलक्ष्म्याः मणिदर्पणमिव स्वच्छतया सर्वप्रतिबिम्बग्रहणात्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। वसुन्धरादेव्याः स्फटिकभूमि-गृहमिव भूगर्भगतं स्फटिकमयं भवनमिव विशदत्वात्। जात्युत्प्रेक्षा। सागराणां निर्गमनमार्गमिव पाताललङ्घने निःसरणपथमिव विस्तृतत्वादतलस्पर्शत्वाच्च। जात्युत्प्रेक्षा। दिशां निस्यन्दमिव द्रवीभूय गलनमिव निर्मलत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। गगनतलस्य जलाकारं अवतारमिव निर्मलत्वादेव। क्रियोत्प्रेक्षा। द्रवतामापन्नं कैलासं पर्वतमिव शुभ्रत्वात्। द्रव्योत्प्रेक्षा। विलीनं द्रवीभूतं तुषारगिरिं हिमाचलमिव शीतलत्वात्; द्रव्योत्प्रेक्षा। रसतामुपेतं जलतां प्राप्तं चन्द्रस्य आतपं प्रभामिव निर्मलशीतलशुभ्रत्वात्।

জলবিন্দুবাহী এবং চন্দনরসের ন্যায় শীতলস্পর্শী সম্মুখ হইতে আগত জলতরঙ্গের বায়ু তাঁহাকে যেন আলিঙ্গন করিতে লাগিল এবং পদ্মের মধুপানে মত্ত কলহংসগণের সুমধুর কোলাহল তাঁহাকে যেন আহ্বান করিতে লাগিল—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সেই বৃক্ষসমূহমধ্যে প্রবেশ করিলেন।

(ব) চন্দ্রাপীড় প্রবেশ করিয়া সেই বৃক্ষসমূহের মধ্যস্থানে 'অচ্ছোদ' নামে একটি সরোবর দেখিতে পাইলেন। ত্রিলোকলক্ষ্মীর মণিময় দর্পণের ন্যায়, পৃথিবীদেবীর ভূতলান্তর্গত স্ফটিকময় গৃহের ন্যায়, পাতাল হইতে সমুদ্রগণের ভূতলে নির্গত হইবার পথের ন্যায়,

(१) कुसुद...। (२) शिशिरशीकरिणा। (३)...रससमस्पर्शेन। (४) विवेश।
(५) वसुधादेव्याः। (६) जलनिर्गमन...।
(७) अंशावतारमिव गगनतलस्य, अवतारमिव जलाकारं, अंशावतारं जलाकारं...।

वैदूर्य्यगिरिजालमिव सलिलाकारेण परिणतं शरदभ्रवृन्दमिव द्रवीभूयैकत्र निस्यन्दितम्, आदर्शभवनमिव (१) प्रचेतसः, (ब) स्वच्छतया मुनिमनोवृत्तिभिरिव सज्जनगुणैरिव हरिणलोचनप्रभाभिरिव मुक्ताफलांशुभिरिव निर्म्मितम्, (भ) आपूर्णं पर्य्यन्तमप्यन्तः-स्पष्टदृष्टसकलवृत्तान्ततया रिक्तमिवोपलक्ष्यमाणम्, (म) अनिलोद्धूत-जलतरङ्ग-शीकर-धूलि-जन्मभिः सर्वतः संस्थितैः (२)

जात्युत्प्रेक्षा। जलीभूतं हरस्य शिवस्य अट्टहासं विशालहास्यमिव शुभ्रत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। विशेषशुभ्रताद्योतनाय हरपदम्। सरोरूपेणावस्थितं त्रिभुवनस्य पुण्यराशिमिव पवित्रत्वात्। जात्युत्प्रेक्षा। सलिलाकारेण परिणतं, विदूरे भवानीति वैदूर्य्याणि रत्नानि तेषां गिरिजालं पर्व्वतसमूहमिव निर्म्मलत्वात्। जात्युत्प्रेक्षा। नूतनमेघशब्दाद्विदूरभूमौ कानिचित् रत्नान्युत्पद्यन्ते तानि वैदूर्य्याण्युच्यन्ते। यथा कुमारसम्भवे कालिदासोऽपि—"विदूरभूमिर्नवमेघशब्दादुद्भिन्नया रत्नशलाकयेव।" "वैदूर्य्यं बालवायज"मिति विश्वः। तथा द्रवीभूय एकत्र निस्यन्दितं शरदभ्रवृन्दं शरत्कालीयमेघसमूहमिव विशदत्वात्। जात्युत्प्रेक्षा। शरत्काल एव मेघानां वैशद्यं स्यादित्यतः शरत्पदम्। प्रचेतसो वरुणस्य आदर्शभवनमिव दर्पणमयगृहमिव प्रतिबिम्बपतनात्। जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(भ) स्वच्छेति। स्वच्छतया हेतुना, मुनिमनोवृत्तिभिर्निर्म्मितमिव तासामपि स्वच्छत्वादिति भावः। एवं सर्व्वत्रान्वयः। अत्र चतसृणामिव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(म) आपूर्णेति। आपूर्णो जलैः सम्पूर्णः पर्य्यन्त उपरिशेषसीमा यस्य तत्तादृशं सदपि, अन्तरभ्यन्तरे स्पष्टं यथा स्यात्तथा दृष्टाः सकलवृत्तान्ताः प्रतिबिम्बभाविन तरुलतास्पन्दनादिव्यापाराः, अथवा मीनस्फटिकबालुकादिपदार्था यस्मिन् तत्तथोक्तं तस्य भावस्तया हेतुना, रिक्तं जलरहितमिव उपलक्ष्यमाणं दृश्यमानम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अनिलेति। अनिलोद्धूतानां वायूत्पादितानां जलतरङ्गाणां शीकरधूलिभ्यो बिन्दुकणेभ्यो जन्म येषां तैः, सर्व्वतः संस्थितैः समन्ताद्विद्यमानैः इन्द्रचापसहस्रैः इन्द्रधनुःसमूहैः रच्यमानमिव। अत्रापि

দিক্‌সমূহের জল হইয়া ক্ষরিত হওয়ার ন্যায়, আকাশের জলাকারে অবতারগ্রহণের ন্যায়, তরলতাপ্রাপ্ত কৈলাসপর্ব্বতের ন্যায়, দ্রবীভূত হিমালয়ের ন্যায়, জলতাপ্রাপ্ত চন্দ্ররশ্মির ন্যায়, শিবের জলীভূত অট্টহাস্যের ন্যায়, সরোবররূপে অবস্থিত ত্রিজগতের পুণ্যপুঞ্জের ন্যায়, জলাকারে পরিণত বৈদূর্য্যমণির পর্ব্বতসমূহের ন্যায়, দ্রবীভূত হইয়া একস্থানে পতিত শরৎকালীয় মেঘসমূহের ন্যায় এবং বরুণের দর্পণময় গৃহের ন্যায় সেই অচ্ছোদসরোবরকে দেখা যাইতেছিল। (ভ) নিতান্তনির্ম্মল বলিয়া সেই সরোবরটি যেন, মুনিগণের মনোবৃত্তি, সজ্জনের গুণগ্রাম, হরিণগণের নয়নকান্তি, কিংবা মুক্তার কিরণসমূহদ্বারা নির্ম্মিত হইয়াছিল। (ম) সরোবরটি জলে পরিপূর্ণ থাকিলেও ভিতরের সকল বস্তু স্পষ্ট দেখিতে পাওয়ায় জলশূন্য বলিয়া বোধ হইতেছিল। (য) বায়ুকর্ত্তৃক উত্থাপিত তরঙ্গের জলবিন্দুসমূহে

---

(१) आदर्शमिव, आदर्शभुवनमिव। (२) समुपस्थितैः समुत्थितैः।

रच्यमानमिवेन्द्रचापसहस्रैः, (य) प्रतिमानिभेनान्तःप्रविष्टं (१) सकानन-(२) शैलनक्षत्रग्रहचक्रवालं त्रिभुवनमुद्भिन्नपङ्कजेनोदरेण नारायणमिव बिभ्राणम्, (र) आसन्नकैलासावतीर्णस्य च शतशो भगवतः खण्डपरशोर्मज्जनोन्मज्जन-क्षोभ-चलित-चूडामणि-चन्द्रखण्डच्युतेनामृतरसेन जल-क्षालित-वामार्द्ध-कपोल-गलित-लावण्य-प्रवाहानुकारिणा सम्मिश्रितजलम्, (३) (ल) उपकूल-तमाल-वन-

---

क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। उद्गतेषु जलबिन्दुषु रविकिरणपातेन तेषामिन्द्रचापवन्नानावर्णतया दृश्यमानत्वादियमुत्प्रेक्षेति बोध्यम्।

(र) प्रतिमेति। नारायणमिव, उद्भिन्नानि विकसितानि पङ्कजानि यस्मिन् तेन तादृशेन उदरेण अभ्यन्तरभागेन, नारायणपक्षे तु उद्भि सुतपन्नं पङ्कजं ब्रह्मकमलं यस्मात्तेन, तादृशेन उदरेण कुक्षिणा करणेन, प्रतिमानिभेन प्रतिबिम्बच्छलेन अन्तःप्रविष्टं अभ्यन्तरगतं, काननानां वनानां शैलानां पर्वतानां नक्षत्राणां ताराणां ग्रहाणां रव्यादीनाञ्च चक्रवालेन मण्डलेन सहेति सकाननशैलनक्षत्रग्रहचक्रवालं त्रिभुवनं बिभ्रतं बिभ्राणं धारयदिव, नारायणपक्षे तु धारयन्तम्। सोऽपीदृशं त्रिभुवनं धारयति। तथा च शिशुपालवधेऽपि—"युगान्तकालप्रतिसंहृतात्मनो जगन्ति यस्यां सविकासमासत।" अत्र श्रौतोपमा सापह्नवा प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ल) आसन्नेति। किञ्च, जलेन क्षालितस्य धौतस्य वामार्द्धस्य पार्वतीरूपदेहवामभागस्य कपोलाद्गण्डात् गलितं लावण्यप्रवाहं अनुकरोतीति तेन। अमृतरसेनेत्यस्य विशेषणमेतत्। आसन्नात् कैलासादवतीर्णस्य भगवतः खण्डपरशोः शिवस्य शतशोमज्जनोन्मज्जनाभ्यां यः क्षोभ उद्वेलनं तेन चलितात् चूडामणिस्तत्स्वरूपात् चन्द्रखण्डात् च्युतेन गलितेन अमृतरसेन सुधाद्रवेण, सम्मिश्रितानि जलानि यस्य तत्। अत्र तादृशामृतरसेन तज्जलानां मिश्रणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। रिपून् खण्डयति छिनत्तीति खण्डः, खण्डः परशुर्यस्य स खण्डपरशुः। तथा च महावीरचरिते—"येनानेन जगत्सु खण्डपरशुर्देवो हरः ख्याप्यते।"

সূর্য্যের কিরণ পতিত হওয়ায়, সকল দিকে বিদ্যমান ইন্দ্রধনুসমূহে যেন সেই সরোবরটিকে রক্ষা করিতেছিল। (র) সেই সরোবরের ভিতরে বহুতর পদ্ম ফুটিয়াছিল এবং বন, পর্ব্বত, নক্ষত্র ও গ্রহগণের সহিত সমস্ত ত্রিভুবন প্রতিবিম্বচ্ছলে তাহার ভিতরে প্রবেশ করিয়াছিল, সুতরাং নারায়ণ যেমন উৎপন্ন-পদ্ম-সমন্বিত উদরদ্বারা বন, পর্ব্বত, নক্ষত্র ও গ্রহগণের সহিত সমস্ত ত্রিভুবন ধারণ করেন, তেমন অচ্ছোদ সরোবরও যেন সেইরূপ ত্রিভুবন ধারণ করিতেছিল। (ল) ভগবান্ মহাদেব, নিকটবর্ত্তী কৈলাসপর্ব্বত হইতে নামিয়া সেই অচ্ছোদ সরোবরে বারংবার নিমজ্জন ও উন্মজ্জন করিতেন (ডুব দিতেন), তাহার বেগে বিচলিত মস্তকস্থিত চন্দ্রখণ্ড হইতে অমৃত নির্গত হইত; সেই অমৃত আবার জলপ্রক্ষালিত বামাঙ্গিনী গৌরীর গণ্ড-

---

(१)...प्रविष्टं...। (२)...सजलचरकानन..., सकलकानन...। (३) लावण्यानुकारिणा, मिश्रितजलं।

प्रतिविम्बान्धकारिताभ्यन्तरैर्दृश्यमान-रसातल-द्वारैरिव सलिलप्रदेशैर्गम्भीरतरम्, (१) (व) दिवाप्युपजातनिशाशङ्कैश्चक्रवाकमिथुनैः परिह्रियमाण-नीलोत्पल-वन-गहनम्, (श) असकृत्-पितामह-परिपूरित-कमण्डलु-परिपूतजलम्, (ष) अनेकशो वालखिल्य-कदम्बक-कृत-सन्ध्योपासनम्, (स) बहुशः-सलिलावतीर्ण-सावित्री-भग्न-देवतार्चन-कमलम्, (२) (ह) सहस्रशः सप्तर्षिमण्डलस्नान-

---

(व) उपेति। उपकूलं कूलसमीपस्थ तमालवनानां प्रतिविम्बैः अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि अभ्यन्तराणि येषां तैः, अतएव दृश्यमानं रसातलस्य द्वारं येषु तैरिव स्थितैः, सलिलप्रदेशैर्जलस्थलैः गम्भीरतरं अतीवगभीरम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, रसातलद्वारदर्शनोत्प्रेक्षयान् क्रियोत्प्रेक्षा चानयो-रङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) दिवापीति। दिवापि दिनेऽपि उपजातनिशाशङ्कै रजनीभ्रमवद्भिः, तमालवनप्रतिविम्बान्धकारिताभ्यन्तरत्वादिति भावः, चक्रवाकानां मिथुनैर्युगलैः परिह्रियमाणं परित्यज्यमानं नीलोत्पलवनमेव गहनं निविडप्रदेशो यत्र तत्। अत्र दिवसे रात्रिभ्रमादभ्रान्तिमान्, नीलोत्पलवनपरित्यागासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धो-क्तेरतिशयोक्तिः, तथा वनगहनशब्दयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः परञ्च गहनशब्दस्य निविडार्थे पर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासश्च त्वे तेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ष) असकृदिति। असकृदनेकवारं पितामहेन ब्रह्मणा परिपूरितो यः कमण्डलुस्तेन परिपूतानि जलानि यस्य तत्। तत् कमण्डलोस्तीर्थरूपत्वेन पवित्रस्पर्शत्वादिति भावः।

(स) अनेकश इति। वाल एकः कुन्तल एव खिलः प्रतिरोधको येषां ते वालखिल्याः अङ्गुष्ठपर्व-परिमितदेहाः षष्टिसहस्रऋषिविशेषाः, तेषां कदम्बकेन समूहेन कृता सन्ध्योपासना यत्र तत्। तथा च महाभारतम्—"अथापश्यदृषीन् ह्रस्वानङ्गुष्ठोदरवर्ष्मणः। पलाशवृतिकामेकां सहितान् वहतः पथि।"

(ह) बहुश इति। सलिले अवतीर्णया सावित्र्या ब्रह्मपत्न्या भग्नानि देवतार्चनस्य कमलानि यस्मिन् तत्।

(क्ष) सहेति। सहस्रशः सप्तर्षिमण्डलस्य स्नानेन अवगाहनेन पवित्रीकृतम्।

নিঃসৃত লাবণ্যপ্রবাহের অনুকরণ করিত, সেই অমৃত অচ্ছোদসরোবরের জলের সহিত মিশ্রিত ছিল। (ব) তীরের নিকটবর্তী তমালবনের প্রতিবিম্ব, গভীর জলের ভিতরে পড়িয়া তাহা অন্ধকার করিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, পাতালের দ্বার দেখা যাইতেছে। (শ) সেইরূপ অন্ধকার হওয়ায় দিনের বেলায়ও চক্রবাকদম্পতীগণের রাত্রির ভ্রম জন্মিয়াছিল, সুতরাং তাহারা নিবিড় নীলোৎপলবন পরিত্যাগ করিতেছিল। (ষ) ব্রহ্মা বারংবার কমণ্ডলু পরিপূর্ণ করিয়া তাহার জল পবিত্র করিয়াছিলেন। (স) বালখিল্য মুনিগণ অনেকবার সেই জলে সন্ধ্যা করিয়াছিলেন। (হ) সাবিত্রীদেবী জলে নামিয়া দেবতাপূজার জন্য বহুবার পদ্ম ভাঙ্গিয়া নিয়াছিলেন। (ক্ষ) সপ্তর্ষিগণ অনেক বার অবগাহন

---

(१) गभीरतरं। (२)...कमलसहस्रं।

पवित्रीकृतम्, (च) सर्वदा सिद्ध-वधू-धौत-कल्पलता-वल्कल-पुण्यीकृतोदकम्, (१) (क) उदकक्रीड़ा-दोहदागतानाञ्च गुह्यकेश्वरान्तःपुरकामिनीनां मकरकेतु-चाप-चक्राकृतिभिरतिविकटैरावर्त्तिभिर्नाभिमण्डलैरापीतसलिलम्, (ख) क्वचिद्वरुण-हंसोपात्तकमलवनमकरन्दम्, (२) (ग) क्वचिद्दिग्गज-मज्जन-जर्जरित-जरन्मृणालदण्डम्, (३) (घ) क्वचित्त्र्यम्बक-वृषभ-विषाण-कोटि-(४) खण्डित-तट-शिलाखण्डम्, (ङ) क्वचिद् यम-महिष-शृङ्ग-शिखर-विक्षिप्त-फेन-पिण्डम्, (च)

(क) सर्वदेति। सिद्धानां देवयोनिविशेषाणां वधूभिः धौतैः कल्पलतावल्कलैः पुण्यीकृतानि पवित्रीकृतानि उदकानि जलानि यस्य तत्।

(ख) उदकेति। किञ्च उदकक्रीड़ादोहदेन जलकेलीच्छया आगतानां गुह्यकेश्वरस्य कुवेरस्य अन्तःपुरकामिनीनां मकरकेतोर्मदनस्य चापचक्रस्य मण्डलीकृतधनुषः आकृतिरिव आकृतिर्येषां तैः, अतिविकटैर्नितान्तगभीरैः आवर्त्तो वर्त्तुलाकार एषामस्तीति तैः, नाभिमण्डलैः आपीतानि अभ्यन्तरगतीकृतानि सलिलानि यस्य तत्। अत्र आर्थोपमालङ्कारः। मकरकेतुपदेन नाभीनां कामोद्दीपकत्वसूचनान्नाविशेषे विशेषाख्यदोषः।

(ग) क्वचिदिति। वरुणस्य हंसैस्तद्वाहनैर्हंसैः उपात्ता गृहीताः कमलवनस्य मकरन्दा मधूनि यस्मिन् तत्।

(घ) क्वचिदिति। दिग्गजानां मज्जनेन अवगाहनेन जर्जरिताश्छिन्नभिन्नाः जरन्तः परिपाकात् स्वयं जीर्णाः मृणालदण्डा यस्मिन् तत्।

(ङ) क्वचिदिति। त्र्यम्बकवृषभस्य शिववृषस्य विषाणकोटिभ्यां शृङ्गाग्राभ्यां खण्डिता भग्नास्तटशिलाखण्डा यस्य तत्।

(च) क्वचिदिति। यममहिषस्य शृङ्गयोः शिखराभ्याम् अग्रदेशाभ्यां विक्षिप्ता अवगाहनकाले विकीर्णाः फेनपिण्डा यस्मिन् तत्।

করিয়া তাহার জল পবিত্র করিয়াছিলেন। (ক) সিদ্ধগণের স্ত্রীগণও সর্ব্বদা কল্পলতার বল্কল প্রক্ষালন করিয়া সেই জল পবিত্র করিয়াছিলেন। (খ) কুবেরের অন্তঃপুরবাসিনী রমণীগণ জলকেলি করিবার অভিলাষে সেই সরোবরে আসিতেন, অতিগভীর এবং কামদেবের মণ্ডলীকৃত ধনুর ন্যায় বর্ত্তুলাকার তাঁহাদের নাভিমণ্ডলে সেই সরোবরের জল প্রবেশ করিত। (গ) সেই সরোবরের কোন্ স্থানে বরুণের হংসগণ পদ্মবনের মধুপান করিত। (ঘ) কোন স্থানে দিগ্‌হস্তিগণ অবগাহন করিবার সময়ে পুরাতন মৃণালগুলিকে ছিন্ন-ভিন্ন করিত। (ঙ) কোন স্থানে শিবের বৃষ, শৃঙ্গের অগ্রদ্বারা তীরের প্রস্তরখণ্ডগুলি ভাঙ্গিয়া ফেলিত। (চ) কোন স্থানে যমের মহিষ অবগাহন করিবার সময়ে শৃঙ্গের অগ্রদ্বারা

---

(१) पुण्योदकम्। (२) ...हंसाक्रान्तविकचकमलवनषण्ड', हंसाक्रान्तकमलमकरन्द'।

(३) ...मृणालजालदण्ड'। (४) ...धवलवृषभविषाणकोटि...।

क्वचिदैरावत-दशन-मुषल-(१) खण्डित-कुमुद-षण्डम्, (छ) यौवनमिवोत्-कलिकाबहुलम्, (ज) उत्कण्ठितमिव मृणालवलयालङ्कृतम्, (झ) महा-पुरुषमिव प्रकट-मीन-मकर-कूर्म्म-चक्र-लक्षणम्, (२) (ञ) षण्मुखचरितमिव श्रूयमाणक्रौञ्चवनिताप्रलापम्, (ट) भारतमिव पाण्डु-धार्त्तराष्ट्रकुल-पक्ष-क्षत-

---

(छ) क्वचिदिति। ऐरावतेन हस्तिना, दशनौ दन्तौ मुषलाविव दशनाविव मुषलाविति वा ताभ्यां खण्डितं विच्छिन्नं कुमुदषण्डं यस्मिन् तत्। अत्रोपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः। एभिर्विशेषणैरच्छोदसरोवरस्य देवानां विहारस्थानत्वं सूचितम्।

(ज) यौवनमिति। यौवनं कालमिव, उत्कलिका उत्पन्नकोरका अनुरागोत्कण्ठाश्च यस्मिन् तत्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। "चिन्ता तु स्मृतिराध्यानं स्मरणं, सस्पृहे पुनः। उत्कण्ठोत्कलिके तस्मिन् भिक्षा तुभयोरपि।" इति शब्दार्णवः।

(झ) उदिति। उत्कण्ठितं प्रियजनविरहेणोन्मनस्कं जनमिव, मृणालवलयेन अलङ्कृतम्, एकत्र मदनतापादन्यत्र स्वभावादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ञ) मह इति। महापुरुषं भाग्यवन्तं राजादिमिव, प्रकटाः स्पष्टं दृश्यमानाः, मीना मत्स्याः मकरा जलजन्तुविशेषाः, कूर्म्माः कच्छपाः, चक्राश्चक्रवाकाः, लक्षणाः सारसाश्च यस्मिन् तत्। पक्षान्तरे तु प्रकटानि स्पष्टानि मीनमकरकूर्म्मचक्रस्वरूपाणि लक्षणानि करचरणयो रेखात्मकचिह्नानि यस्य तम्। पूर्णोपमा। "लक्षणं नाम्नि चिह्ने च सारस्यां लक्षणा क्वचित्।" इति मेदिनी।

(ट) षण्मुखेति। षण्मुखचरितं कार्त्तिकेयचरित्रमिव, श्रूयमाणः क्रौञ्चवनितानां वकपक्षिणीनां प्रलापः कलरवो यस्मिन् तत्, अन्यत्र तु श्रूयमाणः क्रौञ्चवनितानां क्रौञ्चनामकदैत्यभार्य्याणां प्रलापो विलापो यस्मिन् तत्। पूर्णोपमा। मयासुरपुत्रः क्रौञ्चासुरः कार्त्तिकेयेन निहत इति हरिवंशवार्त्ता।

(ठ) भारतमिति। भारतं महाभारतमितिहासमिव, पाण्डूनां पाण्डुवर्णानां धार्त्तराष्ट्राणां कृष्णवर्णचञ्चुचरणविशिष्टानां हंसानां यत् कुलं समूहस्तस्य पक्षैः पतत्रैः क्षतः क्षोभः सञ्चालनं यस्य तत्। अन्यत्र तु पाण्डुकुलं पाण्डुराजवंशो युधिष्ठिरादिः तथा धृतराष्ट्रस्येदमिति धार्त्तराष्ट्रं कुलं दुर्य्योधनादि तयोः पक्षाभ्यां

ফেনস্তূপগুলি ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত করিত। (ছ) কোন স্থানে ঐরাবত হস্তী দন্তমুষলদ্বারা কুমুদগুলি ছিঁড়িয়া ফেলিত। (জ) যৌবনকাল যেমন উৎকণ্ঠাতে পরিপূর্ণ থাকে, সেই সরোবরও তেমন উৎপন্ন কলিকাতে পরিপূর্ণ ছিল। (ঝ) প্রিয়বিরহে উৎকণ্ঠিত ব্যক্তির ন্যায় সেই সরোবরও মৃণালমণ্ডলে অলঙ্কৃত ছিল। (ঞ) মহাপুরুষের হস্তে ও পদে যেমন মৎস্য, মকর, কূর্ম্ম ও চক্রের চিহ্ন স্পষ্ট দেখা যায়, সেই সরোবরেও তেমন মৎস্য মকর, কূর্ম্ম, চক্রবাক ও সারসপক্ষিণী স্পষ্ট দেখা যাইত। (ট) কার্ত্তিকের চরিত্রে যেমন ক্রৌঞ্চ দৈত্যের ভার্য্যাগণের বিলাপের কথা শুনা যায়, সেই অচ্ছোদসরোবরেও তেমন বকপক্ষিণীগণের কলরব শুনা যাইতেছিল। (ঠ) মহাভারতে যেমন পাণ্ডুবংশ ও ধৃতরাষ্ট্রবংশ এই উভয়পক্ষকৃত

---

(१)...मुषल—। (२) मीन...प्रकटलक्षणं।

क्षोभम्, (ठ) अमृतमथनसमयमिव तीरावस्थित-(१) शिति-कण्ठ-पीयमान विषम्, (ड) कृष्णबाल-(२) चरितमिव तट-कदम्ब-शाखाधिरूढ़-(३) हरि-कृत-जल-प्रपात-क्रीड़म्, (ढ) मदनध्वजमिव मकराधिष्ठितम्, (ण) दिव्य-मिवानिमिषलोचनरमणीयम्, (त) अरण्यमिव विजृम्भमाणपुण्डरीकम्, (थ)

सहायभूताभ्यां योद्धृवर्गाभ्यां कृतः क्षोभः समरो यस्मिन् तत्। पूर्णोपमा। "धार्त्तराष्ट्राः सितेतरै"-रित्यमरः।

(ड) अमृतेति। अमृतमथनसमयमिव समुद्रमन्थनकालमिवेत्यर्थः, तीरावस्थितैः शितिकण्ठैर्मयूरैः पीयमानानि विषाणि जलानि यस्य तत्। अन्यत्र तु तीरावस्थितेन शितिकण्ठेन महादेवेन पीयमानं विषं समुद्रोत्थितं कालकूटं यस्मिन् तम्। पूर्णोपमा। "विषन्तु गरले तोये" इति मेदिनी। समुद्रमथनोत्थितं कालकूटं शिवः पपाविति महाभारतवार्त्ता।

(ढ) कृष्णेति। कृष्णस्य वासुदेवस्य बालचरितं शैशवक्रीड़ितमिव, तटे तीरे ये कदम्बा वृक्षास्तेषां शाखासु अधिरूढ़ैः हरिभिर्वानरैः हरिणा तेनैव वासुदेवेन च कृता जले प्रपात एव क्रीड़ा यस्मिन् तत्। पूर्णोपमा।

(ण) मदनेति। मदनध्वजं कन्दर्पस्य केतुमिव, मकरैस्तदाख्यैर्जलजन्तुविशेषैः मकरेण मकराकार-पुत्तलिकया च अधिष्ठितम्। पूर्णोपमा।

(त) दिव्येति। दिवि भवं दिव्यं स्वर्गीयं कञ्चिद्देवमिव, न विद्यते निमिषो निमेषो ययोस्तादृशी लोचने येषां तैर्मत्स्यैः रमणीयं, अन्यत्र तु अनिमिषे ये लोचने ताभ्यां रमणीयम्। देवमत्स्ययोरुभयोरेव निमेषाभावात्। पूर्णोपमा।

(थ) अरण्येति। अरण्यं महावनमिव, विजृम्भमाणानि विकासं भजमानानि पुण्डरीकाणि श्वेत-पद्मानि यस्मिन् तत्, अन्यत्र तु विजृम्भमाणा निद्राभङ्गानन्तरं स्वाङ्गान्यायच्छमानाः पुण्डरीका व्याघ्रा यस्मिन्

বৃক্ষের বৃত্তান্ত আছে, সেই সরোবরেও তেমন হংসগণের পক্ষের বায়ুতে জলের উদ্বেলন ছিল। (ড) সমুদ্রমন্থনের সময়ে যেমন মহাদেব তীরে থাকিয়া কালকূট বিষ পান করিয়াছিলেন, সেই সরোবরেও তেমন ময়ূরগণ তীরে থাকিয়া জল পান করিতেছিল। (ঢ) কৃষ্ণের শৈশব-চরিত্রে যেমন তিনি যমুনা-তীরস্থিত কদম্ব বৃক্ষের শাখাতে আরোহণ করিয়া তথা হইতে পুনরায় জলে পড়িয়া খেলা করিতেন, সেই সরোবরেও তেমন তীরস্থিত কদম্ববৃক্ষের শাখাতে আরোহণ করিয়া, পুনরায় তথা হইতে জলে পড়িয়া বানরগণ খেলা করিত। (ণ) কামদেবের ধ্বজে যেমন মকরাকৃতি পুত্তলিকা আছে, সেই সরোবরেও তেমন মকরনামে জলজন্তু ছিল। (ত) স্বর্গীয় দেবতা যেমন নিমেষহীন নয়নদ্বারা শোভা পান, সেই সরোবরও তেমন মৎস্যদ্বারা শোভা পাইত। (থ) মহাবনে যেমন ব্যাঘ্র নিদ্রাভঙ্গের পর হাই তোলে, সেই সরোবরেও

---

(१) तीरकान्तारावस्थित...। (२) बालकृष्ण...। (३)...आरूढ़...।

उरगकुलमिवानन्त-शतपत्र-पद्मोद्भासितम्, (द) कंसबलमिव मधुकरकुलोपगीयमान-(१) कुवलयापीड़म्, (ध) कद्रु-(२) स्तनयुगलमिव नागसहस्रपीत-पयोगण्डूषम्, (न) मलयमिव चन्दन-शिशिरवनम्, (प) असत्साधन-

तत्। पूर्णोपमा। "सिताम्भोजव्याघ्रयोः पुण्डरीकं पुंसि तु दिग्गजे। व्याघ्रे च कोशकारे च।" इति त्रिकाण्डशेषः।

(द) उरगेति। उरगकुलं सर्पवंशमिव, अनन्तैरसंख्यैः शतपत्रपद्मैः शतदलकमलैः उद्भासितं शोभितं अन्यत्र तु अनन्तेन वासुकिना, शतपत्रेण पद्मेन च नागविशेषेण उद्भासितम्। अत्र शतपत्रपद्मशब्दयोः पर्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतिः परन्तु शतदलान्वितपद्मार्थे पर्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः पूर्णोपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ध) कंसेति। कंसस्य उग्रसेनपुत्रस्य बलं सैन्यमिव, मधुकरकुलेन भ्रमरसमूहेन उपगीयमानानि स्वगानविषयीक्रियमाणानि कुवलयानि नीलोत्पलान्येव आपीडः शेखरो यस्य तत्, अन्यत्र तु मधुकरकुलेन भ्रमरगणेन उपगीयमानो मदजलसौरभलोभेनोपेत्य स्वगानश्रवणविषयीक्रियमाणः कुवलयापीड़स्तदाख्यो हस्तीन्द्रो यत्र तत्, अथवा मधौ मधुवने करो राजग्राह्यांशो येषां ते मधुकराः कंसादयस्तेषां कुलेन समूहेन उपगीयमानः प्रशस्यमानः कुवलयापीड़नामा हस्ती यत्र तत्। पूर्णोपमा।

(न) कद्रिति। कद्रोर्नागमातुः कश्यपभार्य्याविशेषस्य स्तनयुगलमिव, नागानां हस्तिनां सर्पाणाञ्च सहस्रेण समूहेन पीतः पयसां जलानां दुग्धानाञ्च गण्डूषो यस्मात् तत्। पूर्णोपमा।

(प) मलयमिति। मलयं पर्वतमिव, चन्दनवत् शिशिराणि शीतलानि वनानि जलानि यत्र तत्, अन्यत्र तु चन्दनानां तरूणां शिशिरवनं शीतलकाननं यत्र तम्। पूर्णोपमा। "वनं काननमम्बु च" इत्यनेकार्थध्वनिमञ्जरी।

(फ) असदिति। असत् साधनमिव हेत्वाभासदुष्टं हेतुमिव गोत्ववान् अश्वत्वादित्यादिसाध्याभाववत्-पक्षवृत्तिहेतुमिवेत्यर्थः, न दृष्टः केनाप्यवलोकितः अन्तः अवसानं यस्य तत् अतिवृहदित्यर्थः, अन्यत्र तु न विद्यते दृष्टान्तो निश्चितसाध्यवान् दृष्टान्ताख्यो न्यायावयवविशेषो यस्मिन् तत्, अतएवासत्साधनत्वमिति भावः।

তেমন শ্বেতপদ্ম বিকাস পাইতেছিল। (দ) সর্পবংশ যেমন অনন্ত, শতপত্র ও পদ্মনামক সর্প-দ্বারা শোভিত, সেই সরোবরও তেমন অসংখ্য শতদল পদ্মদ্বারা শোভিত ছিল। (ধ) কংসের সৈন্যগণমধ্যে যেমন ভ্রমরগণ-গুঞ্জন-শ্রবণ-পরায়ণ কুবলয়াপীড়নামে একটা হস্তী ছিল, সেই অচ্ছোদ সরোবরেও তেমন নীলোৎপলরূপ তাহার শিরোভূষণ ছিল এবং তাহার নিকটে ভ্রমরগণ গান করিতেছিল। (ন) কশ্যপপত্নী কদ্রুর স্তনযুগল হইতে যেমন সর্পগণ দুগ্ধ পান করিত, সেই সরোবর হইতেও তেমন হস্তিগণ জল পান করিত। (প) মলয়পর্ব্বতে যেমন শীতল চন্দনবন আছে, সেই সরোবরেও তেমন চন্দনের ন্যায় শীতল জল ছিল। (ফ) অসৎ হেতুর

(১)...উপনীয়মান...। (২) কদ্রূ...।

मिवादृष्टान्तम्, (फ) अतिमनोहरमाह्लादनं दृष्टेः, अच्छोदं नाम सरो दृष्टवान्। (ब)

आलोक-(१) मात्रेणैवापगतश्रमो दृष्ट्वा मनस्येवमकरोत् (२) अहो! निष्फलमपि मे तुरग-(३) मुखमिथुनानुसरणं एतदालोकयतः सरः सफलतामुपगतम्। अद्य परिसमाप्तमीक्षणयुगलस्य द्रष्टव्यदर्शनफलम्, आलोकितः खलु रमणीयानामन्तः, दृष्ट आह्लादनीयानामवधिः, वीक्षिता मनोहराणां सीमान्तलेखा, प्रत्यक्षीकृता प्रीतिजननानां परिसमाप्तिः, विलोकिता (४) दर्शनीयानामवसानभूमिः (भ)। इदमुत्पाद्य सरःसलिलं अमृतरसमुत्पादयता वेधसा पुनरुक्ततामिव नीता स्वसृष्टिः (म)। इदमपि खल्वमृतमिव सर्वेन्द्रियाह्लादनसमर्थ-

अत्र तत्सरोवरस्यान्तदर्शनसम्बन्धेऽपि तदसम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः पूर्णोपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः "लौकिकपरीक्षकाणां यस्मिन्नर्थे बुद्धिसाम्यं स दृष्टान्तः" इति गौतमसूत्रीयवात्स्यायनभाष्यम्।

(ब) अतीति। दृष्टेर्नयनस्य आह्लादनम्। अच्छानि निर्मलानि उदकानि यस्य तदच्छोदम्।

(भ) आलोकेति। आलोकमात्रेणैव दर्शनमात्रेणैव अपगतश्रमः, मनःप्रसादादिति भावः। दृष्ट्वा पुनर्विशेषेणावलोक्य। तुरगमुखमिथुनानुसरणं किन्नरद्वयानुगमनं। ईक्षणयुगलस्य नयनद्वयस्य। आह्लादयन्तीत्याह्लादनीयास्तेषां "कृत्यल्युटोऽन्यत्रापी"ति कर्त्तर्यनीयः, अवधिः शेषसीमा। अत्र चन्द्रापीडस्यानन्दमग्नतया विक्षेपेन च एकार्थस्यापि पुनः पुनरुक्तिर्न दोषाय विवादादौ कथितपदतावत्।

(म) इदमिति। इदं सरःसलिलं उत्पाद्य पुनरमृतरसं सुधाद्रवं उत्पादयता, वेधसा ब्रह्मणा, स्वसृष्टिः पुनरुक्ततां नीता प्रापितेव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। एतेनास्यामृततुल्यत्वं व्यज्यते।

(य) ननु कथं पुनरुक्ततां नीतेत्याह इदमपीति। इदमपि सरःसलिलं कर्त्तृ। शिशिरतया शीतल-

যেমন দৃষ্টান্ত নাই, সেই সরোবরেরও তেমন শেষ সীমা দৃষ্টিগোচর হইত না। (ব) এবং সেই আচ্ছোদসরোবর অত্যন্ত সুন্দর ও নয়নের আহ্লাদজনক ছিল।

(ভ) সেই সরোবর দর্শনমাত্রেই চন্দ্রাপীড়ের পরিশ্রম দূরীভূত হইল, তখন তিনি বিশেষভাবে দেখিয়া এইরূপ মনে করিতে লাগিলেন—'প্রথমে, কিন্নর দুইটার অনুসরণ করা আমার নিষ্ফল হইয়াছিল, এখন এই সরোবর দেখিয়া সফলতা লাভ করিয়াছে। আজ আমার নয়নযুগলের দেখিবার জিনিষ দেখার ফল সমাপ্ত হইয়াছে; আজ আমি সুন্দর পদার্থের চূড়ান্ত দেখিলাম, আহ্লাদজনক বস্তুর শেষ দর্শন করিলাম, মনোহর পদার্থের শেষ সীমার রেখা দৃষ্টিগোচর করিলাম, আনন্দজনক পদার্থের পরিসমাপ্তি আজ প্রত্যক্ষ হইল এবং দেখিবার জিনিষের শেষ আজ দেখিলাম। (ম) বিধাতা এই সরোবরের জল সৃষ্টি করিয়া আবার অমৃত সৃষ্টি করায় আপনার সৃষ্টিকে যেন পুনরুক্তিদোষগ্রস্ত করিয়াছেন। (য) কারণ, এই সরোবরের জলও অমৃতের ন্যায় সকল ইন্দ্রিয়ের আহ্লাদ জন্মাইতে সমর্থ, অতএব নির্ম্মল বলিয়া

(१) आलोकन...। (२) मनस्यकरोत्। (३) तुरङ्ग...। (४) अवलोकिता।

मतिविमलतया चक्षुषः प्रीतिमुपजनयति, शिशिरतया स्पर्शसुखमुपहरति, (१) कमलसुगन्धितया घ्राणमाप्याययति, हंससुखरतया श्रुतिमानन्दयति, स्वादुतया रसनामाह्लादयति (य)। नियतञ्चास्यैव दर्शनतृष्णया न परित्यजति भगवान् कैलासनिवासव्यसनमुमापतिः (र)। न खलु साम्प्रतमाचरति जलशयनदोहदं देवः (२) रथाङ्गपाणिः, यदिदममृतरस-सुरभि-सलिलमपहाय लवण-रस-परुष-पयस्युदन्वति स्वपिति (ल)। नूनञ्चेदं न प्रथममासीत् सरः, येन प्रलय-वराह-

---

तया। उपहरति जनयति। कमलस्येव शोभनो गन्धोऽस्यास्तीति कमलसुगन्धि, मत्वर्थीय इन्प्रत्ययः तस्य भावस्तया हेतुना। न च "न कर्मधारयान्मत्वर्थीयो बहुव्रीहिश्चेदर्थप्रतिपत्तिकरः" इति निषेधात् कथमत्र मत्वर्थीय इन्प्रत्यय इति वाच्यम्, अत्र प्रशंसायामिन्प्रत्ययात् तदर्थस्य तु बहुव्रीहिणा वक्तुमशक्यत्वात्, अतएव च बहुव्रीहिश्चेदर्थप्रतिपत्तिकर इत्यभिधानात्। एतत्तु मालतीमाधवटीकायां भावमनोहरायामस्माभिर्विशेषेण विवेचितम्। घ्राणमाप्याययति नासिकां प्रीणयति। हंससुखरतया हंसशब्दैः शब्दायमानतया, श्रुतिं कर्णं। रसनां जिह्वां। अतएव सर्वथैवामृतोपमतया पुनरमृतसृष्टिः पुनरुक्ततामिव नीतेति भावः।

(र) नियतमिति। उमापतिः शिवः, कैलासनिवासे व्यसनमासक्तिं न परित्यजतीति नियतं निश्चितम्, अन्यथान्यत्र तिष्ठेदिति भावः। अत्र ध्रुवशब्दसमानार्थकनियतशब्दोपादानात् वाच्या अभावाभिमानिनी क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ल) नेति। देवो रथाङ्गपाणिश्चक्रपाणिर्नारायणः, जलशयनस्य दोहदमभिलाषं न खलु साम्प्रतं युक्तं आचरति। "युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थाने" इत्यमरः। यद् यस्मात्, अमृतस्येव रसो यस्य तदमृतरसं सुरभि च सलिलं यस्य तदिदं सरः, अपहाय त्यक्त्वा लवणरसेन परुषाणि रूक्षाणि पयांसि जलानि यस्य तस्मिन् उदन्वति समुद्रे स्वपिति। यदि जलशयनाभिलाषं युक्तिसङ्गतमेवाचरिष्यत् तदा लवणजलं जलधिमपहाय अस्मिन्नेवामृतोपमजले ध्रुवमस्वप्स्यदिति भावः।

(व) नूनमिति। प्रलये कल्पान्तकाले वराहस्य यज्ञवराहस्य घोणाया नासिकायाः अभिघातात् भीता। दन्ताग्रोत्थापनकाले नासिकाघातः सम्भवत्येवेति द्रष्टव्यम्। भूतधात्री पृथिवी, कलसयोनिना अगस्त्येन

নয়নের আনন্দ জন্মাইতেছে, শীতল বলিয়া স্পর্শসুখ জন্মাইয়া থাকে, পদ্মের ন্যায় সুগন্ধি বলিয়া নাসিকার তৃপ্তি করিতেছে, হংসগণের শব্দে শব্দায়মান বলিয়া কর্ণের আনন্দ জন্মাইতেছে এবং সুস্বাদু বলিয়া রসনারও তৃপ্তি করিয়া থাকে। (র) ভগবান্ মহাদেব এই সরোবর-দর্শনের অভিলাষেই নিশ্চয়ই কৈলাসপর্ব্বতে বাস করিবার আসক্তি ত্যাগ করিতেছেন না। (ল) ভগবান্ নারায়ণও যুক্তিসঙ্গতভাবে জল-শয়নের অভিলাষ করিতেছেন না; যেহেতু—অমৃতের ন্যায় সুস্বাদু ও সুগন্ধি জলে পরিপূর্ণ এই সরোবর ত্যাগ করিয়া তিনি লবণরসে কটুজল-সমন্বিত সমুদ্রে শয়ন করিতেছেন। (ব) এবং নিশ্চয়ই এই সরোবর পূর্ব্বে ছিল না; যেহেতু—পৃথিবী, প্রলয়কালে যজ্ঞবরাহের নাসিকার আঘাতে ভীত হইয়া সমুদ্রমধ্যে

---

(१) उपाहरति। (२)—दोहदमितः।

घोणाभिघात-भीता (१) भूतधात्री कलसयोनि-पान-परिकलित-सकल-सलिलं सागरमवतीर्णा, अन्यथा यद्यत्रागाधपाताल-(२) गम्भीराम्भसि निमग्ना भवेन्महा-सरसि, किमेकेन, महावराह-सहस्रैरपि नासादिता भवेत् (व)। नूनमस्मादेव सलिललेशमादायादाय (३) महाप्रलयेषु प्रलयपयोदाः प्रलयदुर्दिनान्धकारित-दशदिशः प्लावयन्ति भुवनान्तराणि (श)। मन्ये च यत् (४) सृष्टेरर्वाक् सलिलमयं ब्रह्माण्डरूपमादौ भुवनमभूत्, तदिदं पिण्डीभूय (५) सरोव्यपदेशेनावस्थितम्।' (ष)

पानाय परिकलितं सम्भावितं सकलं सलिलं यस्य तं; एतेनास्य क्षुद्रत्वं सूचितं, सागरमवतीर्णा पलायनाय समुद्रं प्रविष्टा। अन्यथा यदीदं सरः प्रथममासीदित्यर्थः, यदि च अगाधपातालवत् गम्भीरमतलस्पर्शं अम्भो जलं यत्र तादृशे अत्र महासरसि निमग्ना भवेत् सा भूतधात्रीति शेषः, तदा एकेन तेन वराहेण किं, महा-वराहसहस्रैरपि आसादिता प्राप्ता न भवेत्। सुतरां नूनमिदं सरः प्रथमं नासीदिति भावः। अत्र नून-मित्यादिवाक्ये अभावाभिमानिनी वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तावता वाक्येन च व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः।

(श) नूनमिति। सलिललेशं जलबिन्दुं। प्रलयस्य पयोदा मेघाः, प्रलये यद् दुर्दिनं गाढान्धकारस्तेन अन्धकारिताः सञ्जातान्धकाराः दश दिशो यैस्ते तादृशाः सन्तः। भुवनान्तराणि जगन्मध्यदेशान्। अत्र भावा-भिमानिनी वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा प्रलयशब्दस्य पुनः पुनः पाठादनवीकृतत्वदोषः, स तु परवर्त्ति-प्रलयशब्दयोः परित्यागेन परिहरणीयः।

(ष) मन्ये इति। किञ्च, सृष्टेरर्वाक् प्राण्यादिसृष्टेः पूर्वम्। अभूदासीत्। तत् सलिलं पिण्डीभूय एकत्र समवेतीभूय सरोव्यपदेशेन सरोवरच्छलेन इदमवस्थितमित्यहं मन्ये। अत्रापि भावाभिमानिनी वाच्या सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा सृष्टेरर्वागित्यभिधाय पुनरादावित्यभिधानादधिकपदतादोषः, सोऽपि आदावित्यस्य परित्यागेन समाधेयः। सृष्टेः प्राक् भुवनस्य सलिलमयत्वे प्रमाणं यथा मनुः—"अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्।"

প্রবেশ করিয়াছিলেন, এদিকে কিন্তু মহর্ষি অগস্ত্য সে সমুদ্রের সমস্ত জলই পান করিবার জন্য মনে মনে স্থির করিয়া রাখিয়াছিলেন; যদি এই সরোবর পূর্ব্বেও থাকিত এবং অগাধ পাতালের ন্যায় গভীর জলে পরিপূর্ণ এই মহা সরোবরে পৃথিবী নিমগ্ন হইয়া থাকিতেন, তবে এক যজ্ঞবরাহ কেন, মহাবরাহসহস্রও তাঁহাকে ধরিতে পারিত না। (শ) এবং নিশ্চয়ই প্রলয়কালে মেঘসমূহ এই সরোবর হইতেই জলবিন্দু সকল গ্রহণ করিয়া করিয়া, প্রলয়কালের সেই গাঢ় অন্ধকারে দশদিক্ অন্ধকার করিয়া জগতের মধ্যস্থান সকল প্লাবিত করিয়া থাকে। (ষ) আর আমি মনে করি—সৃষ্টির পূর্ব্বে যে এই জগৎসংসার জলময় ব্রহ্মাণ্ডস্বরূপ ছিল, সেই জলরাশিই একত্র সমবেত হইয়া সরোবরচ্ছলে এই অবস্থান করিতেছে।'

---

(१)...अभिभूता। (२) अगाधानिकपाताल...। (३) क्वचित् विवक्षिर्नास्ति। (४) यत्तत्। (५) पिण्डीभूतं।

इति विचारयन्नेव तस्य शिला-शकल-कर्कश-वालुकाप्रायं विद्याधरोद्धृत-सनाल-कुमुद-कलापार्च्चितानेक (१) चारु-सैकत-लिङ्गम्, अरुन्धती-दत्त-दिनकरार्घ्य-(२) पयः पर्य्यस्त-रक्त-(३) कमल-शोभितम्, उपकूल-शिलातलोपविष्ट-जलमानुष-निषेव्यमाणातपम्, अभ्यर्णतया च कैलासस्य स्नानागतमातृमण्डल-पद-पङ्क्ति-मुद्राङ्कितम्, (४) अवकीर्ण-(५) भस्म-सूचित-मग्नोत्थित-गण-वृन्दोद्धूलनम्, (६) अवगाहावतीर्ण-(७) गणपति-गण्डस्थल-गलित-मद-(८) प्रस्रवण-सिक्तम्, अति-

---

(स) इतीति। इति विचारयन्नेव चन्द्रापीडस्तस्य सरोवरस्य दक्षिणं तीरमासाद्य तुरगादवततार इत्यन्वयः। अत्र क्रोड़े द्वितीयान्तपदानि तीरमित्यस्य विशेषणानि। शिलाशकलवत् प्रस्तरखण्डवत् कर्कशाः कठिनाः वालुकाः प्रायेण बाहुल्येन यस्मिन् तत्। विद्याधरैर्देवयोनिविशेषैरुद्धृतैः सनालानां कुमुदानां कलापेन समूहेन अर्च्चितानि पूजितानि अनेकानि चारूणि सैकतलिङ्गानि वालुकामयशिवलिङ्गानि यस्मिन् तत्। अरुन्धत्या वशिष्ठभार्य्यया दत्तं दिनकराय सूर्य्याय यदर्घ्यं तस्य पयसो जलात् पर्य्यस्तैः प्रभ्रष्टैः रक्तकमलैः शोभितम्। उपकूले तीरसमीपे शिलातलेषु उपविष्टैर्जलमानुषैर्मानुषाकृतिजलजन्तुविशेषैः निषेव्यमाण आतपः सूर्य्यकिरणो यत्र तत्। कैलासस्य पर्व्वतस्य च अभ्यर्णतया आसन्नतया हेतुना, स्नानाय आगतस्य मातृमण्डलस्य ब्राह्मीप्रभृतिमातृगणस्य पदपङ्क्तेश्चरणश्रेण्याः मुद्राभिश्चिह्नैरङ्कितम्। अवकीर्णैर्विक्षिप्तैर्भस्मभिः सूचितानि अनुमापितानि मग्नोत्थितानां अवगाहनानन्तरोत्तीर्णानां गणानां प्रमथानां वृन्दस्य समूहस्य उद्धूलनानि धूलिवन्मर्द्दनानि त्रिपुण्ड्रादिविधानार्थं धूलिवत् सूक्ष्मकरणाय भस्मनां पेषणानि यस्मिन् तत्। स्नात्वा धूलय इत्युद्धूलयतामासां करणमित्युद्धूलनं करीषोद्धूलनादुद्धूलिश्चाहादि सूत्। अवगाहाय अवतीर्णस्य अवतरीतुं चलितस्य गणपतेर्गजाननस्य गण्डस्थलात् गलितस्य मदस्य दानजलस्य प्रस्रवणेन धारया सिक्तम्।

(স) চন্দ্রাপীড় এইরূপ মনে মনে বিতর্ক করিতে করিতে সেই অচ্ছোদসরোবরের দক্ষিণ তীরে যাইয়া অশ্ব হইতে অবতরণ করিলেন। সেই দক্ষিণ তীরে পাষাণখণ্ডের ন্যায় অত্যন্ত কঠিন বহুতর বালি ছিল, বিদ্যাধরগণ নালের সহিত কুমুদসমূহ উত্তোলন করিয়া তাহাদ্বারা সুন্দর সুন্দর বহুতর বালুকাময় শিবলিঙ্গের পূজা করিয়াছিল; অরুন্ধতীদেবী সূর্য্যকে যে অর্ঘ দিয়াছিলেন, তাহার রক্তপদ্মগুলি, তাহারই জল হইতে দূরে পড়িয়া শোভা জন্মাইতেছিল; কতকগুলি জলমানুষ তীরের নিকটে পাথরের উপর বসিয়া রৌদ্র সেবন করিতেছিল; এবং কৈলাসপর্ব্বত নিকটবর্ত্তী বলিয়া তথা হইতে ব্রাহ্মীপ্রভৃতি মাতৃগণ স্নান করিবার নিমিত্ত আসিয়াছিলেন, তাঁহাদের চরণের চিহ্নশ্রেণীতে সে স্থানটি চিহ্নিত ছিল; কতকগুলি ভস্ম ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত থাকিয়া ইহাই প্রকাশ করিয়াছিল যে, প্রমথগণ অবগাহনপূর্ব্বক উঠিয়া ভস্মের তিলক ধারণ করিবার নিমিত্ত কতকগুলি ভস্ম, ধূলির মত করিবার জন্য পেষণ করিয়া-

---

(१)...अर्च्चितं। (२)...दत्तार्घ्य...। (३)...आरक्त...। (४)...मण्डलमुद्राङ्कितं।
(५) अवतीर्ण...। (६)...कदम्बक...। (७) अवगाहनावतीर्ण...। (८)...गण्डस्थलमद...

प्रमाण पादानुमीयमान-(१) तृषित-कात्यायनी-सिंहावतरण-(२) मार्गम्, दक्षिण-(३) तीरमासाद्य तुरगादवततार। (स)

अवतीर्य्य च व्यपनीतपर्य्याणमिन्द्रायुधमकरोत् (ह)। क्षितितल-लुठितो-त्थितञ्च गृहीत-कतिपय-यवसग्रासं सरोऽवतार्य्य (४) पीत-सलिलमिच्छया स्नातं चोत्थाप्यान्यतमस्य समीपवर्त्तिनस्तरोर्मूलशाखायामपगतखलीनं हस्तपाश-शृङ्खलया कनकमय्या चरणौ (५) बद्ध्वा कृपाणिकावलूनान् छित्त्वा चाग्रतः कतिचित् सरस्तीरप्ररूढ़दूर्वा-(६) प्रवालकवलान्, स्वयमपि (७) सलिलमवत-तार (क्ष)। ततश्च प्रक्षालितकरयुगलः (८) चातक इव कृत्वा जलमय-

तथा अतिप्रमाणैरतिवृहद्भिः पादैः पादचिह्नैः अनुमीयमानः तृषितस्य सञ्जातपिपासस्य कात्यायनीसिंहस्य दुर्गाया वाहनभूतसिंहस्य अवतरणमार्गो यस्मिन् तत्।

(ह) अवेति। व्यपनीतं अपसारितं पर्य्याणं पल्ययनं यस्य तं तादृशम्।

(क्ष) क्षितीति। किञ्च, आदौ क्षितितले लुठितः पर्य्याणापनयनानन्तरमेव लुण्ठितः अनन्तरमुत्थितस्तं, अयमश्वस्वभावः, गृहीताः कतिपये यवसानां घासानां ग्रासा येन तं इन्द्रायुधं। अपगतः खलीनः कविका यस्य तं। हस्तपाशौ हस्तबन्धनरज्जुस्तद्रूपा या शृङ्खला तया। कृपाणिकया छुरिकया अवलूनान् छिन्नान्। सरस्तीरप्ररूढ़दूर्वाणां प्रवालकवलान् पल्लवग्रासान्, अग्रतः छित्त्वा इन्द्रायुधस्य सम्मुखे संस्थाप्य च, स्वयमपि चन्द्रापीड़ः सलिलमवततार।

(क) तत इति। जलमयमाहारं कृत्वा उदरं परिपूर्य्य जलं पीत्वेत्यर्थः। चक्राह्वश्चक्रवाकः।

ছিলেন; স্নান করিতে যাইবার সময়ে গণেশের গণ্ডস্থল হইতে মদজল নিঃসৃত হইয়া সেই স্থানটা সিক্ত করিয়াছিল; আর বৃহৎ বৃহৎ পদচিহ্ন দেখিয়া ইহাই অনুমান হইতেছিল যে, এইটাই পিপাসার্ত্ত দুর্গার সিংহের জলে নামিবার পথ।

(হ) চন্দ্রাপীড় অবতরণ করিয়া ইন্দ্রায়ুধের পালান খুলিয়া দিলেন। (ক্ষ) তখন ইন্দ্রায়ুধ ভূতলে লুণ্ঠিত হইয়া পুনরায় উঠিয়া, কয়েকটি ঘাসের গ্রাস মুখে লইল; তাহার পর চন্দ্রাপীড় তাহাকে জলে নামাইলেন, তখন সে, ইচ্ছানুসারে জল পান করিল ও স্নান করিল, পরে চন্দ্রাপীড় তাহাকে তীরে উঠাইয়া কড়িয়াল খুলিয়া নিজের হস্তস্থিত স্বর্ণময় শৃঙ্খলদ্বারা, নিকটবর্ত্তী কোন বৃক্ষের মূলের শাখাতে তাহার চরণদ্বয় বন্ধন করিয়া, ছুরিকা-দ্বারা সরোবরের তীরজাত দূর্ব্বার কতকগুলি পল্লব কাটিয়া, সেগুলি ইন্দ্রায়ুধের সম্মুখে রাখিয়া আপনিও যাইয়া জলে নামিলেন। (ক) তাহার পর হস্ত প্রক্ষালন করিয়া, চাতকের ন্যায়

(१)...पद...। (२)...अवतार...। (३) दक्षिणं। (४) अवतीर्य्यं। (५) चरणौ।
(६) सरस्तीरदूर्वा...। (७) पुनरपि। (८)...करचरणयुगलः।

माहारं, (१) चक्राह्वय: (२) इवास्वाद्य मृणाल-शकलानि, शिशिरांशुरिव कराग्रै: स्पृष्ट्वा कुमुदानि, फणीवाभिनन्द्य जलतरङ्गवातान्, अनङ्गशरप्रहारातुर इवोरसि निधाय नलिनीदलोत्तरीयम्, अरण्यगज इव शीकरार्द्रपुष्करोपशोभितकर: सर: (३) सलिलादुदगात् (क)। प्रत्यग्रभग्नशिशिरैश्च (४) सस्तृणालकैर्जल-कणिकाचितै: कमलिनीपलाशैर्लतामण्डपपरिच्छिन्ने शिलातले स्रस्तरं (५) आस्तीर्य, निधाय शिरसि पिण्डीकृतमुत्तरीयं निषसाद। (ख)

मुहूर्त्तं विश्रान्तश्च तस्य सरस उत्तरे तीरप्रदेशे समुच्चरन्तम्, उन्मुक्तकवलेन निश्चलश्रवणपुटेन तन्मयीभूतेनोदग्रीवेणेन्द्रायुधेन प्रथममाकर्णितं श्रुतिसुभगं वीणातन्त्रीझङ्कारमिश्रममानुषं गीतशब्दमशृणोत् (ग)। श्रुत्वा च 'कुतोऽत्र

मृणालानां शकलानि खण्डानि। शिशिरांशुश्चन्द्र इव। कराग्रैरङ्गुलिभि: किरणाग्रैश्च। फणी सर्प इव जलतरङ्गवातान् अभिनन्द्य प्रशस्य सुखकरत्वेन निषेव्येत्यर्थ:। अनङ्गशरप्रहारातुर इव कामार्त्तो जन इव नलिनीदलरूपमुत्तरीयं उरसि वक्षसि निधाय। शीकरैर्जलबिन्दुभिरार्द्रं यत् पुष्करं पद्मं तेन उपशोभित: करो हस्त: शुण्डा च यस्य स:, चन्द्रापीड:। उदगादुत्तस्थौ। अत्र प्रत्येकवाक्य एव पूर्णोपमालङ्कार:।

(ख) प्रत्यग्रेति। किञ्च, प्रत्यग्रं नवमचिरं यथास्यात्तथा भग्नानि च तानि, अतएव शिशिराणि शीतलानि चेति तै:। जलकणिकाभिश्चितैर्व्याप्तै:, कमलिनीपलाशै: पद्मपत्रै:, लतामण्डपपरिच्छिन्ने मण्डपाकारमापन्नाभिर्लताभि: परिवेष्टिते शिलातले कस्मिंश्चित् बृहत्पाषाणोपरिभागे स्रस्तरमास्तरणं आस्तीर्य प्रसार्य पातयित्वा, पिण्डीकृतं स्तूपीकृतं उत्तरीयं वसनं शिरसि निधाय मस्तकाधोभागे दत्त्वा निषसाद शयितवान्।

(ग) मुहूर्त्तमिति। समुच्चरन्तं उत्तिष्ठन्तं। उन्मुक्तकवलेन त्यक्तघासग्रासेन, निश्चले श्रवणपुटे कर्णयुगलं यस्य तेन। सर्वत्र गीतमाधुर्य्यादिति भाव:। श्रुतौ सुभगं मधुरं। अमानुषं दिव्यम्।

জলময় আহার করিয়া, চক্রবাকের ন্যায় মৃণালখণ্ড চর্ব্বণ করিয়া, চন্দ্রের ন্যায় করাগ্রদ্বারা কুমুদগুলিকে স্পর্শ করিয়া, সর্পের ন্যায় জলতরঙ্গের বায়ু সেবন করিয়া, কামাতুরের ন্যায় বক্ষঃস্থলে পদ্মপত্র রাখিয়া এবং বন্য হস্তীর ন্যায় জলবিন্দুসংসিক্ত পদ্ম ধারণ করায় শোভিতহস্ত হইয়া সরোবরের জল হইতে উঠিলেন। (খ) নূতন ভগ্ন করায় শীতল, মৃণালসংযুক্ত ও জলকণায় ব্যাপ্ত কতকগুলি পদ্মপত্রদ্বারা, মণ্ডপাকারে লতায় বেষ্টিত কোন বৃহৎ পাষাণের উপরে আস্তরণ পাতিয়া, তাহার উপরে, মস্তকের নীচে নিজের উত্তরীয় বস্ত্র স্তূপীকৃত করিয়া দিয়া শয়ন করিলেন।

(গ) এই ভাবে কিছুকাল বিশ্রাম করিলেন, তাহার পর সেই সরোবরের উত্তর তীরে উত্থিত, বীণাতন্ত্রীর ঝঙ্কারমিশ্রিত এবং শ্রুতিমধুর অলৌকিক গীতধ্বনি শুনিতে পাইলেন; এদিকে কিন্তু ইন্দ্রায়ুধ ঘাসের গ্রাস ত্যাগ করিয়া, কর্ণযুগল নিশ্চলভাবে রাখিয়া এবং

(१) जलमाहारं। (२) चक्राह्व:। (३) क्वचित् सर:पदं नास्ति। (४)...भग्नशिशिरैश्च। (५) संस्तरं।

विगतमर्त्त्यसम्पाते प्रदेशे गीतध्वनेः सम्भूतिः' इति समुपजातकौतुकः कमलि-नीदलस्रस्तरात् (१) उत्थाय तामेव गीतसम्पातसूचितां दिशं चक्षुः प्राहि-णोत् (घ)। अतिदवीयस्तया तु तस्य प्रदेशस्य प्रयत्नव्यापृतलोचनोऽपि विलो-कयन् किञ्चिद्ददर्श, तमेव केवलमनवरतं गीतशब्दं (२) शुश्राव (ङ)। कुतूहलवशाच्च गीतध्वनिप्रभवजिज्ञासया कृतगमनबुद्धिर्दत्तपर्य्याणमिन्द्रायुध-मारुह्य प्रियगीतैः प्रथमप्रस्थितैरप्रार्थितैरपि वनहरिणैरुपदिश्यमानवर्त्मा, सप्त-च्छद-(३) वकुलैला-लवङ्ग-लवली-लोल-कुसुम-सुरभि-परिमलया अलिकुल-

(घ) शुश्रुवेति। विगतो मर्त्त्यानां मानुषाणां सम्पातः सञ्चारो यस्मात्तस्मिन्। सम्भूतिरुत्पत्तिः। इति विभाव्य समुपजातकौतुकश्चन्द्रापीडः। कमलिनीदलस्रस्तरात् पद्मपत्रास्तरणात्। दिशं प्रति।

(ङ) अतीति। अतिदवीयस्तया नितान्तदूरतया। प्रयत्ने व्यापृते निर्वर्त्तु प्रवृत्ते लोचने यस्य स तादृशः सन्नपि।

(च) कुतूहलेति। प्रभवत्यस्मादिति प्रभव उत्पत्तिस्थानं; गीतध्वनेः प्रभवस्य जिज्ञासया ज्ञानेच्छया, कृतगमनबुद्धिश्चन्द्रापीडः। प्रियं गीतं येषां तैः, प्रथमप्रस्थितैः अग्रे चलितैः, अप्रार्थितैरपि वर्त्मोपदिष्ट-मयाचितैरपि वनहरिणैः, उपदिश्यमानं वर्त्म पन्था यस्य स तादृशः सन्। सप्तच्छदानां वकुलानां एलानां लवङ्गानां लवलीनाञ्च लोलो वायुना चलितः कुसुमानां सुरभिपरिमलो घ्राणतर्पणगन्धो यस्यां तया, अन्यत्र तु तत्कुसुमानामिव सुरभिपरिमलो यस्यास्तया, अलिकुलस्य भ्रमरगणस्य विरुत्या रवेण मुखरितया शब्दितया, तमालैस्तरुभिर्नीला तमालवन्नीला च तया, दिङ्नागस्य दिग्दन्तिनः मदवीथ्या मदजलश्रेण्या तत्प्रवाहेणेव स्थितया,

উত্তরাভিমুখে উদগ্রীব হইয়া সেই গীতধ্বনি প্রথম শুনিয়াছিল। (ঘ) সেই গীতধ্বনি শুনিয়া মনে মনে চিন্তা করিলেন, 'এখানে মানুষের যাতায়াত নাই, তথাপি কোথা হইতে এই গীত-ধ্বনির উৎপত্তি হইতেছে' তাই তাঁহার কৌতূহল জন্মিল, তখন তিনি সেই পদ্মপত্রের শয্যা হইতে গাত্রোত্থান করিয়া, গীতসংসূচিত সেই দিকেই দৃষ্টিপাত করিলেন। (ঙ) কিন্তু সেই স্থানটি অত্যন্ত দূরবর্ত্তী বলিয়া বিশেষ যত্নপূর্ব্বক নয়নযুগল ব্যাপৃত করিয়া দেখিতে লাগিয়াও বিশেষ কিছুই দেখিতে পাইলেন না, কেবল অবিশ্রান্ত সেই গীতধ্বনিই শুনিতে লাগিলেন। (চ) তাহার পর কৌতুকবশতঃ গীতধ্বনির উৎপত্তিস্থান জানিবার ইচ্ছা করিয়া, গমনে কৃতনিশ্চয় হইয়া ইন্দ্রায়ুধের পালান লাগাইলেন এবং তাহাতে আরোহণ করিলেন; এদিকে গানপ্রিয় বন্য হরিণগণ, প্রার্থনা না করিলেও অগ্রে অগ্রে প্রস্থান করিয়া পথ দেখাইতে দেখাইতে চলিল; এইভাবে চন্দ্রাপীড় সেই গীতধ্বনি লক্ষ্য করিয়া, সরোবরের পশ্চিম তীরের বনশ্রেণীর ভিতর দিয়া উত্তর দিকে চলিলেন; সেই বনের ভিতরে সপ্তপর্ণ, বকুল, এলাচী, লবঙ্গ ও লবলীপুষ্পের মনোহর সৌরভ বায়ুভরে পরিচালিত হইতেছিল;

(१)…दलसंस्तरात्, पत्रस्रस्तरात्। (२) शब्दं। (३) क्वचित् सप्तच्छदपदं नास्ति।

विहृति-मुखरितया तमालनीलया दिङ्नागमदवीथ्येव पश्चिमया सरस्तीर-वनलेखया (१) निमित्तीकृत्य तं गीतध्वनिमभिप्रतस्थे। (च)

क्रमेण च सम्मुखागतैः, अच्छ-निर्झरजल-कणजाल-जनित-जड़िमभिः, जर्जरितभूर्जवल्कलैः, धूर्जटि-वृषभ-(२) रोमन्थ-फेन-बिन्दुवाहिभिः, षण्मुख-शिखण्डि-शिखा-चुम्बिभिः, अम्बिका-कर्णपूर-पल्लवोल्लासन-(३) दुर्ललितैः, उत्तर-कुरु-कामिनी-कर्णोत्पल-प्रेङ्खोलन-दोहदिभिः, आकम्पितकक्कोलैः (४) नमेरु-कुसुम-पांशुपातिभिः, पशुपति-जटा-बन्धार्त्त-वासुकि-परिपीत-शेषैः, आह्लादिभिः पुण्यैः

पश्चिमया सरस्तीरस्य वनलेखया वनश्रेण्या करणेन, तं गीतध्वनिं निमित्तीकृत्य उद्दिश्य अभिप्रतस्थे तदभिमुखं जगाम। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(छ) क्रमेणेति। किञ्च क्रमेण सम्मुखागतैः कैलासमारुतैरभिनन्द्यमानश्चन्द्रापीडस्तं प्रदेशं गत्वा पादपैः परिवृतं शूलपाणेः शून्यं सिद्धायतनमपश्यदिति बहुदूरेणान्वयः। तत्र प्राथमिकानि तृतीयाबहुवचनान्तपदानि कैलासमारुतैरित्यस्य विशेषणानि। अच्छानां निर्मलानां निर्झरजलानां कणजालेन बिन्दुसमूहेन जनितो जड़िमा शीतलत्वं येषां तैः। जर्जरितानि श्लथीकृतानि भूर्जानां तरूणां वल्कलानि यैस्तैः। धूर्जटिवृषभस्य शिववृषस्य रोमन्थे चर्वितचर्वणसमये ये फेनास्तेषां बिन्दुवाहिभिः। षण्मुखस्य कार्त्तिकेयस्य यः शिखण्डी वाहनीभूतो मयूरस्तस्य शिखाचुम्बिभिस्तच्छिखास्पर्शिभिः। अम्बिकायाः पार्वत्याः कर्णपूरयोः कर्णभूषणभूतयोः पल्लवयोः उल्लासनेन सञ्चालनेन दुर्ललिता हठकारिणस्तैः। उत्तरकुरुनाम्ना हिमालयोत्तरवर्त्तीदेशविशेषस्तस्य कामिनीनां यानि कर्णोत्पलानि तेषां प्रेङ्खोलने आन्दोलने दोहदिभिरभिलाषिभिः। आकम्पितानि कक्कोलानि कोषफलानि यैस्तैः। नमेरुकुसुमानां रुद्राक्षपुष्पाणां पांशून् परागान् पातयन्तीति तैः। पशुपतेः शिवस्य जटाबन्धेन आर्त्तः पीड़ितो यो वासुकिरनन्तनागस्तेन परिपीतेभ्यः - सर्पाणां वायुभोजित्वात्

ভ্রমরগণের ঝঙ্কারে সে বনটি মুখরিত হইয়াছিল এবং তমাল বৃক্ষ থাকায় দিগ্‌হস্তীর মদজলপ্রবাহের ন্যায় নীলবর্ণ ছিল।

(ছ) চন্দ্রাপীড় ক্রমে সেই স্থানে যাইয়া উপস্থিত হইলেন; যাইবার সময়ে আনন্দকর ও পবিত্র কৈলাসপর্ব্বতের বায়ু, সম্মুখে বহিত হইয়া তাঁহার আনন্দ জন্মাইতেছিল; নির্ম্মল পার্ব্বত্য প্রস্রবণজলের কণাসমূহে সেই বায়ুর শীতলতা জন্মাইয়াছিল, আবার সে বায়ু ভূর্জবৃক্ষের বল্কল শিথিল করিয়াছিল, শিব-বৃষের চর্ব্বিতচর্ব্বণ করিবার সময়ে তাহার ফেনবিন্দু বহন করিয়াছিল, কার্ত্তিকের ময়ূরের শিখা স্পর্শ করিয়াছিল, দুর্গার কর্ণপল্লব আন্দোলিত করিতে সাহসী হইয়াছিল, উত্তরকুরু-দেশস্থ রমণীগণের কর্ণের উৎপল আন্দোলিত করিতে অভিলাষী ছিল, কক্কোলফল কম্পিত করিয়াছিল, রুদ্রাক্ষপুষ্পের রেণু নিপাতিত করিয়াছিল এবং শিবের জটাতে বন্ধন করায় ব্যথিত অনন্তনাগ যাহা পান করিয়াছিলেন, তাহার অবশিষ্ট বায়ুই

(१) क्वचित्तु केवलं वनलेखयेति पदं दृश्यते।

(२)...वृष...। (३)...उल्लसन...। (४) आकम्पितकमलैः नवकुसुममालापांशुवाहिभिः।

कैलासमारुतैरभिनन्द्यमानो गत्वा च तं प्रदेशं, (छ) सर्वतो मरकतहरितैः, (ज) हारि-हारीत-रुति-रमणीयैः, (झ) भ्रमद्भृङ्गराज-नखर-जर्जरित-जरठ-कुड्मलैः,(ञ) उन्मद-कोकिल-कुल-कवलीकृत-सहकार-कोमलाग्रपल्लवैः, (१) (ट) उन्मद-षट्-चरण-चक्रवाल-वाचालित-विकच-चूत-कलिकैः, (ठ) अचकित-चकोर-चञ्चु-(२) चुम्बित-मरिचाङ्कुरैः, (ड) चम्पक-पराग-पुञ्ज-पिञ्जर-कपिञ्जल-जग्ध-पिप्पलीफलैः, (ढ) फल-भर-निकर-निपीड़ित-(३) दाड़िम-नीड़-प्रसूत-कलविङ्कैः, (ण) प्रक्रीड़ित-

---

भुक्तेभ्यः शेषैरवशिष्टैः। आह्लादिभिरानन्दकैः। तथा पुण्यैः देवस्पर्शित्वात् पवित्रैः कैलासमारुतैः कैलासाचलस्पर्शिवायुभिः, अभिनन्द्यमानः सेव्यमानश्चन्द्रापीड़ः। तं प्रदेशं गीतोत्पत्तिस्थानम्।

(ज) सर्वत इति। सर्वतः समन्तात् मरकतवत् तदाख्यमणिवत् हरितैः श्यामवर्णैः। इत्यारभ्य तृतीया-बहुवचनान्तपदानि पादपैरिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(झ) हारीति। हारिणां मनोहराणां हारीतानां पक्षिविशेषाणां रुतिभिः कलरवै रमणीयाः रम्याः।

(ञ) भ्रमदिति। भ्रमतां भृङ्गराजानां भ्रमराणां नखरैर्जर्जरितानि क्षतानि जरठानि परिणतानि कुड्मलानि मुकुलानि येषां तैः। "भृङ्गराजो मधुकरे" इत्यादि हैमः।

(ट) उन्मदेति। उन्मदेन मदमत्तेन कोकिलकुलेन कवलीकृतानि भक्षितानि सहकाराणां आम्र-तरूणां कोमलानि अग्रपल्लवानि किसलयाग्राणि येषु तैः।

(ठ) उन्मदेति। उन्मदेन षट्चरणचक्रवालेन भ्रमरमण्डलेन वाचालिता मुखरीकृताः विकचाः प्रस्फुटाः चूतकलिका येषु तैः।

(ड) अचकितेति। अचकितैरत्रस्तैः चकोरैः पक्षिभिः कर्तृभिः, चञ्चुभिः करणैः चुम्बिता भक्षणाय स्पृष्टा मरिचाङ्कुरा येषु तैः। अत्र चकाराणामसकृत्साम्याद्वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

(ढ) चम्पकेति। चम्पकानां पुष्पाणां परागपुञ्जेन अङ्गेषु तत्पतनेनेत्यर्थः पिञ्जराः पिङ्गलवर्णा ये कपिञ्जलास्तित्तिरिपक्षिणस्तैर्जग्धानि भक्षितानि पिप्पलीफलानि येषु तैः। अत्रापि वृत्त्यनुप्रासः।

(ण) फलेति। फलानां भरनिकरेण भारसमूहेन निपीड़ितानां दाड़िमानां वृक्षाणां नीड़ेषु तत्रस्थ-कुलायेषु प्रसूता चटकीभिर्जनिताः कलविङ्काश्चटका येषु तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

वहিত হইতেছিল। (ছ) চন্দ্রাপীড় সেই স্থানে যাইয়া জনশূন্য একটি শিবালয় দেখিতে পাইলেন; নানাবিধ বৃক্ষে সেই শিবালয়টি পরিবেষ্টিত ছিল; সেই বৃক্ষগুলি সকল দিকেই মরকতমণির ন্যায় হরিতবর্ণ ছিল, (ঝ) মনোহর হারিলপক্ষীর রবে সুন্দর হইয়াছিল, (ঞ) ভ্রমরগণ বিচরণ করতঃ নখদ্বারা পরিণত কলিকাগুলিকে ক্ষত-বিক্ষত করিতেছিল, (ট) উন্মত্ত কোকিলগণ আমের কোমল পল্লবগুলি ভক্ষণ করিতেছিল; (ঠ) উন্মত্ত ভ্রমরগণ ঝঙ্কার করিয়া প্রস্ফুটিত আমের কলিকাগুলিকে মুখর করিতেছিল; (ড) চকোর পক্ষিগণ নির্ভয়চিত্তে চঞ্চুদ্বারা মরিচের অঙ্কুর ভক্ষণ করিতেছিল; (ঢ) তিত্তিরিপক্ষিগণ চম্পক-পুষ্পের রেণুতে পিঙ্গলবর্ণ হইয়া পিপুল ফল ভক্ষণ করিতেছিল; (ণ) ফলভরে

---

(१) सहकारकोरकैः। (२)...चकोरचुम्बित...। (३)...पीड़ित...।

कपिकुल-(१) करतल-ताड़न-तरलित-ताड़ीपुटैः, (त) अन्योन्य-कलह-कुपित-(२) कपोत-पोत-पक्ष-(३) पाली-पातित-कुसुमैः, (थ) कुसुम-रजोराशि-शार-सारिका-श्रित-शिखरैः, (४) (द) शुक-शत-मुख-नख-शिखर-शकलित-फल-स्फीतैः, (ध) जलधर-जल-लुब्ध-(५) विप्रलब्ध-मुग्ध-चातक-ध्वान-मुखरित-तमाल-षण्डैः, (न) इभ-कलभकोड्मून-पल्लव-वेल्लित-लवली-वलयैः, (प) आलोयमान-(६) नव-यौवन-

---

(त) प्रक्रीड़ितेति। प्रक्रीड़ितस्य खेलाप्रवृत्तस्य कपिकुलस्य वानरगणस्य करतलताड़नैः तरलितानि कम्पितानि ताड़ीपुटानि तालीपत्राणि येषु तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(थ) अन्योन्येति। अन्योन्यं परस्परं कलहकुपितानां कपोतपोतानां पारावतशावकानां पक्षपालीभिः पतत्रश्रेणीभिः पातितानि कुसुमानि येषां तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(द) कुसुमेति। कुसुमानां रजोराशिना परागपुञ्जेन शाराभिर्विचित्राभिः रञ्जिताभिरित्यर्थः सारिकाभिः शुकस्त्रीभिः आश्रितानि शिखराणि उपरिभागा येषां तैः। अत्रापि राशिशारेति स्वरूपतः साम्याद्नुप्रासोऽलङ्कारः।

(ध) शुकेति। शुकशतस्य शुकपक्षिसमूहस्य मुखैः नखशिखरैश्चाग्रैश्च शकलितानि खण्डीकृतानि यानि फलानि तैः स्फीताः पूर्णास्तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(न) जलेति। जलधरजलेषु मेघसलिलेषु लुब्धा अभिलाषिणः नीलत्वसाम्यात् तमालतरूनेव मेघभ्रान्त्या प्रथमं तदीयजललब्धा इत्यर्थः अनन्तरञ्च विप्रलब्धा जललाभाभावेन वञ्चिता ये मुग्धचातकास्तेषां ध्वानैः रवैः मुखरितं तमालषण्डं तमालतरुसमूहो येषु तैः। अत्र भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः, वृत्त्यनुप्रासश्चालङ्कारः।

(प) इभेति। इभकलभकैर्हस्तिशावकैः दष्टानि छिन्नानि पल्लवानि यस्य तत्, अतएव वेल्लितं कम्पितं लवलीवलयं लवलीतरुमण्डलं येषु तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

অবনত দাড়িম্ব বৃক্ষে যে সকল বাসা ছিল, তাহাতে চটকপক্ষিণীগণ চটকশাবক প্রসব করিয়াছিল, (ত) বানরগণ খেলায় প্রবৃত্ত হইয়া হস্তের তাড়নে তাড়িগাছের পাতা কাঁপাইতেছিল; (থ) কপোতশাবকগণ কলহে পরস্পর কুপিত হইয়া পক্ষশ্রেণীর তাড়নে বৃক্ষ হইতে পুষ্প নিপাতিত করিতেছিল; (দ) সারিকাগণ পুষ্পের রেণুরাশিতে রঞ্জিত হইয়া বৃক্ষের উপরে বসিয়াছিল; (ধ) শুকপক্ষিগণ মুখ ও নখদ্বারা যে ফল খণ্ড খণ্ড করিয়া ফেলিয়াছিল, তাহাতে সে বনটি পরিপূর্ণ হইয়াছিল; (ন) মুগ্ধ চাতকপক্ষিগণ তমালবৃক্ষগুলিকে মেঘ মনে করিয়া বৃষ্টির লোভে আসিয়াছিল, কিন্তু তাহাতে বঞ্চিত হইয়া উচ্চরবে তমাল-বন মুখরিত করিতেছিল; (প) হস্তিশাবকগণ পল্লব ছিঁড়িয়া খাইবার সময়ে নোয়াড়ি (লোয়াইল) গাছগুলি কাঁপিতে-

---

(१)...चपलकपिकुल...। (२) अन्योन्यकुपित...। (३)...पीतसंहतिलोलपक्ष...।
(४)...सारिकाश्रित...। (५)...जललवलुब्ध। (६) कृतालोकमान...।

मद-मत्त-(१) पारावत-पक्ष-क्षेप-पर्य्यस्त-कुसुम-स्तवकैः, (२) (फ) तनु-पवन-कम्पित-कोमल-कदली-दल-वीजितैः, (ब) अविरल-फल-निकरावनत-नारिकेर-वनैः, (भ) अकठोर-पत्र-पुट-पूग-(३) विटपि-परिवृतैः, (म) अनिवारित-विहङ्ग-तुण्ड-खण्डित-पिण्डखर्ज्जूर-जालकैः, (य) मद-मुखर मयूरी-मधुर-रव-विराविनान्तरैः, (४) (र) अकलित कलिका-कलाप-दन्तुरैः, (५) (ल) अन्तरान्तरा कैलास-तरङ्गिणी-तरङ्गित-सिकतिल-तल-भूमिभागैः, (व) वन-देवता-करतल-निवह-निभमलक्तक-जल-लव सिक्तमिव किसलयनिकरमतिसुकु-

(फ) आलोयेति। आलोयमानानां निभृतस्थितानां नवयौवनमदमत्तानां पारावतानां कपोतानां पक्ष-क्षेपैः पर्य्यस्ता विक्षिप्ताः कुसुमस्तवका येषु तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(ब) तन्विति। तनुपवनेन मन्दमारुतेन कम्पितैः कोमलैः कदलीदलैः वीजिताः व्यजनवायुना सेविता इति भावः तैः। ... सुप्रकाशाः

(भ) अविरलेति। अविरलं घनं फलनिकरेण अवनतानां नारिकेराणां नारिकेलतरूणां वनं येषु तैः।

(म) अकठोरेति। अकठोराणि कोमलानि पत्रपुटानि येषां तादृशैः पूगविटपिभिर्गुवाकवृक्षैः परि-वृतास्तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(य) अनीति। अनिवारितैः केनाप्यनिषिद्धैः विहङ्गैः पक्षिभिः कर्त्तृभिः, तुण्डैश्चञ्चुभिः करणैः खण्डितं खण्डखण्डीकृत्य भक्षितं पिण्डखर्ज्जूराणां जालकं समूहो येषु तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(र) मदेति। मदेन मुखराणां शब्दायमानानां मयूरीणां मधुररवैर्विराविताति सञ्जातशब्दानि अन्तराणि मध्यदेशा येषां तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(ल) अकेति। अकलितानां अप्रस्फुटितानां कलिकानां कलापेन समूहेन दन्तुरा विषमास्तैः।

(व) अन्तरेति। अन्तरान्तरा मध्ये मध्ये कैलासतरङ्गिणीनां कैलासाचलस्थनदीनां तरङ्गिताः सञ्जाततरङ्गा अतएव सिकतिला वालुकान्वितास्तलभूमिभागा येषां तैः। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कारः। सिकता एषां सन्तीति सध्माद्यत्वादिलच्प्रत्ययः।

(श) वनेति। वनदेवतानां करतलनिवहनिभं रक्ततासाम्यात् पाणितलसमूहतुल्यं, अतएवालक्तक-

ছিল; (ফ) নীরবে অবস্থিত কপোতগণ নব যৌবনের মদে মত্ত হইয়া পক্ষের তাড়নে পুষ্পগুচ্ছ সকল ফেলিয়া দিতেছিল; (ব) কোমল কদলীপত্রগুলি অল্প অল্প বায়ুতে সঞ্চালিত হইয়া বাতাস করিতেছিল; (ভ) ফলভারে অবনত নারিকেল বৃক্ষসমূহ ঘন ঘন ভাবে রহিয়াছিল; (ম) কোমল-পত্র-সমন্বিত গুবাকবৃক্ষশ্রেণীতে সেই বনটি পরিবেষ্টিত ছিল; (য) পক্ষিগণ অবাধে চঞ্চুদ্বারা খণ্ড খণ্ড করিয়া পিণ্ডখর্জ্জুর ভক্ষণ করিতেছিল; (র) মত্ততাবশতঃ শব্দায়মান ময়ূরীগণের মধুর শব্দে সেই বনের অভ্যন্তরদেশ শব্দিত হইতেছিল; (ল) অপ্রস্ফুটিত কলিকাসমূহে বৃক্ষগুলিকে অসমান করিয়াছিল; (ব) মধ্যে মধ্যে কৈলাসপর্ব্বতস্থ নদীর তরঙ্গ আসিয়া পতিত হওয়ায় নীচের স্থানগুলি বালুকাময় হইয়াছিল; (শ) সেই বৃক্ষগুলি

(१)...यौवनमत्त...। (२)...पर्य्यस्तस्तवकैः। (३)...पूत, पूर्ण्ः...।
(४)...विराजितान्तरैः। (५) आकलित...दन्तुरितैः।

मारसुद्वहद्भिः, (घ) ग्रन्थिपर्ण-ग्राम-मुदित-(१) चमरीकुल निषेवित-मूलैः, (ङ) कर्पूरागुरुप्रायैः, (च) इन्द्रायुधैरिव घनावस्थानैः, (छ) कुमुदैरिवादत्त-दिनकर-कर-प्रवेश-(२) शिशिराभ्यन्तरैः, (ज) दाशरथिबलैरिवाञ्जन-नील-नल-परिगत-प्रान्तैः, (झ) प्रासादैरिव सपारावतैः, (ञ) भवनतापसैरिव सन्निहित-

जलानां लवैर्बिन्दुभिः सिक्तमिव स्थितं अतिसुकुमारं नितान्तकोमलं किसलयनिकरं पल्लवसमूहं उद्वहद्भि-र्धारयद्भिः। अत्र आर्थीपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(घ) ग्रन्थीति। ग्रन्थिपर्णानां ग्रकाख्यद्रव्यविशेषाणां ग्रामेन भक्षणेन मुदितं आनन्दितं यच्चमरीकुलं हरिणविशेषगणस्तेन निषेवितानि अधिष्ठितानि मूलानि येषां तैः।

(ङ) कर्पूरेति। कर्पूरा अगुरवश्च द्रुमाः प्रायेण बाहुल्येन येषु तैः।

(च) इन्द्रेति। इन्द्रायुधैः शक्रधनुर्भिरिव, घनं निविडं अवस्थानं येषां तैः, अन्यत्र तु घनेषु मेघेषु अवस्थानं येषां तैः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(छ) कुमुदैरिति। कुमुदैः कैरवैरिव, अदत्तेन दिनकरकरप्रवेशेन सूर्यकिरणपातेन हेतुना शिशिरं शीतलं अभ्यन्तरं येषां तैः, पादपपक्षे घनावस्थानेन पत्रपल्लवैरुपरिभागाच्छादनात्, कुमुदपक्षे तु सङ्कोचेन प्रवेशासम्भवादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ज) दाशीति। दाशरथे रामचन्द्रस्य बलैः सैन्यैरिव, अञ्जनवत् कज्जलवत् नीलाः श्यामला: ये नलास्तदाख्यतृणविशेषास्तैः परिगताः परिवेष्टिताः प्रान्ताः शेषभागा येषां ते: अन्यत्र तु आञ्जनः अञ्जनापुत्रो हनुमान् नीलो नलश्च वानरविशेषौ तैः परिगतः परिगृहीतः प्रान्तः अग्रभागो येषां तैः। पूर्णोपमा।

(झ) प्रासादैरिति। प्रासादैरट्टालिकाभिरिव, पारावतैः वानरैः कपोतैश्च सह विद्यमानास्तैः। पूर्णोपमा। "पारावतः कलरवे प्रेक्षे मर्कटतिन्दुके।" इति विश्वः।

(ञ) भवनेति। भवनतापसैर्गृहस्थतपस्विभिरिव, सन्निहिता निकटवर्त्तिनः वेत्राणि वेतसलताः

বনদেবতাদিগের পাণিতলসমূহের ন্যায় অত্যন্ত কোমল পল্লবসমূহ ধারণ করিতেছিল এবং সেগুলি যেন আলতার রসে সিক্ত ছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল; (ঘ) গাঁঠিয়াল বৃক্ষ ভক্ষণ করিয়া চমরী হরিণীগণ হৃষ্টচিত্তে মূলের উপরে বসিয়াছিল; (ঙ) আর সেই বৃক্ষসমূহের মধ্যে কর্পূর ও অগুরু বৃক্ষই অধিকসংখ্যক ছিল; (চ) ইন্দ্রধনু যেমন মেঘের উপরে অবস্থান করে, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন ঘন ঘন ভাবে অবস্থান করিতেছিল; (ছ) সঙ্কোচবশতঃ সূর্য্যরশ্মি প্রবেশ করিতে না দেওয়ায় কৈরবসমূহের অভ্যন্তর যেমন শীতল থাকে, তেমন পত্র-পল্লবে উপরিভাগ আবৃত থাকাবশতঃ সূর্য্যরশ্মি প্রবেশ করিতে না দেওয়ায় সেই বৃক্ষগুলির ভিতরও শীতল ছিল; (জ) রামচন্দ্রের সৈন্যগণের অগ্রভাগ যেমন হনুমান্, নল ও নীল কর্তৃক অধিষ্ঠিত হইত, সেই বৃক্ষগুলির প্রান্তভাগও তেমন কজ্জলের ন্যায় নীলবর্ণ নলে পরিবেষ্টিত ছিল; (ঝ) অট্টালিকাতে যেমন কপোতগণ থাকে, সেই বৃক্ষসমূহেও তেমন

(१) ग्रन्थिपर्णकग्रासमुदित...। (२)...दिनकरप्रवेश...।

वेत्रासनैः (ग) रुद्रैरिव नागलताबद्धपरिकरैः, (घ) उदधि-कूल-पुलिनैरिव निरन्तरोद्भिन्न-प्रवाल-लताङ्कुर-जालकैः, (ङ) अभिषेकसलिलैरिव सर्वौषधि-कुसुम-फल-किसलय-सनाथैः, (च) आलेख्यगृहैरिव बहु-वर्ण-चित्र-पत्र-शकुनि-

---

असनाः प्रियसालकद्रुमाश्च येषां तैः, अन्यत्र तु सन्निहितानि वेत्रासनानि वेतसनिर्मितासनानि येषां तैः। पूर्णोपमा। परिव्राजकानामासनप्रयोजनाभावाद्वनपदम्।

(घ) रुद्रैरिति। रुद्रैरेकादशरुद्रैरिव, नागलताभिस्ताम्बूलवल्लीभिर्बद्धः पूर्णः परिकरो मध्यभागो येषां तैः, अन्यत्र तु नागलताभिर्लतावल्लम्बमानैः सर्पैर्बद्धाः परिकराः कटिदेशा येषां तैः। पूर्णोपमा। 'ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागपर्य्यायवल्ल्यपि।" इत्यभिधानचिन्तामणिः।

(ङ) उदधीति। उदधिकूलपुलिनैरिव, निरन्तरं घनं उद्भिन्नं प्रकाशितं प्रवालानां पल्लवानां लताङ्कुराणाञ्च जालकं समूहो येषु तैः, अन्यत्र तु निरन्तरं सर्वदा उद्भिन्नं तरङ्गाघातेन उत्थितं प्रवाललतानां विद्रुममणिश्रेणीनां अङ्कुरजालकं क्षुद्रक्षुद्रखण्डसमूहो येषु तैः। पूर्णोपमा। "प्रवालोऽस्त्री किसलये वीणादण्डे च विद्रुमे।" इति मेदिनी।

(च) अभीति। अभिषेकसलिलैर्देवतादीनां स्नानीयजलैरिव, सर्वौषधीनां सर्वप्रकारफलपाकान्तलतानां कुसुमैः फलैः किसलयैश्च सनाथाः सहितास्तैः, अन्यत्र तु "सुरामांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयं। शठी चम्पकमुस्ताश्च सर्वौषधिगणः स्मृतः।" इति तिथितत्त्वधृतवचनपरिगणितद्रव्यगणात्मकसर्वौषधिभिः कुसुमैः फलैः किसलयैश्च तत्तद्विधिबोधितैः सनाथानि सहितानि तैः। पूर्णोपमा।

(छ) आलेख्येति। आलेख्यगृहैश्चित्रशालाभिरिव, बहुवर्णैर्नीलपीतादिभिः चित्राणि आश्चर्य्याणि पत्राणि पक्षा येषां तादृशानां शकुनीनां पक्षिणां शतेन समूहेन शोभितास्तैः, अन्यत्र तु बहुवर्णैर्नीलपीतादिचित्रकरणोपकरणैः चित्रा आलेख्यभूता ये पत्रशकुनयः हस्त्यश्वादिवाहनानि पक्षिणश्च तेषां शतेन समूहेन शोभितैः। पूर्णोपमा।

বানরগণ ছিল; (গ) গৃহস্থ তপস্বিগণের নিকটে যেমন বেত্রাসন থাকে, সেই বৃক্ষগুলির নিকটেও তেমন বেতস ও পিয়াসাল বৃক্ষ ছিল; (ঘ) রুদ্রগণের কটিদেশ যেমন লতার ন্যায় লম্বমান সর্পদ্বারা বদ্ধ থাকে, সেই বৃক্ষগুলির মধ্যস্থানও তেমন তাম্বূললতায় বদ্ধ (পরিপূর্ণ) ছিল; (ঙ) সমুদ্রতীরের নিকটবর্ত্তী চড়াতে যেমন তরঙ্গের আঘাতে সর্ব্বদাই শ্রেণীবদ্ধভাবে প্রবালমণির খণ্ডসমূহ আসিয়া উত্থিত হয়, সেইরূপ সেই বৃক্ষসমূহের মধ্যেও পল্লব ও লতার অঙ্কুর ঘন ঘন ভাবে উৎপন্ন হইয়াছিল; (চ) দেবতা ও রাজগণের স্নানীয় জল যেমন সর্ব্বৌষধি (মুরামাংসী প্রভৃতি), পুষ্প, ফল ও পল্লব-সংযুক্ত থাকে, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন সর্ব্বৌষধির (ফল পাকিলে যে যে লতা মরিয়া যায়, সেই সকল লতার) পুষ্প, ফল ও পল্লবসংযুক্ত ছিল; (ছ) চিত্রশালা যেমন নানাবিধ বর্ণদ্বারা চিত্রিত হস্তি-অশ্ব প্রভৃতি বাহনের এবং পক্ষীর চিত্রসমূহে শোভিত থাকে, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন বহুবর্ণে চিত্রিত-পক্ষ-সমন্বিত

शत-शोभितैः, (१) (छ) कुरुभिरिव भारद्वाजोपसेवितैः, (२) (ज) महासमर-मुखैरिव पुन्नाग-समाकृष्ट-शिलीमुखैः, (झ) महाकरिभिरिव प्रलम्ब-बाल-पल्लव-स्पृष्ट-भूतलैः, (ञ) अप्रमत्तपार्थिवैरिव पर्य्यन्तावस्थित-बहु-गुल्मकैः, (ट) दंशितैरिव भ्रमर-सङ्घात-(३) कवचावृतकायैः, (ठ) प्रमाणाभिमुखै-रिव (४) वानर-कराङ्गुलि-स्पृष्ट-गुञ्जैः, (ड) अवनिपालशयनैरिव सिंह-

---

(ज) कुरुभिरिति। कुरुभिर्दुर्य्योधनादिभिरिव, भारद्वाजेन व्याघ्राटपक्षिणा द्रोणाचार्य्येण च उपसेवितैराश्रितैः। पूर्णोपमा।

(झ) महेति। महासमरस्य मुखैः प्रारम्भैरिव, पुन्नागैर्नागकेशरपुष्पैः समाकृष्टाः स्वमधुप्रलोभनेनानीताः शिलीमुखा भ्रमरा येषु तैः, अन्यत्र तु पुन्नागैः पुंहस्तिभिः समाकृष्टाः समाकृष्य नीताः शिलीमुखा बाणा येषु तैः, तत्र बाणानामतिप्रचुरत्वादेव हस्तिभिर्नयनं अतएव महासमरत्वमिति भावः। पूर्णोपमा।

(ञ) महेति। महाकरिभिर्हस्तीन्द्रैरिव, प्रलम्बैर्लम्बमानैः बालपल्लवैर्नूतनकिसलयैः स्पृष्टानि भूतलानि अधोदेशा येषां तैः, अन्यत्र तु प्रलम्बैर्दीर्घैः बालपल्लवैर्विस्तृतलाङ्गुलैः स्पृष्टानि भूतलानि येषां तैः। पूर्णोपमा। "बालोऽस्त्रेऽश्वेभपुच्छयोः" रिति हेमचन्द्रः।

(ट) अप्रेति। अप्रमत्ताः सावधाना ये पार्थिवा राजानस्तैरिव, पर्य्यन्ते प्रान्तभागे राज्यसीमान्ते च अवस्थिता बहवो गुल्माः स्तम्बाः सेनानिवेशाश्च येषां तैः। पूर्णोपमा। "गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च" इत्यमरः।

(ठ) दंशितैरिति। दंशितैर्युद्धसज्जैर्जनैरिव, भ्रमरसङ्घाता मधुलोभेनोपविष्टभ्रमरसमूहाः कवचानीव तैरावृतकायास्तैः, अन्यत्र तु भ्रमरसङ्घातवत् भ्रमरसमूहवत् कवचैः तद्वत्कृष्णवर्णैर्वर्म्मभिरित्यर्थः आवृताः काया देहा येषां तैः, पूर्णोपमा। "सन्नद्धो वर्म्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः।" इत्यमरः।

(ड) प्रमाणेति। प्रमाणाभिमुखैः सुवर्णादिमापनप्रवृत्तैर्जनैरिव, वानरैः कर्त्तृभिः कराङ्गुलिभिः करणैः

পক্ষিসমূহে শোভিত ছিল; (ছ) দুর্য্যোধনপ্রভৃতি কুরুবংশীয়গণ যেমন দ্রোণাচার্য্যকর্ত্তৃক সেবিত ছিলেন, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন ভারুইপক্ষিকর্ত্তৃক সেবিত ছিল; (জ) মহাযুদ্ধের প্রারম্ভে যেমন হাতীগুলি বাণের গাড়ী টানিয়া আনে, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন নাগকেশর ফুলের গন্ধে ভ্রমরদিগকে টানিয়া আনিতেছিল; (ঞ) বড় বড় হস্তীর বৃহৎ লাঙ্গুল যেমন ভূতল স্পর্শ করে, সেই বৃক্ষসমূহের নূতন পল্লবগুলিও তেমন ঝুলিয়া পড়িয়া ভূতল স্পর্শ করিয়াছিল; (ট) সাবধান রাজগণের রাজ্যের সীমান্তে যেমন বহুতর সেনানিবেশ (কেল্লা) থাকে, সেই বৃক্ষসমূহের প্রান্তভাগেও তেমন বহুতর শাখা-পত্র-বিহীন বৃক্ষ ছিল; (ঠ) যুদ্ধে সজ্জিত বীরগণের দেহ যেমন ভ্রমরসমূহের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ বর্ম্মদ্বারা আবৃত থাকে, সেই বৃক্ষ-সমূহের সকল স্থানও তেমন কবচের ন্যায় ভ্রমরসমূহদ্বারা আবৃত ছিল; (ড) সুবর্ণ মাপিতে প্রবৃত্ত লোক যেমন বানরের ন্যায় হস্তের অঙ্গুলীদ্বারা গুঞ্জা (কুঁচ) স্পর্শ করে, সেইরূপ সেই

---

(१)...संयोमिलैः। (२) भारद्वाजद्विजोपसेवितैः। (३)...सम्पात...।

(४) प्रयाणाभिमुखैरिव।

पादाङ्कितत्तलैः, (१) (ढ) आरब्धपञ्चतपःक्रियैरिवोच्छिखशिखिमण्डलपरिवृतैः, (ण) दीक्षितैरिव क्षतकृष्णसारविषाणकण्डूयनैः, (त) जरद्‌गृहस्थमुनिभिरिव जटालबालकमण्डलधरैः, (२) (थ) इन्द्रजालिकैरिव दृष्टिहारिभिः, (द) पादपैः परिवृतं चन्द्रप्रभनाम्नस्तस्य सरसः पश्चिमे तीरे

स्पृष्टा गुञ्जा येषु तैः, अन्यत्र तु वानरवत् कराङ्गुलिभिः स्पृष्टा गुञ्जा यैस्तैः। सुवर्णादिमापनसमये सर्वैरेव गुञ्जा स्पृश्यते। पूर्णोपमा।

(ढ) अवनीति। अवनिपालशयनैः राजशय्याभिरिव, सिंहानां पादैश्चरणचिह्नैः अङ्कितानि तलानि निम्नभूतलानि येषां तैः, अन्यत्र तु सिंहानां पादैरिव पादैः पर्यङ्कपादैः अङ्कितं तलं अधोवर्त्ती पर्यङ्को येषां तैः। पूर्णोपमा।

(ण) आरब्धेति। आरब्धा पञ्चतपःक्रिया पञ्चाग्निसाधनकार्य्यं यैस्तैस्तपस्विभिरिव स्वासनानां चतुर्षु कोणेषु चत्वारः प्रज्वलितवह्नयः उपरि च सूर्य्य इत्यमवस्थिता ये तपस्यन्ति ते पञ्चतपस उच्यन्ते तैरित्यर्थः, उच्छिखाः शिखायुक्ता अर्चिः षश्च यस्य तेन शिखिमण्डलेन मयूरगणेन अग्निसमूहेन च परिवृतास्तैः। पूर्णोपमा।

(त) दीक्षितैरिति। दीक्षितैर्यज्ञे सञ्जातदीक्षैर्यजमानैरिव, क्षतं कृष्णसारैर्हरिणविशेषैः कर्त्तृभिः विषाणैः शृङ्गैः करणैः कण्डूयनं येषां तैः अन्यत्र तु क्षतं कृष्णसारविषाणैः कण्डूयनं गात्रकण्डूया यैस्तैः, यज्ञे दीक्षितानां कृष्णसारशृङ्गे गात्रकण्डूयनविधानादिति भावः। तथा च श्रुतिः "कृष्णविषाणया कण्डूयते।" कात्यायनश्च "कृष्णविषाणां त्रिवलिं पञ्चवलिं वोत्तानां बध्नीत तया कण्डूयनम्।" पूर्णोपमा।

(थ) जरदिति। जरन्तो वृद्धा ये गृहस्थमुनयो गृहस्थास्तापसास्तैरिव, जटासु मूलेषु आलवालकानां जलधाराणां मण्डलं समूहं धरन्तीति तैः, अन्यत्र तु जटालं जटाविशिष्टं बालकमण्डलं शिष्यसमूहं धरन्ति परिपालयन्तीति तैः। तेषां पत्नीसहितया बालकोत्पत्तिसम्भव इति बोध्यम्। पूर्णोपमा। "जटा लग्नकचे मूले मांस्यां व्रचे पुनर्जटी।" इति मेदिनी।

(द) इन्द्रेति। इन्द्रजालिकैर्जनैरिव, दृष्टिहारिभिः सुन्दरत्वान्नयनाकर्षिभिः, अन्यत्र तु स्वप्रभावालोकानां यथायथदृष्टिशक्तिलोपिभिः। पूर्णोपमालङ्कारः।

বৃক্ষসমূহের মধ্যেও বানরগণ হস্তের অঙ্গুলীদ্বারা গুঞ্জা (কুঁচ) স্পর্শ করিতেছিল; (ঢ) রাজগণের শয্যার নীচের পর্য্যঙ্ক যেমন সিংহের পায়ের ন্যায় পায়াসংযুক্ত থাকে, সেই বৃক্ষসমূহের নীচের স্থানগুলিও তেমন সিংহের পায়ের চিহ্নে চিহ্নিত ছিল; (ণ) যাঁহারা পঞ্চাগ্নিসাধনরূপ তপস্যা আরম্ভ করেন, তাঁহারা যেমন প্রজ্বলিত অগ্নিসমূহে পরিবেষ্টিত থাকেন, সেই বৃক্ষসমূহও তেমন চূড়াসমন্বিত ময়ূরগণে পরিবেষ্টিত ছিল; (ত) যজ্ঞে দীক্ষিত হইয়া যজমানগণ যেমন কৃষ্ণসারের শৃঙ্গদ্বারা গাত্র-কণ্ডূয়ন করেন, সেই বৃক্ষসমূহেও তেমন কৃষ্ণসারগণ শৃঙ্গদ্বারা কণ্ডূয়ন করিতেছিল; (থ) বৃদ্ধ গৃহস্থ মুনিগণ যেমন জটাধারী বালকগণকে পরিপালন করেন, সেই বৃক্ষসমূহও তেমন মূলদেশে আলবাল ধারণ করিতেছিল; (দ) ঐন্দ্র-

(१)···अङ्कितत्तलतलैः। (२) दीर्घजटा,···कमण्डलुधरैः।

कैलासपादस्य ज्योत्स्नावदातया प्रभया धवलयतस्तं प्रदेशं तल-(१) भागसन्नि-विष्टं भगवतः शूलपाणेः शून्यं (२) सिद्धायतनमपश्यत्। (ध)

तत्र पवनोद्धूतैः (३) इतस्ततः समापतद्भिः केतकीगर्भधूलिपटलैः (४) धवली-क्रियमाणकायः पशुपतिदर्शनहेतोर्बलादिव प्रतिपाद्यमानो भस्मव्रतम्, आयतन-प्रवेशपुण्यैरिव परिरभ्यमाणः प्रविश्याद्राक्षीत् (न) चतुःस्तम्भस्फटिकमण्ड-पिकातलप्रतिष्ठितम्, अचिरोद्धृतैरार्द्रार्द्रं दलशिखर-गलज्जलविन्दुभिः (५) ऊर्ध्व

(ध) पादपैरिति। पादपैरुक्तविशेषणविशिष्टैस्तरुभिः परिवृतं। तस्य सरसः पश्चिमे तीरे ज्योत्स्नावत्-अवदातया शुभ्रया प्रभया निजदीप्त्या तं प्रदेशं धवलयतः धवलं कुर्वतः, चन्द्रप्रभनाम्नः कैलासपादस्य कैलास-प्रत्यन्तपर्वतस्य तलभागसन्निविष्टं अधोदेशस्थितं भगवतः शूलपाणेः शिवस्य, शून्यं लोकरहितं। लोका यत्र सिद्धिं लभन्ते तत् सिद्धायतनम्।

(न) तत्रेति। तदायतनं प्रविश्य च त्र्यम्बकमद्राक्षीदित्यन्वयः। पवनोद्धूतैर्वायुपरिचालितैः। केतकी-गर्भधूलिपटलैः केतकीकुसुमाभ्यन्तररेणुसमूहैः, धवलीक्रियमाणः कायो देहो यस्य सः, अतएव पशुपतिदर्शन-हेतोः केतकीगर्भधूलिपटलैरिव बलात् भस्मव्रतं अङ्गेषु भस्मधारणनियमं प्रतिपाद्यमानः कार्य्यमाण इव सन्। "विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया। पूजितोऽपि महादेवो न स्यात्तस्य फलप्रदः।" इत्याह्निकतत्त्व-धृतवचनतात्पर्य्यादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा तदायतनप्रवेशपुण्यैः परिरभ्यमाणः आलिङ्ग्य-मान इव च सन्। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) चतुरिति। चत्वारः स्तम्भाः स्थूणा यस्याः सा चतुःस्तम्भा या स्फटिकमण्डपिका स्फटिकमयः क्षुद्र-मण्डपस्तस्यास्तले अधोभागे प्रतिष्ठितं। त्र्यम्बकमित्यस्य विशेषणमेतत्। अचिरोद्धृतैरतएव आर्द्रार्द्रैरत्यतिशय-

জালিকগণ যেমন আপনার ক্ষমতাবলে লোকের দৃষ্টি হরণ করে, সেই বৃক্ষসমূহও তেমন সুন্দর বলিয়া নয়ন আকর্ষণ করিতেছিল; (ধ) সেই অচ্ছোদসরোবরের পশ্চিম তীরে কৈলাসপর্ব্বতের নিকট চন্দ্রপ্রভ নামে একটি ক্ষুদ্র পর্ব্বত আছে; সে, জ্যোৎস্নার ন্যায় ধবলবর্ণ স্বকীয় প্রভাদ্বারা সেই স্থানটা ধবলবর্ণ করিতেছিল; তাহার নিম্নদেশে ভগবান্ মহাদেবের সেই সিদ্ধায়তনটি ছিল, কিন্তু সেখানে জনমানব ছিল না।

(ন) চন্দ্রাপীড় যাইয়া সেই সিদ্ধায়তনে প্রবেশ করিলেন, তখন কেতকীকুসুমের ভিতরের রেণুসমূহ বায়ুবেগে চতুর্দ্দিকে বিক্ষিপ্ত হইয়া পড়িতেছিল, তাহাতেই চন্দ্রাপীড়ের শরীর ধবলবর্ণ করিয়া ফেলিল; সুতরাং বোধ হইতেছিল যে, মহাদেবের দর্শন করিবেন বলিয়াই যেন কেতকীকুসুমের রেণুগুলি তাঁহাকে বলপূর্ব্বক ভস্মধারণ করাইয়া দিতেছে এবং পবিত্র শিবালয়ে প্রবেশ করার পুণ্যেই যেন আলিঙ্গন করিতেছে। (প) তাহার পরে দেখিতে পাইলেন—চারিটি স্তম্ভের উপরে স্ফটিকময় একখানি ক্ষুদ্র মণ্ডপ, তাহার নীচে, সমস্ত

(१) मूलतल···। (२) क्वचित् शून्यमिति न दृश्यते।
(३) पवनोद्धूतैः। (४)...धूलिभिः। (५) आर्द्रार्द्रदल..., आर्द्रार्द्रशिखर...।

विपाटित-चन्द्रबिम्बदलैरिव निजाट्टहासावयवैरिव शेषफणाशकलैरिव पाञ्चजन्य-सहोदरैरिव क्षीरोदहृदयाकारैरुपपादितमौक्तिकमुकुटविभ्रमैः शुचिभिर्मन्दाकिनीपुण्डरीकैः कृतार्चनम्, अमलमुक्ताशिलाघटितलिङ्गम्, अशेषत्रिभुवनवन्दितचरणम्, चराचरगुरुं चतुर्मुखं भगवन्तं त्र्यम्बकम्। (प)

तस्य च दक्षिणां मूर्त्तिमाश्रित्याभिमुखीमासीनाम्, (१) (फ) उपरचित-

---

छिद्रेभ्यः दलशिखरेभ्यः पतायेभ्यः गलन्तो जलबिन्दवो येषां तैः, अतएव च ऊर्द्ध उपरिभागे विपाटितस्य विदारितस्य चन्द्रबिम्बस्य दलैः खण्डैरिव स्थितैः, तेभ्योऽप्यमृतबिन्दुक्षरणादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। निजस्य शिवसम्बन्धिनः अट्टहासस्य अवयवैरिव। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। शेषस्य अनन्तनागस्य फणानां शकलैः खण्डैरिव, तेषामपि शुभ्रत्वादर्द्धुलाकारत्वाच्चेति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। पाञ्चजन्यः कृष्णस्य शङ्खस्तस्य सहोदरैर्भ्रातृभिरिव, शुभ्रत्ववर्त्तुलत्वसाम्यादिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। क्षीरोदस्य सागरस्य हृदयाकारैः हृत्पुण्डरीकतुल्यैः, समानशुभ्रत्वादिति भावः। अत्र आर्थोपमालङ्कारः। तथा उपपादितो द्रष्टॄणां विहितो मौक्तिकमुकुटविभ्रमः खेषु मुक्तामयकिरीटभ्रान्तिर्यैस्तैः। अत्र भ्रान्तिमानलङ्कारः। शुचिभिः पवित्रैः मन्दाकिनीपुण्डरीकैः स्वर्गगङ्गाजातश्वेतपद्मैः, कृता अर्चना पूजा यस्य तम्। अमलया मुक्ताशिलया मौक्तिकतुल्यश्वेतप्रस्तरेण घटितं निर्म्मितं लिङ्गमाकृतिर्यस्य तम्। त्र्यम्बकं शिवं। "तदूर्द्ध भागः सञ्जातश्चतुर्वक्त्रश्चतुर्भुजः। पद्मकेशरगौराङ्गकायो ब्रह्मा महेश्वरः" इति कालिकापुराणीयद्वादशाध्यायवचनात् शिवस्य चतुर्मुखमूर्त्तिरपि प्रमेया। केचित्तु एतद्वचनानवलोकनेन समाधानाय समाकुलाः सन्तो मोहविजृम्भितमनेकविधमेव प्रलपितवन्तः।

(फ) तस्येति। किञ्च तस्य त्र्यम्बकस्य दक्षिणां दक्षिणाभिमुखीं मूर्त्तिं आश्रित्य लक्षीकृत्य अभिमुखीमासीनां तत्सम्मुखे उत्तरमुखीं सतीमुपविष्टां, प्रतिपन्नपाशुपतव्रतां कन्यकां ददर्शेति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपदानि कन्यकामित्यस्य विशेषणानि।

(ब) उपेति। उपचरितं कृतं ब्रह्मण आसनमिव आसनं यया तां, पद्मासनोपविष्टामित्यर्थः।

त्रिভুবনের লোক যাঁহার চরণযুগলের সেবা করে এবং যিনি চরাচর জগৎসংসারের গুরু, সেই ভগবান্ মহাদেবের নির্ম্মল মুক্তার ন্যায় শ্বেতবর্ণ প্রস্তরদ্বারা নির্ম্মিত চতুর্মুখ একখানি মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে, স্বর্গগঙ্গা হইতে অনতিপূর্ব্বে উদ্ধৃত পবিত্র কতকগুলি শ্বেতপদ্ম-দ্বারা কেহ তাঁহার পূজা করিয়াছে, অত্যন্ত আর্দ্র সেই পদ্মগুলির দলাগ্র হইতে জলবিন্দু পড়িতেছে; উপরিভাগ বিদারিত হইলে চন্দ্রমণ্ডলের খণ্ডসমূহের ন্যায়, শিবের অট্টহাস্যের অংশসমূহের ন্যায়, অনন্তনাগের ফণাখণ্ডগুলির ন্যায় পাঞ্চজন্য শঙ্খের সহোদরগণের ন্যায় এবং ক্ষীরোদসাগরের হৃৎপদ্মের ন্যায় সেই শ্বেতপদ্মগুলিকে দেখা যাইতেছিল; আর সেই পদ্মগুলি মুক্তাময় মুকুটের ভ্রম জন্মাইতেছিল।

(ফ) চন্দ্রাপীড় আরও দেখিতে পাইলেন যে, সেই দক্ষিণাভিমুখী শিবমূর্ত্তির সম্মুখে

---

(१) अभिमुखमासीनां।

ब्रह्मासनाम्, (ब) अतिविस्तारिणा सर्वदिङ्मुखप्लावकेन प्रलय-परिप्लुत-(१) क्षीरपयोधि-पूर-पाण्डुरेण (२) अतिदीर्घकालसञ्चितेन तपोराशिनेव सर्वतो विसर्पता (३) पादपान्तरैस्त्रिस्रोतोजलनिभेन पिण्डीभूय वहतेव देहप्रभावितानेन सगिरिकाननं चन्द्रमयमिव (४) तं प्रदेशं कुर्वतीम्, (भ) अन्यथैव धवलयन्तीं कैलासगिरिम्, (म) अन्तर्द्रष्टुरपि लोचनपथप्रविष्टेन (५) श्वेतिमानमिव मनो नयन्तीम्, (य) अतिधवलप्रभापरिगतदेहतया स्फटिक-गृहगतामिव दुग्धसलिलमग्नामिव विमलचीनांशुकान्तरितामिव (६) आदर्शतल-

(भ) अतीति। प्रलयकाले परिप्लुतस्य उद्वेलितस्य क्षीरपयोधेः पूरवत् प्रवाहवत् पाण्डुरेण शुभ्रवर्णेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। सर्वतो विसर्पता समन्तात् प्रसरता, अतिदीर्घकालसञ्चितेन तपोराशिनेव स्थितेन। अत्र तपसो वैधर्म्ये शुक्लत्वेन गुणत्वादगुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। त्रिस्रोतसो मन्दाकिन्या जलनिभेन। अत्र आर्थी-पमालङ्कारः। पादपान्तरैः शाखानामन्तरालदेशैः पिण्डीभूय प्रसरणे इच्छैः प्रतिबन्धकतावरणात् परस्परसम्मिश्री-भूय वहतेव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। देहस्य प्रभावितानेन दीप्तिपरम्परया सगिरिकाननं तं प्रदेशं चन्द्रमयमिव कुर्वतीम्, तत्प्रभायाः शुभ्रत्वादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कार उक्तपूर्वालङ्कारैः सङ्कीर्यते।

(म) अन्यथेति। अन्यथा अन्येन प्रकारेणैव देहप्रभयैव कैलासगिरिं धवलयन्तीं स्वतो धवलमपि पुनः कृत्रिमधवलं कुर्वतीमिव स्थिताम्। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अन्तरिति। द्रष्टुरपि जनस्य अन्तर्देहाभ्यन्तरे लोचनपथप्रविष्टेन देहप्रभावितानेन मनः श्वेति-मानं धावल्यं नयन्तीं प्रापयन्तीमिव स्थिताम्, दर्शनमात्रेण द्रष्टुर्मनसोऽपि सत्त्वोद्रेक प्रसन्नत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) अतीति। अतिधवलया प्रभया परिगतः परिवेष्टितो देहो यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना।

একটি কন্যা উত্তরমুখী হইয়া বসিয়া রহিয়াছে; (ব) সে পদ্মাসন করিয়া বসিয়াছিল; (ভ) তাহার দেহের কান্তিপ্রবাহ অতিবিস্তৃতভাবে নির্গত হইয়া সকলদিক্ প্লাবিত করিতে-ছিল, প্রলয়কালীন উদ্বেলিত ক্ষীরোদসাগরের প্রবাহের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ছিল, সর্ব্বদিগ্‌ব্যাপী দীর্ঘকালসঞ্চিত তপস্যারাশির ন্যায় বিরাজ করিতেছিল এবং মন্দাকিনীর জলপ্রবাহের ন্যায় গাছের ভিতর দিয়া একত্র মিলিত হইয়া বহিত হইতেছিল; এইরূপ দেহের প্রভাদ্বারা সে, যেন পর্ব্বত ও বনের সহিত সেই স্থানটা সম্পূর্ণ চন্দ্ররশ্মিময় করিতেছিল; (ম) কৈলাস-পর্ব্বতকে অন্য রকমেই যেন ধবলবর্ণ করিতেছিল; (য) সেই কন্যাটিকে দেখিবামাত্রই তাহার দেহের কান্তিপ্রবাহ, দ্রষ্টার নয়নপথে ভিতরে প্রবেশ করিয়াই যেন মনপর্য্যন্ত শুভ্রবর্ণ করিতেছিল; (র) অত্যন্ত ধবলবর্ণ প্রভাপুঞ্জে তাহার দেহখানি পরিবেষ্টিত ছিল বলিয়া

(१)...विप्लुत...। (२)...पयःपूरपाण्डरेण। (३) क्वचित् सर्वत इति नास्ति।
(४) दन्तमयमिव। (५) लोचनपथं प्रविश्य,...प्रविष्टेन। (६)...चीनांशुकान्तरितामिव।

संक्रान्तामिव शरदभ्रपटलतिरस्कृतामिव अपरिस्फुट-(१) विभाव्यमानावयवाम्, (र) पञ्चमहाभूतमयमपहाय द्रव्यात्मकमङ्ग-(२) निष्पादनोपकरणकलापं धवलगुणेनैव केवलेनोत्पादिताम्, (ल) दक्षाध्वर-(३) क्रियामिवोद्धत-(४) प्रमथ-कच-ग्रह-भयोपसेवित-त्र्यम्बकाम्, (व) निरन्तरभस्मोद्धुलनसिताङ्गीं (५) रतिमिव मदनदेहनिमित्तं हरप्रसादनार्थमागृहीतहराराधनाम्, (श) क्षीरो-

विमलेन चीनांशुकेन अन्तरितामावृतामिव। आदर्शतले दर्पणे संक्रान्तां प्रतिविम्बितामिव। तथा शरदः कालस्य अभ्रपटलेन अर्थाद्धवलेन मेघसमूहेन तिरस्कृतामावृतामिव अतएव प्रभावरणादपरिस्फुटं अस्पष्टं यथा स्यात्तथा विभाव्यमाना लक्ष्यमाणा अवयवा अङ्गप्रत्यङ्गानि यस्यास्ताम्। अत्र पञ्चानां क्रियोत्प्रेक्षाणां परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ल) पञ्चेति। पञ्चमहाभूतमयं क्षित्यप्तेजोमरुद्व्योमस्वरूपं द्रव्यात्मकं अङ्गनिष्पादनोपकरणकलापं शरीरनिर्माणसामग्रीसमूहं अपहाय विधाता केवलेन एकेन धवलगुणेन उत्पादितां सृष्टामिव, क्षित्यादिसामग्रीजन्यत्वे तु तद्गुणानां कृष्णपीतादीनामप्यत्र सम्मिश्रणेन ईदृशकेवलधावल्यासम्भवादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। द्रव्याणां नवविधत्वात् पञ्चमहाभूतमयमिति, भूतशब्दस्य च सत्याद्यर्थस्यापि वाचकत्वात् द्रव्यात्मकमिति नापुष्टार्थत्वदोष इति संक्षेपः।

(व) दक्षेति। उद्धतैरुल्लङ्घितैर्येः प्रमथगणैर्यः कचग्रहः केशाकर्षणं तस्माद्भयेन उपसेवितः परित्राणार्थमाश्रितस्त्र्यम्बकः शिवो यया तां, दक्षस्य प्रजापतेरध्वरक्रियां यज्ञकार्यमिव स्थिताम्, तस्या अपि महापुरुषरूपत्वेन श्वेतत्वादिति भावः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। पुरा किल दक्षप्रजापतिना शिवापमानार्थमेवानुष्ठीयमाने यज्ञे स भगवान्नाहूत इति तत्प्रमथाः समागत्य तं यज्ञं विध्वंसयामासुरिति भागवतादिवार्त्ता।

(श) निरन्तरेति। मदनदेहनिमित्तं पुनरपि पत्युः कन्दर्पस्य देहलाभार्थं यत् हरस्य प्रसादनं तदर्थं आगृहीतहराराधनां आरब्धशिवोपासनां अतएव निरन्तरभस्मोद्धूलनेन सिताङ्गीं रतिमिव स्थिताम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा हरपदस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च आगृहीततदाराधनामिति पाठेन समाधेयः।

অঙ্গ-প্রত্যঙ্গগুলি স্পষ্টভাবে দেখা যাইতেছিল না; সুতরাং সে, যেন স্ফটিকময় গৃহের ভিতরে ছিল, দুগ্ধমিশ্রিত জলে নিমগ্ন ছিল, নির্ম্মল চীনদেশীয় বস্ত্রদ্বারা আবৃত ছিল, দর্পণের ভিতরে প্রতিবিম্বিত হইয়াছিল এবং শরৎকালীয় মেঘসমূহে আচ্ছাদিত ছিল বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল; (ল) বিধাতা, পঞ্চমহাভূতস্বরূপ দ্রব্যাত্মক শরীরনির্ম্মাণোপযোগী সামগ্রীসমূহ পরিত্যাগ করিয়া কেবল ধবলগুণদ্বারাই যেন তাহাকে নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন; (ব) উদ্ধতস্বভাব প্রমথগণকর্ত্তৃক কেশাকর্ষণের ভয়ে দক্ষের যজ্ঞক্রিয়া যেন আত্মরক্ষার নিমিত্ত আসিয়া শিবের আশ্রয় লইয়াছিল; (শ) পুনরায় কামদেবের দেহলাভের নিমিত্ত শিবকে প্রসন্ন করিবার

(१) परिस्फुट...। (२)...मङ्गल...। (३) अध्वर...। (४) उद्धत...। (५) क्वचिदयं पाठो नास्ति।

दधि-(१) देवतामिव सहवास-परिचित-हर-चन्द्रलेखोत्कण्ठाकृष्टाम्, (२) (घ) इन्दुमूर्त्तिमिव स्वर्भानु-भय कृत-त्रिनयन-शरण-गमनाम्, (३) (ङ) ऐरावत-देहच्छविमिव गजाजिनावगुण्ठनोत्कण्ठित-शितिकण्ठचिन्तितोपनताम्, (छ) पशुपति-दक्षिण-मुख-हास-च्छविमिव बहिरागत्य (४) कृतावस्थानाम्, (ज) शरीरिणीमिव रुद्रोद्धूलनभूतिं (५) आविर्भूताम्, (झ) ज्योत्स्नामिव हरकण्ठा-

---

(घ) क्षीरोदेति। सहवासेन एकक्षीरोदसागरे मथनात् पूर्व्वमवस्थानेन परिचिता या हरस्य ललाटस्था चन्द्रलेखा तस्या उत्कण्ठया आकृष्टां क्षीरोदस्य अधिदेवतां अधिष्ठात्रीं देवीमिव, निरतिशय-शुभ्रक्षीरोदाधिष्ठातृत्वात्तस्या अपि निरतिशयशुभ्रत्वसम्भवादिति भावः। अत्रापि द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) इन्द्विति। स्वर्भानोराहोर्भयेन कृतं त्रिनयनस्य शिवस्य शरणगमनं यया तां इन्दोश्चन्द्रस्य मूर्त्ति-मिव। द्रव्योत्प्रेक्षा।

(च) ऐरेति। गजाजिनस्य हस्तिचर्म्मणः अवगुण्ठने परिधाने उत्कण्ठितो गजाजिनप्रियत्वादुत्सुको यः शितिकण्ठः शिवस्तेन चिन्तिता अनन्तरमेव उपनता उपस्थिता तां, ऐरावतस्य देवराजशुभ्रहस्तिनः देहच्छविं शरीरकान्तिमिव स्थिताम्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) पश्विति। बहिरागत्य कृतावस्थानां, पशुपतेः शिवस्य दक्षिणमुखे तत्पुरुषाख्ये अतिशुभ्रे खल्वा-हृषितदिग्वर्त्तिवदने यो हासो हास्यं तस्य छविं कान्तिमिव। अत्रापि गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ज) शरीरेति। शरीरिणीं स्त्रीमूर्त्तिधारिणीं सतीमाविर्भूतां रुद्रस्य शम्भोः उद्धूलनभूतिमिव अङ्ग-मर्द्दनवेलायां धूलीभूय प्रसृतदेहभस्मेव। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(झ) ज्योत्स्नामिति। हरस्य नीलकण्ठस्य शिवस्य कण्ठे योऽन्धकारः अन्धकारतुल्यनीलवर्णस्तस्य

জন্য রতিদেবী যেন তাঁহার আরাধনায় প্রবৃত্ত হইয়া সর্ব্বদা ভস্মে লুণ্ঠন করায় শ্বেতাঙ্গী হইয়া সেখানে রহিয়াছিলেন; (ঘ) পূর্ব্বে একত্র বাস করায় পরিচিত শিবের ললাটস্থ চন্দ্রকলার সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত উৎকণ্ঠাতে আকৃষ্ট হইয়াই যেন ক্ষীরোদসাগরের অধিষ্ঠাত্রী দেবী আসিয়া বসিয়াছিলেন; (ঙ) রাহুর ভয়ে মহাদেবের শরণাপন্ন চন্দ্রমূর্ত্তির ন্যায় তাঁহাকে দেখা যাইতেছিল; (চ) হস্তীর চর্ম্ম পরিধান করিবার নিমিত্ত উৎকণ্ঠিত হইয়া মহাদেব চিন্তা করিলে আপনিই উপস্থিত ঐরাবতহস্তীর দেহপ্রভার ন্যায় সে বিরাজ করিতেছিল; (ছ) মহাদেবের হাস্যের শোভা যেন বাহিরে আসিয়া অবস্থান করিতেছিল; (জ) অঙ্গ-মর্দ্দন করিবার সময়ে শিবের অঙ্গের ভস্মরেণুগুলি যেন স্ত্রীমূর্ত্তি ধারণ করিয়া আবির্ভূত হইয়াছিল; (ঝ) মহাদেবের কণ্ঠদেশের নীলবর্ণ দূর করিবার চেষ্টা করার জন্য তাঁহারই কণ্ঠের

---

(१) क्षीरोदधि...। (२)...लेखोत्कण्ठाम्।
(३)...शरणागमनाम्। (४) बहिर्निर्गत्य, इव निर्गत्य। (५)...विभूतिं।

न्धकारविघट्टनोद्यमप्राप्ताम्, (ख) गौरीमनःशुद्धिमिव (१) कृतदेहपरिग्रहाम्, (ग) कार्त्तिकेय-कौमारव्रतक्रियामिव मूर्त्तिमतीम्, (घ) गिरीश-(२) वृषभ-देह-द्युतिमिव पृथगवस्थिताम्, (ङ) आयतन-तरु-कुसुम-समृद्धिमिव शङ्कराभ्यर्चनाय स्वयमुद्यताम्, (च) पितामहतपःसिद्धिमिव महीतलमवतीर्णाम्, (छ) आदियुगप्रजापतिकीर्त्तिमिव सप्तलोकभ्रमणखेदविश्रान्ताम्, (ज) त्रयीमिव कलियुग-ध्वस्त-धर्म्म-शोक-गृहीत-वनवासाम्, (झ) आगामिकृत-युग-वीजकला-

---

विघट्टनोद्यमेन स्वयमपसारणारम्भेन प्राप्तां तत्कण्ठ एव उपस्थितां ज्योत्स्नां कान्तिमिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) गौरीति। कृतदेहपरिग्रहां गौर्य्याः सतीशिरोमणिभूतायाः पार्व्वत्याः मनसः शुद्धिं पवित्रतामिव। अत्रापि गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) कार्त्तीति। मूर्त्तिमतीं कार्त्तिकेयस्य कौमारव्रतक्रियां ब्रह्मचर्य्यनियमानुष्ठानमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। पापस्य मलिनतया वर्णनीयत्वात्तद्विपरीतस्य पुण्यस्य तु शुभ्रतयैव वर्णनौचित्याद्वैसुक्तिरिति बोध्यम्। एवमन्यत्रापि।

(ङ) गिरीशेति। पृथगवस्थितां गिरीशवृषभस्य शिववृषभस्य देहद्युतिमिव। गुणोत्प्रेक्षा।

(च) आयतनेति। शङ्करस्य अभ्यर्चनाय स्वयमुद्यतां आत्मनैवोद्युक्तां, आयतनस्य तस्यैव सिद्धायतनस्य तरुकुसुमानां समृद्धिं राशिमिव। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) पितेति। महीतलमवतीर्णां पितामहस्य ब्रह्मणस्तपःसिद्धिमिव। गुणोत्प्रेक्षा।

(ज) आदीति। सप्तसु लोकेषु भूरादिषु भ्रमणेन पर्य्यटनेन यः खेदः परिश्रमस्तेन विश्रान्तां तत्र कृतविश्रामां, आदियुगे सत्ययुगे प्रजापतेर्ब्रह्मणो या कीर्त्तिः सृष्टिप्रशंसा तामिव। गुणोत्प्रेक्षा।

(झ) त्रयीमिति। कलियुगेन ध्वस्तो विनष्टो यो धर्म्मस्तस्य शोकेन गृहीतवनवासां त्रयीं ऋग्यजुःसामात्मकं वेदत्रयमिव। गुणोत्प्रेक्षा।

প্রভা যেন বাহির হইয়া রহিয়াছিল; (গ) পার্ব্বতীর মনের পবিত্রতা যেন শরীর ধারণ করিয়া অবস্থান করিতেছিল; (ঘ) কার্ত্তিকের ব্রহ্মচর্য্যানুষ্ঠান যেন মূর্ত্তিমান্ হইয়া বিরাজ করিতেছিল; (ঙ) শিবের বৃষটার দেহের প্রভা যেন পৃথক্ হইয়া অবস্থান করিতেছিল; (চ) সেই সিদ্ধায়তনস্থ বৃক্ষসমূহের পুষ্পগুলি যেন শিবের পূজা করিবার নিমিত্ত আপনা আপনিই উদ্যত হইয়াছিল; (ছ) ব্রহ্মার তপস্যাসিদ্ধি যেন ভূতলে অবতীর্ণ হইয়া সেই স্থানে অবস্থান করিতেছিল; (জ) সত্যযুগে ব্রহ্মার যে কীর্ত্তি জন্মিয়াছিল, সে, যেন সপ্তলোক পরিভ্রমণ করিয়া পরিশ্রমবশতঃ সেই স্থানে আসিয়া বিশ্রাম করিতেছিল; (ঝ) কলিযুগের প্রভাবে ধর্ম্ম বিনষ্ট হওয়ায় সেই শোকে বেদ যেন বন-বাস অবলম্বন করিয়া সেই স্থানে

---

(१) गौरीतपःसिद्धिमिव। (२) गिरीश...।

मिव प्रमदारूपेणावस्थिताम्, (ञ) देहवतीमिव मुनिजन-ध्यानसम्पदम्, (ट) अमर-गज-वीथिमिवाभ्रगङ्गाभ्यागम-वेगपतिताम्, (ठ) कैलासश्रियमिव दश-मुखोन्मूलन-क्षोभ-निपतिताम्, (ड) श्वेतद्वीप-लक्ष्मीमिवान्यद्वीपावलोकन-(१) कुतूहलागताम्, (ढ) काशकुसुमविकाशकान्तिमिव शरत्समयमुदीक्ष-माणाम्, (ण) शेषशरीरच्छायामिव रसातलमपहाय निर्गताम्, (त) मुषला-युधदेहप्रभामिव मधुमदविघूर्णनायासविगलिताम्, (थ) शुक्लपक्षपरम्परामिव

(ञ) आगामीति। प्रमदारूपेण स्त्रीभावेनावस्थितां, आगामिनो भविष्यतः कृतयुगस्य सत्ययुगस्य बीज-कलामिव उपादानमात्रामिव, सत्ययुगस्य धर्म्ममयत्वेन शुभ्रत्वात्तदुपादानकारणस्यापि शुभ्रत्वमिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ट) देहेति। देहवतीं मुनिजनानां ध्यानसम्पदमिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) अमरेति। अभ्रगङ्गाया मन्दाकिन्याः अभ्यागमस्य तत्रोपस्थितेर्वेगेन पतितां स्वर्गाच्च्युतां अमरगजानामैरावतादीनां वीथिं श्रेणिमिव, तस्यातीवशुभ्रत्वादिति भावः। वस्तुतः समूहसमूहिनोरभेदेऽपि स्त्रीरूपभेदमभिप्रेत्येदमभिहितमिति बोध्यम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ड) कैलासेति। दशमुखस्य रावणस्य उन्मूलनेन उत्पाटनेन यः क्षोभः सञ्चलनं तेन निपतितां, कैलासस्य श्रियं शोभामिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) श्वेतेति। अन्येषां द्वीपानामवलोकनकुतूहलेनागतां श्वेतद्वीपस्य लक्ष्मीं कान्तिमिव। गुणोत्-प्रेक्षा।

(ण) काशेति। शरत्समयमुदीक्षमाणां प्रतीक्षमाणां काशकुसुमानां विकाशकान्तिमिव। गुणोत्प्रेक्षा।

(त) शेषेति। रसातलमपहाय निर्गतां, शेषस्य अनन्तनागस्य शरीरच्छायां देहकान्तिमिव, अनन्त-नागस्यापि शुभ्रत्वादिति भावः। गुणोत्प्रेक्षा। "छाया सूर्य्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः।" इत्यमरः।

(थ) मुषलेति। मधुमदेन मद्यपानजनितमत्ततया यद्विघूर्णनं तदायासेन विगलितां देहाच्च्युतां मुषलायुधस्य बलरामस्य देहप्रभामिव, तस्याः अपि शुभ्रत्वात्। गुणोत्प्रेक्षा।

অবস্থান করিতেছিল; (ঞ) আগামী সত্যযুগের বীজের অংশ যেন স্ত্রীরূপে অবস্থান করিতেছিল; (ট) মুনিগণের ধ্যানসম্পত্তি যেন মূর্ত্তিমতী হইয়া রহিয়াছিল; (ঠ) দেব-হস্তীর শ্রেণী যেন আকাশগঙ্গার আগমনের বেগে পড়িয়া গিয়াছিল; (ড) কৈলাসপর্ব্বতের শোভা যেন রাবণকর্ত্তৃক উন্মূলনের বেগে নিপতিত হইয়াছিল; (ঢ) শ্বেতদ্বীপের কান্তি যেন অন্যান্য দ্বীপ দর্শন করিবার কৌতুকে আসিয়াছিল; (ণ) কাশ-(কেশে) পুষ্পের বিকাশশোভা যেন শরৎকালের প্রতীক্ষা করিতেছিল; (ত) অনন্তনাগের দেহের শোভা যেন পাতাল ত্যাগ করিয়া নির্গত হইয়াছিল; (থ) বলরামের শরীরের কান্তি যেন মত্ত-

(१) अन्यद्वीपान्तरावलोकन...।

पुञ्जीकृताम्, (द) सर्वहंसैरिव धवलतया कृतसंविभागाम्, (ध) धर्म्म-हृदयादिव विनिर्गताम्, (१) शङ्खादिवोत्कीर्णाम्, मुक्ताफलादिवाकृष्टाम्, मृणालैरिव विरचितावयवाम्, दन्तदलैरिव घटिताम्, इन्दुकरकूर्च्चकैरिव प्रक्षालिताम्, (२) वर्णसुधाच्छटाभिरिव च्छुरिताम्, (३) अमृतफेनपिण्डैरिव पाण्डुरीकृताम्, पारदरसधाराभिरिव धौताम्, रजतद्रवेणेव निर्म्मृष्टाम्, चन्द्रमण्डलादिवोत्कीर्णाम्, कुटज-कुन्द-सिन्धुवार-(४) कुसुम-च्छविभिरिवोल्लासिताम्, (न) इयत्तामिव धवलिम्नः, (प) स्कन्धावलम्बिनोभिरुदयतटगतादर्क-(५) बिम्बादु-

(द) शुक्लेति। पुञ्जीकृतां विधात्रा स्तूपीकृतां शुक्लपक्षाणां परम्परां राजिमिव। पक्षाणां कालत्वेन द्रव्यत्वादत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ध) सर्वेति। सर्वहंसैः धवलतया स्वस्वशुभ्रतागुणेन करणेन कृतः संविभागः विभज्य प्रतिपादनं यस्यै तां समर्पितस्वस्वशुभ्रतामिवेत्यर्थः। अत्र विभागकरणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) धर्म्मेति। धर्म्मस्य हृदयाद्विनिर्गतामिव। शङ्खादुत्कीर्णामिव। शङ्खं निखाय बहिष्कृतामिव। मुक्ताफलान्मौक्तिकात् आकृष्टामाविर्भावितामिव। मृणालैर्विरचितावयवां निर्म्मिताङ्गीमिव। दन्तदलैर्हस्तिदन्तखण्डैः घटितां निर्म्मितामिव। इन्दुकराश्चन्द्ररश्मय एव कूर्चकास्तूलिकास्तैः प्रक्षालितां परिष्कृत्य धौतामिव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। वर्णसुधानां शुक्लताविधायकसुधाख्यलेपनद्रव्याणां छटाभिः समूहैः छुरितां लिप्तामिव। पारदरसस्य पारदद्रवस्य धाराभिर्धौतामिव। अत्र पारदरसशब्दयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः परन्तु रसशब्दस्य द्रवार्थे पर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। रजतद्रवेण रौप्यरसेन निर्म्मृष्टां परिमृष्टामिव। उल्लासितां परिशोभिताम्। एषासुक्तेतरत्र प्रत्येकविशेषणे क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) इयत्तामिति। धवलिम्नः शुभ्रतायाः इयत्तां चरमसीमामिव। गुणोत्प्रेक्षा।

পানের মত্ততাবশতঃ তাঁহার ঘূর্ণন করায় পরিশ্রমে পড়িয়া গিয়াছিল; (দ) বিধাতা শুক্লপক্ষশ্রেণীকে যেন পুঞ্জীভূত করিয়া রাখিয়াছিলেন; (ধ) সকল হংসগণ যেন স্ব স্ব ধবলগুণ তাহাকে বিভক্ত করিয়া দিয়াছিল; (ন) সে যেন ধর্ম্মের হৃদয় হইতে নির্গত হইয়াছিল; বিধাতা যেন তাহাকে শঙ্খ খোদিত করিয়া বাহির করিয়াছিলেন, মুক্তা হইতেই যেন নিষ্কাশিত করিয়াছিলেন, মৃণালদ্বারাই যেন তাহার অঙ্গগুলি নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন, গজ-দন্ত-খণ্ডদ্বারাই যেন গড়াইয়াছিলেন, চন্দ্রকিরণরূপ কুঁচোদ্বারাই যেন প্রক্ষালন করিয়া পরিষ্কার করিয়া দিয়াছিলেন, চূর্ণলেপদ্বারাই যেন লেপিয়া দিয়াছিলেন, অমৃতের ফেনপুঞ্জদ্বারাই যেন শুভ্রবর্ণ করিয়াছিলেন, পারার রসের ধারাতেই যেন ধুইয়া দিয়াছিলেন, রূপার রসেই যেন মাজিত করিয়াছিলেন, চন্দ্রমণ্ডল হইতেই যেন খোদিত করিয়া বাহির করিয়াছিলেন এবং কুটজ, কুন্দ ও নিসিন্দা ফুলের প্রভাদ্বারাই যেন শোভিত করিয়া দিয়াছিলেন; (প) আর

(१) निर्गतां, उद्गतां। (२) आक्षालितां। (३) आच्छुरितां। (४)...सिन्दुवार...। (५)...गतार्क...।

हृत्य बालरश्मिप्रभाभिरिव निर्म्मिताभिरुन्मिषत्तड़ित्तरल-(१) तेजस्ताम्राभिरचिरस्नानावस्थित-विरल-वारि-कणतया प्रणाम-लग्न-पशुपति-चरण-भस्म-चूर्णाभिरिव जटाभिरुद्भासितशिरोभागाम्, (फ) जटापाश-ग्रथितमुत्तमाङ्गेन मणिमयं नामाङ्कमीश्वर-चरणद्वयमुद्वहन्तीम्, (ब) रवि-रथ-तुरग-खुर-मुख-क्षुण्ण-(२) नक्षत्र-क्षोद-विशदेन भस्मनालङ्कृत-(३) ललाटपट्टिकाम्, शिखर-शिलाश्लिष्ट-शशाङ्ककलामिव शैलराजमेखलाम्, (भ) अतुलभक्तिप्रसाधितया लक्ष्यीकृतलिङ्गया

(फ) स्कन्धेति उदयतटगतादुदयाचलप्रदेशस्थितात् अर्कबिम्बात् सूर्य्यमण्डलात् उद्धृत्य बालरश्मिप्रभा एव उत्तोल्य ताभिर्बालरश्मिप्रभाभिर्नूतनकिरणदीप्तिभिः करणैः विधात्रा निर्म्मिताभिरिव स्थिताभिः, उन्मिषन्ती प्रकाशमाना या तड़ित् विद्युत् तस्या यत्तरलं तेजस्तद्वत्ताम्राभिस्ताम्रवर्णाभिः, तथा अचिरकालेन अवस्थिताः विरला अल्पाल्पा वारिकणा यासु तासां भावस्तया हेतुना प्रणामे नमस्कारसमये लग्नानि पशुपतेः शिवस्य चरणभस्मचूर्णानि यासु ताभिरिव स्थिताभिर्जटाभिः उद्भासितः शोभितः शिरोभागो यस्यास्ताम्। अत्र उद्धृत्यादौ क्रियोत्प्रेक्षा, उन्मिषदित्यादौ लुप्तोपमा, प्रणामेत्यादौ च क्रियोत्प्रेक्षा, इत्यासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ब) जटेति। उत्तमाङ्गेन मस्तकेन, जटापाशग्रथितं मणिमयं मणिनिर्म्मितं नाम्नः शिवनाम्नः अङ्कश्चिह्नं यत्र तादृशं, ईश्वरस्य शिवस्य चरणद्वयं पदद्वयप्रतिमां उद्वहन्तीं भक्तिभरेण धारयन्तीम्।

(भ) रवीति। रविरथस्य तुरगाणामश्वानां खुरमुखैः खुराग्रभागैः क्षुण्णानां विदारितानां नक्षत्राणां क्षोदवच्चूर्णवत् विशदेन शुभ्रेण भस्मना भस्मकृततिलकेन अलङ्कृतः ललाटपट्टो भालफलकं यस्यास्ताम्, अतएव शिखरशिलया मध्यभागस्थप्रस्तरेण आश्लिष्टा धृता शशाङ्ककला चन्द्ररेखा यस्यास्तां शैलराजस्य हिमालयस्य मेखलां नितम्बं मध्यभागमिव स्थिताम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं तथा चन्द्रकलया सह भस्मतिलकस्य, शुभ्रशिलया सह ललाटपट्टस्य, मेखलया च सह कन्यायाः साम्यमिति द्रव्योत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

তাহাকে যেন শুভ্রবর্ণের চরম সীমা বলিয়া বোধ হইতেছিল; (ফ) দেদীপ্যমান বিদ্যুতের তরল তেজের ন্যায় তাম্রবর্ণ এবং স্কন্ধপর্য্যন্ত পতিত কতকগুলি জটাদ্বারা, তাহার মস্তক পরিশোভিত ছিল; বিধাতা, উদয়াচলগত সূর্য্যমণ্ডল হইতে নূতন কিরণ বাহির করিয়া তাহার দীপ্তিদ্বারাই যেন সেই জটাগুলিকে নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন, এবং অনতিপূর্ব্বে স্নান করায় তখনও জটাগুলির উপরে অল্প অল্প জলবিন্দু ছিল, সুতরাং প্রতীতি হইতেছিল যেন, সে প্রণাম করিবার সময়ে শিবের চরণের ভস্ম-রেণুগুলি জটার উপরে লাগিয়া রহিয়াছে; (ব) এবং সে মস্তকে শিব-নামাঙ্কিত মণিময় দুখানি শিবের চরণ, জটাতে বন্ধন করিয়া ধারণ করিতেছিল; (ভ) সূর্য্যের রথে নিযুক্ত ঘোটকগণের খুরাগ্রের আঘাতে চূর্ণীকৃত-নক্ষত্রচূর্ণের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ভস্মের তিলকে তাহার ললাটদেশ অলঙ্কৃত ছিল; সুতরাং শৃঙ্গের প্রস্তরের উপরে চন্দ্রকলা সংলগ্ন হইলে হিমালয়ের মেখলার ন্যায় তাহাকে দেখা

---

(१)...तड़िच्चञ्चलतरल...। (२)...तुरङ्गखुरक्षुण्ण...। (३) कृत...।

द्वितीययेव (१) पुण्डरीकमालया दृष्ट्या सम्भावयन्तीं भूतनाथम्, (म) अनवरत-गीत-परिस्फुरिताधरपुटवशात् (२) अतिशुचिभिः शुद्धहृदयमयूखैरिव गीतगुणैरिव स्वरैरिव स्तुतिवर्णैरिव मूर्त्तिमद्भिर्मुखान्निष्पतद्भिर्दशनांशुभिः पुनरिव स्नपयन्तीं गौरीपतिम्, (३) (य) अतिविमलैश्च वेदार्थैरिव साक्षात् पितामहमुखादाकृष्टैः, गायत्रीवर्णैरिव ग्रथिततां-(४) उपगतैः, नारायणनाभिपुण्डरीकवीजैरिवोद्धृतैः, सप्तर्षिभिरिव कर-(५) स्पर्शपूतमात्मानमिच्छद्भिस्तारकारूपेणा-

(म) अतुलेति। अतुलया निरुपमया भक्त्या प्रसाधिता प्रसन्नताजननेनालङ्कृता तया, लक्ष्यीकृतं विषयीकृतं लिङ्गं शिवमूर्त्तिर्यया तया, द्वितीयया पुण्डरीकमालयेव श्वेतपद्मश्रेण्येव स्थितया, दृष्टेरपि श्वेतत्वादिति भावः, दृष्ट्या भूतनाथं शिवं सम्भावयन्तीं सादरमवलोकयन्तीम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अनेति। अनवरतं गीतेन परिस्फुरितं परिस्पन्दितं यदधरपुटमोष्ठयुगलं तद्वशात्, मुखात् निष्पतद्भिर्निर्गच्छद्भिः, अतिशुचिभिरत्यन्तशुभ्रैः, शुद्धहृदयस्य पवित्रचित्तस्य मयूखैः किरणैरिव, मूर्त्तिमद्भिः गीतगुणैर्गानमाधुर्य्यैरिव, स्वरैर्निषादादिध्वनिभिरिव, स्तुतिवर्णैः शिवस्तवाक्षरैरिव स्थितैः, दशनांशुभिर्दन्तरश्मिभिः, गौरीपतिं शिवं पुनः स्नपयन्तीमिव स्थिताम्। मूर्त्तिमद्भिरिति गीतगुणैरित्यादीनां त्रयाणामेव विशेषणं, पूजारम्भे सकृत् स्नपनात् पुनः पदमिति बोध्यम्। अत्र प्रथमास्तिस्रो गुणोत्प्रेक्षाः शेषा च क्रियोत्प्रेक्षा इत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(र) अतीति। किञ्च। अतिविमलैरिति मुक्ताफलैरिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणम्। पितामहस्य ब्रह्मणो मुखादाकृष्टैराकृष्यानीतैः साक्षाद्वेदार्थैरिव, निरतिशयसत्यतया तेषामप्यतिविमलत्वादिति भावः। ग्रथिततां संयोजनमुपगतैः गायत्र्याः स्वनामख्यातस्य वैदिकमन्त्रविशेषस्य वर्णैरक्षरैरिव, तेषामपि ब्रह्मरूपतया निर्म्मलत्वादिति भावः। उद्धृतैरुत्तोलितैः नारायणस्य नाभिपुण्डरीकवीजैरिव। तथा आत्मानं स्वस्वदेहं करस्पर्शेन जपकाले तस्याः कन्यकायाः पाणिस्पर्शेन पूतं पवित्रं कर्त्तुमिच्छद्भिः, तारकारूपेण नक्षत्रभावेनागतैः, मुक्तानां नक्षत्रवदुज्ज्वलत्वादितिभावः, सप्तर्षिभिर्मरीच्यादिभिरिव स्थितैः, तथा आमलकीफलवत् स्थूलैः,

যাইতেছিল ;* (ম) অতুলনীয় ভক্তিতে পরিশোভিত ও দ্বিতীয় শ্বেতপদ্মমালার ন্যায় নির্ম্মল দৃষ্টিদ্বারা সে, শিবমূর্ত্তিকে লক্ষ্য করিয়া আদরের সহিত শিবকে দেখিতেছিল ; (য) অনবরত গান করায় কন্যাটির ওষ্ঠযুগল স্পন্দিত হইতেছিল ; সুতরাং মুখ হইতে নির্গত অত্যন্ত নির্ম্মল দন্ত-রশ্মিদ্বারা সে যেন পুনরায় শিবকে স্নান করাইতেছে বলিয়া বোধ হইতেছিল ; সেই দন্ত-রশ্মিগুলিকে, তাহার পবিত্র হৃদয়ের কিরণের ন্যায় এবং মূর্ত্তিমান্ গানের মাধুর্য্যের ন্যায়, মূর্ত্তিমান্ স্বরলহরীর ন্যায় ও মূর্ত্তিমান্ স্তবের অক্ষরের ন্যায় দেখা যাইতেছিল ; (র) আমলকীফলের ন্যায় বড় বড় ও অত্যন্ত নির্ম্মল মুক্তাদ্বারা গ্রথিত এক ছড়া জপের মালা তাহার কণ্ঠদেশে লম্বিত ছিল ; ব্রহ্মার মুখ হইতে আকর্ষণ করিয়া আনীত সাক্ষাৎ বেদার্থের

(१) अपरयेव। (२)...गीतस्फुरित...। (३) पुनरपि...गौरीनाथं।
(४) ग्रथनतां, ग्रन्थनां, ग्रथनस्फीततां। (५) करतल...।

गतैः, आमलकीफलस्थूलैर्मुक्ताफलैरुपरचितेनाक्षवलयेनाधिष्ठितकण्ठभागाम्, परिवेश-(१) परिगत-चन्द्रमण्डलामिव पौर्णमासीनिशाम्, (२) (र) अधोमुख-हर-शिरः-कपाल-मण्डलाकारेण मोक्ष-पुर-द्वार-कलस-(३) कान्तिना स्तनयुगलेन, एक-हंस-मिथुन (४) सनाथामिव गङ्गाम्, (५) (ल) गौरीसिंहसटामयेनेव चामर-रुचिराकृतिना (६) स्तनयुगलमध्यनिबद्धग्रन्थिना कल्पतरु-लतावल्कलेन

मुक्ताफलैर्मौक्तिकैः उपरचितेन विहितेन अक्षवलयेन जपमालया अधिष्ठित आश्रितः कण्ठभागो यस्यास्ताम्, अतएव परिवेशेन परिधिना परिगतं परिवेष्टितं चन्द्रमण्डलं यस्यां तां पौर्णमासीनिशामिव स्थिताम्। अत्र प्रथमायतस्यो लुप्तोपमा, आमलकीति लुप्तोपमा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तथा परिवेशेन सह मुक्तामालायाः, चन्द्रमण्डलेन तन्मुखस्य, पौर्णमासीनिशया च तन्मूर्त्तेः साहश्यमिति श्रौत्युपमा चेत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ल) अधः इति। अधोमुखं हरस्य शिवस्य शिरसि यत् कपालं नरशिरोऽस्थि तद्वन्मण्डलाकारेण वर्त्तुलाकृतिना, तथा मोक्षस्य यत् पुरं ब्रह्मभवनं तस्य द्वारकलसवत् द्वारस्थापितकुम्भवत् कान्तिर्यस्य तेन तादृशेन स्तनयुगलेनोपलक्षितामित्यर्थः, अतएव एकेन हंसयोर्मिथुनेन युगलेन सनाथा संयुक्ता तां गङ्गामिव स्थिताम्। अत्र लुप्तोपमाद्वयं, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तथा हंसयुगलेन स्तनयुगलस्य गङ्गया च कन्यायाः साहश्यमिति श्रौत्युपमा चेतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। कपालस्य उन्मुखत्वे तदुपरिभागस्य उच्चावचत्वान्मण्डलाकारो न स्यात्, कपालस्याधोमुखत्वे तु तत्पृष्ठभागस्य दृष्टिगोचरस्य मण्डलाकारः स्यादित्येतत्प्रतिपादनायाधोमुखपदमिति बोध्यम्।

(व) गौरीति। गौरीसिंहस्य दुर्गाया वाहनीभूतसिंहस्य सटामयेनेव जटानिर्म्मितेनेव, चामरवत् रुचिरा आकृतिर्यस्य तेन, तथा स्तनयुगलस्य मध्ये निबद्धो ग्रन्थिर्यस्य तेन, कल्पतरुलतावल्कलेन कृतं उत्तरीयस्य कृत्यं कार्य्यं यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालुप्तोपमयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

ন্যায়, গ্রথিত গায়ত্রীর অক্ষরের ন্যায়, নারায়ণের নাভিস্থিত শ্বেতপদ্ম হইতে উত্তোলিত বীজের ন্যায় এবং সেই কন্যাটির করস্পর্শে আপনাদিগকে পবিত্র করিতে ইচ্ছা করিয়া নক্ষত্ররূপে আগত সপ্তর্ষিগণের ন্যায় সেই মুক্তাগুলিকে দেখা যাইতেছিল; এবং ঐরূপ মুক্তামালায় কণ্ঠদেশ পরিবেষ্টিত ছিল বলিয়া, পরিবেশদ্বারা চন্দ্রমণ্ডল পরিবেষ্টিত হইলে পূর্ণিমার রাত্রির ন্যায় সেই কন্যাটিকে দেখা যাইতেছিল; (ল) মহাদেবের মস্তকস্থিত অধোমুখ নরমুণ্ডের ন্যায় বর্ত্তুলাকার এবং ব্রহ্মভবনের দ্বারস্থিত কলসদ্বয়ের ন্যায় কান্তি-সম্পন্ন দুইটি স্তন, সেই কন্যাটির বক্ষঃস্থলে বিরাজ করিতেছিল; সুতরাং কেবল দুইটি হংসসংযুক্ত গঙ্গার ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল; (ব) চামরের ন্যায় সুন্দর আকৃতি একখানা কল্পতরুর বল্কল, তাহার স্তনযুগলের মধ্যস্থানে বদ্ধ থাকিয়া তাহার উত্তরীয় বস্ত্রের কার্য্য করিতেছিল;

(१) परिवेष...। (२) पौर्णमासीम्। (३) मोक्षद्वारकलश, मोक्षद्वारनियुक्तकलश...।
(४) एकगतहंस...। (५) श्वेतगङ्गाम्। (६) चीराकृतिना।

कृतोत्तरीयकृत्याम्, (व) अयुग्मलोचनसकाशात् प्रसादलब्धेन चूड़ामणि-चन्द्र-मयूख-जालेनेव मण्डलीकृतेन ब्रह्मसूत्रेण पवित्रीकृतकायाम्, (१) (श) आप्रपदीनेन च स्वभावसितेनापि ब्रह्मासनबन्धोत्तान-चरणतल-प्रभा-परिष्वङ्गा-ल्लोहितायमानेन दुकूलपटेन प्रावृतनितम्बाम्, (ष) यौवनेनापि स्वकालोप-सर्पिणा निर्विकार-विनीतेन (२) शिष्येणेवोपास्यमानाम्, (स) लावण्येनापि कृतपुण्येनेव स्वच्छात्मना परिगृहीताम्, (ह) रूपेणापि रुचिरलोचनेन विगत-

(श) अयुग्मेति । अयुग्मलोचनस्य त्रिलोचनस्य शिवस्य सकाशात् प्रसादलब्धेन अनुग्रहात् प्राप्तेन, चूड़ामणेः शिवस्यैव चूड़ामणीभूतस्य चन्द्रस्य मयूखजालेनेव किरणकलापेनेव स्थितेन, शुभ्रत्वादिति भावः, मण्डलीकृतेन ब्रह्मसूत्रेण यज्ञोपवीतेन पवित्रीकृतः कायो देहो यस्यास्ताम् । अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः । अस्यास्तु तदा ब्रह्मचारितया यज्ञोपवीतधारणं शास्त्रीयमेव । तथा च हारीतः—"द्विविधाः स्त्रियो ब्रह्म-वादिन्यः सद्योवध्वश्च । तत्र ब्रह्मवादिनीनामुपनयनमग्नीन्धनं वेदाध्ययनं स्वगृहे च भैक्षचर्य्या ।" तदेतत् प्रपञ्चितमस्माभिरुत्तररामचरितटीकायामनुसन्धेयम् ।

(ष) आप्रेति । किञ्च । प्रपदं पादाग्रं मर्य्यादाभूतमित्याप्रपदं तत् प्राप्नोतीत्याप्रपदीनः पादतलपर्य्यन्त-व्यापकः तेन, "स्यान्निष्वाप्रपदीनं तत् प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत्" इत्यमरः, स्वभावेन सितो धवलस्तेनापि सता, ब्रह्मासनबन्धेन पद्मासनकरणेन उत्ताने उन्मुखे ये चरणतले तयोः प्रभाया अर्थाल्लोहितायाः परिष्वङ्गात् संसर्गात् लोहितायमानेन दुकूलपटेन सूक्ष्मवसनेन प्रावृतावाच्छादितौ नितम्बौ यस्यास्ताम् । अत्र श्वेतदुकूलस्य लौहित्यगुणग्रहणात्तद्गुणोऽलङ्कारः ।

(स) यौवनेनेति । अपिः समुच्चये । स्वकाले उपयुक्तवयसि स्वकीयसेवावसरे च उपसर्पति आगच्छ-तीति तेन, तथा निर्विकारं कामविकाररहितं क्रोधादिविकाररहितञ्च यथा स्यात्तथा विनीतेन शिक्षितेन यौवनेन, शिष्येणेव उपास्यमानां आश्रीयमाणां सेव्यमानाञ्च । अत्र पूर्णोपमालङ्कारः ।

(ह) लावण्येनेति । कृतपुण्येनेव सता स्वच्छात्मना विशदेन काममलहीनस्वरूपेण च लावण्येन परि-गृहीतामाश्रिताम् । अत्र पुण्यकरणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः ।

সেখানা যেন দুর্গার সিংহের জটাদ্বারা নির্ম্মিত বলিয়া বোধ হইতেছিল। (শ) কণ্ঠদেশে মণ্ডলীকৃত একটি যজ্ঞসূত্রে তাহার দেহ পবিত্র করিয়াছিল; মহাদেবের নিকট হইতে অনুগ্রহে লব্ধ, তাঁহারই চূড়ামণিরূপ চন্দ্রের কিরণসমূহের ন্যায় সেই যজ্ঞসূত্রটি বিরাজ করিতেছিল। (ষ) এবং চরণের অগ্রপর্য্যন্তব্যাপী সূক্ষ্মবস্ত্রে তাহার নিতম্বদেশ আবৃত ছিল; সেই বস্ত্রখানা স্বভাবতই শুক্লবর্ণ হইলেও, সে পদ্মাসন করিয়া বসিয়া থাকায়, উত্তানীকৃত (চিৎ করা) চরণতলের প্রভা তাহাতে পতিত হওয়ায় বস্ত্রখানার সেই অংশটা রক্তবর্ণ হইয়াছিল। (স) অবসরক্রমে উপস্থিত ও ক্রোধাদি-বিকার-বিহীন শিক্ষিত শিষ্যের ন্যায়, উপযুক্ত বয়সে উপস্থিত

(१) पवित्रतरीकृतकायां । (२) निर्विकारेण विनीतेन ।

चापलेन आयतनमृगेणेव निषेविताम्, (१) (क्ष) उत्सङ्गगताञ्च स्वसुतामिव सूक्ष्म-शङ्ख-खण्डिकाङ्गुरीयक-पूरिताङ्गुलिना (२) त्रिपुण्ड्रकावशिष्ट-भस्म-पाण्डु-रेण (३) प्रकोष्ठ-बद्ध-शङ्ख-खण्डकेन नख-मयूख-दन्तुरतया गृहीतदन्तकोणेनेव दन्तमयीं दक्षिणकरेण वीणामास्फालयन्तीम्, प्रत्यक्षामिव गन्धर्व्वविद्याम्, (क) मणिमण्डपिकास्तम्भ-लग्नाभिरात्मानुरूपाभिः सहचरीभिरिव सवीणाभिर्विलास-वतीभिः प्रतिमाभि (४)-रुपेताम्, (ख) स्नपनार्द्र-लिङ्ग-संक्रान्त-प्रतिविम्बतया

(क्ष) रूपेणेति। रुचिरे सुन्दरे लोचने यस्य यत्र च तेन, तथा विगतं चापलं स्वाभाविकचाञ्चल्यं मदनोद्रेकश्च यस्य यत्र च तेन, आयतनमृगेणेव तत्सिद्धायतनहरिणेनेव रूपेण सौन्दर्य्येण निषेवितामाश्रिताम्। अत्रापि पूर्णोपमालङ्कारः।

(क) उत्सङ्गेति। सूक्ष्माणां शङ्खखण्डिकानां शङ्खखण्डानां अङ्गुरीयकैः पूरिता अङ्गुलयो यस्य तेन, त्रिपुण्ड्रकात्तदाख्यतिलककरणादवशिष्टेन भस्मना पाण्डुरेण शुभ्रेण, तथा प्रकोष्ठे मणिबन्धदेशे बद्धो धृतः शङ्खखण्डः शङ्खवलयं यस्य तेन, नखानां मयूखैर्दन्तुरतया तुङ्गतया दीर्घतया हेतुना, गृहीतो दन्तकोणो गजदन्तनिर्म्मितवीणावादनसाधनं येन तादृशेनेव प्रतीयमानेन दक्षिणकरेण, उत्सङ्गगतां क्रोड़स्थितां, दन्तमयीं गजदन्तभूषणप्रचुरां वीणां स्वसुतां निजकन्यामिव आस्फालयन्तीं वादयन्तीं सवात्सल्यमुत्क्षिप्योत्क्षिप्य लालयन्तीञ्च, अतएव प्रत्यक्षां गन्धर्व्वविद्यां गानशास्त्रविद्यामिव विद्यमानाम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः, तथा दन्तकोणग्रहणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, प्रत्यक्षां गन्धर्व्वविद्यामिवेति गुणोत्प्रेक्षा चेत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। शङ्खमयाङ्गुरीयकवलयाभ्यां शावैधव्यं व्यज्यत इति वस्तुना वस्तुध्वनिः। "कोणो वीणादिवादन"मित्यमरः।

(ख) सखीति। विलासवतीभिर्विभ्रमशोभाशालिनीभिः। सहचरीभिरिव स्थिताभिः प्रतिमाभिरात्मप्रतिबिम्बै रुपेताम्। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

ও কাম-বিকার-বিহীন বশ্য যৌবনকাল তাহাকে আশ্রয় করিয়াছিল। (হ) লাবণ্যও, যেন পুণ্যোপার্জ্জন করিয়াই নির্ম্মল হইয়া তাহাকে অবলম্বন করিয়াছিল। (ক্ষ) সেই সিদ্ধায়তনের হরিণের ন্যায় সুন্দর-নয়ন-সম্পন্ন ও চাঞ্চল্যবিহীন রূপও, তাহাকে আশ্রয় করিয়াছিল। (ক) আর সে, নিজ কন্যার ন্যায় হস্তি-দন্ত-ভূষিত একটি বীণা ক্রোড়ে স্থাপন করিয়া দক্ষিণহস্তদ্বারা বাজাইতেছিল; তাহার সেই দক্ষিণ-হস্তের অঙ্গুলিগুলি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র শঙ্খ-খণ্ডের অঙ্গুরীদ্বারা পরিপূর্ণ ছিল, ত্রিপুণ্ড্র ধারণ করার অবশিষ্ট ভস্মে সেই দক্ষিণ-হস্ত শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, তাহার মণিবন্ধদেশ শঙ্খবলয়ে পরিবেষ্টিত ছিল এবং নখের কিরণে সেই দক্ষিণ হস্ত লম্বা বলিয়া বোধ হওয়ায় হস্তি-দন্তের ছড়ি ধারণ করিয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছিল; ইহাতে তাহাকে সাক্ষাৎ গন্ধর্ব্ববিদ্যার ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (খ) মণ্ডপের মণিময় স্তম্ভগুলিতে লীলাবিলাস-সংযুক্ত, বীণার

(१) सेविता। (२) सूक्ष्मदन्तखण्डिकाङ्गुलीयकापूरिताङ्गुलिना। (३)...पाण्डरेण।
(४) सवीणाभिः प्रतिमाभिः।

अतिप्रबलभक्त्याराधितस्य हृदयमिव प्रविष्टां हरस्य, (ग) हारलतयेव (१) प्राप्तकण्ठयोगया ग्रहपङ्क्त्येव ध्रुवप्रतिबद्धया क्रुद्धयेव रक्त-(२) मुखवर्णया मत्तयेव घूर्णित-मन्द-(३) तारया उन्मत्तयेव अनेककृततालया मीमांसयेव अनेकभावनानुविद्धया गीत्या देवं विरूपाक्षमुपवीणयन्तीम्, (घ) अतिमधुरगीतावकृष्टे-

(ग) स्नपनेति। स्नपनेन आर्द्रे क्लिन्ने लिङ्गे शिवमूर्त्तौ संक्रान्तं प्रतिबिम्बं यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना, अतिप्रबलभक्त्या आराधितस्य हरस्य हृदयं प्रविष्टामिव स्थिताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) हारेति। हारलतयेव प्राप्तकण्ठयोगया लब्धगलसम्बन्धया, इदमुभयत्रापि समानं। ग्रहाणां रव्यादीनां पङ्क्त्या श्रेण्येव, ध्रुवेण गानाङ्गविशेषेण प्रतिबद्धया नियमितया अन्यत्र तु ध्रुवाभ्यां तदाख्यनक्षत्राभ्यां प्रतिबद्धया संयतया। गानाङ्गध्रुवलक्षणमुक्तं सङ्गीतदामोदरे—"उत्तमः षट्पदः प्रोक्तो मध्यमः पञ्चमः स्मृतः। कनिष्ठश्च चतुर्भिः स्याद् ध्रुवकोऽयं मयोदितः।" इत्यादि। ग्रहचक्रस्य ध्रुवनक्षत्रयोर्बन्धनमुक्तं सूर्य्यसिद्धान्ते—"भचक्रं ध्रुवयोर्बद्धमाक्षिप्तं प्रवहानिलैः। पर्य्येत्यजस्रं तन्नद्धा ग्रहकक्षा यथाक्रमम्।" क्रुद्धया स्त्रियेव, रक्ताः श्रीरागादियुक्ता मुखवर्णा मुखोच्चारिताक्षराणि यस्यां तया, अन्यत्र तु रक्तौ लोहितौ मुखवर्णौ यस्यास्तया। मत्तया मद्यादिपानजनितमदया स्त्रियेव, घूर्णितौ मन्द्रपिकामध्ये विचरितः मन्द्रो मृदुः तार उच्चश्च स्वरो यस्यास्तया, अन्यत्र तु घूर्णिते मदवशाच्चलिते मन्दे अलसे तारे कनीनिकाद्वयं यस्यास्तया। उन्मत्तया स्त्रियेव, अनेके कृतास्ताला: कालक्रियामानरूपाः करतलध्वनयश्च यस्यां यया च तया। मीमांसया जैमिनिप्रणीतपूर्वमीमांसाशास्त्रेणेव, अनेकाभिर्विविधाभिर्भावनाभिर्मूर्च्छनाभिः अनुविद्धया विशिष्टया, पक्षे अनेकया द्विविधया भावनया भावयितुर्व्यापारेण तन्निरूपणेनेत्यर्थः अनुविद्धया ग्रथितया। "भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः, सा च द्विविधा शाब्दी भावना आर्थी भावना चे"ति लौगाक्षिभास्करः। विस्तरस्तु तत्रैव द्रष्टव्यः। एवम्भूतया गीत्या गानेन, विरूपाणि चन्द्रसूर्य्याग्निरूपतया विसदृशानि अक्षीणि नेत्राणि यस्य तं देवं शिवं उपवीणयन्तीं वीणया उपगायन्तीम्। अत्र पूर्णा मालोपमालङ्कारः।

সহিত তাহার দেহের অনুরূপ প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল ; সেগুলিকে তাহার সহচরীদিগের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (গ) স্নান করাইয়াছিল বলিয়া আর্দ্র শিব-মূর্ত্তিতে তাহার প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, সুতরাং বোধ হইতেছিল যেন, বিশেষ ভক্তিসহকারে আরাধনা করায় সে, শিবের হৃদয়ে প্রবেশ করিয়াছে। (ঘ) বীণার ধ্বনির সহিত গান মিশাইয়া সে, মহাদেবের স্তব করিতেছিল ; সেই গানটি মুক্তাময় হারের ন্যায় তাহার কণ্ঠ-সংলগ্ন ছিল, গ্রহচক্র যেমন ধ্রুবনক্ষত্র-সংযুক্ত থাকে, সেই গানটিও তেমন ধুয়া-সংযুক্ত ছিল এবং ক্রুদ্ধা রমণীর যেমন মুখ রক্তবর্ণ হয়, সেই গানটিতেও তেমন মুখ হইতে নানাবিধ রাগ-রাগিণীযুক্ত অক্ষর উচ্চারিত হইতেছিল ; মত্তা রমণীর যেমন নয়নের তারা অলস হইয়া ঘুরিতে থাকে, সেই গানের স্বরও তেমন মৃদু ও উচ্চ হইয়া ঘুরিতেছিল ; উন্মত্ত রমণী যেমন বহুতর করতলধ্বনি করে, সেই গানেও তেমন বহুতর তাল করা হইতেছিল এবং মীমাংসাদর্শন যেমন শাব্দী ও আর্থী নামে দ্বিবিধ ভাবনা-বিশিষ্ট,

(१) हारलेखयेव। (२) रागरक्त...। (३)...मन्द्र...।

ध्यानमिवाभ्यस्यद्भिर्निश्चलकर्णपुटैर्मृग-वराह-वानर-वारण-शरभ-सिंह-प्रभृतिभिर्वनचरैराबद्धमण्डलैराकर्ण्यमान-गीतानुविद्ध-विपञ्ची-घोषाम्, (१) (ङ) अमरापगामिव नभसोऽवतीर्णाम्, (च) दीक्षितवाचमिवाप्राकृताम्, (छ) त्रिपुरारिशरशलाकामिव तेजोमयीम्, (२) (ज) पीतामृतामिव विगत-तृष्णाम्, (झ) ईशानशिरःशशिकलामिवानुपजातरागाम्, (ञ) अमथितोदधिजलसम्पद-

---

(ङ) ध्यतीति। अतिमधुरेण गीतेन अवकृष्टैराकृष्य आनीतैः, निश्चलकर्णपुटैः, अतएव ध्यानं अभ्यस्यद्भिः शिक्षमाणैरिव स्थितैः, आबद्धं मण्डलं वर्तुलाकारेणावस्थानं येषैः। वारणो हस्ती। शरभः सिंहघाती अष्टपादो जन्तुविशेषः। आकर्ण्यमानः श्रूयमाणः गीतानुविद्धो गानानुसृतो विपञ्चीघोषः सप्ततन्त्रीविशिष्टवीणाध्वनिर्यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) अमरेति। नभस आकाशादवतीर्णां अमरापगां मन्दाकिनीमिव स्थिताम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) दीक्षितेति। दीक्षितस्य यज्ञादौ व्रतिनः वाचं वाक्यमिव, अप्राकृतां अमानुषीं दिव्याम्, अन्यत्र तु प्राकृतादिभाषाभिन्नां संस्कृतात्मिकामित्यर्थः। "नापभाषित वै न म्लेच्छित वै" इति श्रुत्या व्रतिनोऽपभ्रंशभाषाव्यवहारनिषेधादिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ज) त्रिपुरेति। त्रिपुरारेः शिवस्य शरशलाका त्रिपुरासुरवधकाले नारायणात्मिका बाणशलाकामिव तेजोमयीं तेजःप्रचुराम्। पूर्णोपमा।

(झ) पीतेति। पीतममृतं यया तां स्त्रियमिव, विगता तृष्णा विषयलोभो जलपिपासा च यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ञ) ईशानेति। ईशानस्य शिवस्य शिरसः शशिकलामिव, अनुपजातो रागः कामानुरागो रक्तिमा च यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा। तच्चन्द्रकलाया उदयास्ताभावादेव रागो न जायत इति बोध्यम्।

সেই গানটিও তেমন বহুতর মূর্চ্ছনা-বিশিষ্ট ছিল। (ঙ) অতি মধুর গানে আকৃষ্ট হইয়া হরিণ, শূকর, বানর, হস্তী, শরভ ও সিংহপ্রভৃতি বন্য পশুগণ নিশ্চল কর্ণপুটে ও মণ্ডলাকারে অবস্থান করিয়া, তাহার গীত-সংযুক্ত বীণার ধ্বনি শুনিতেছিল ; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন তাহারাও ধ্যান অভ্যাস করিতেছে। (চ) আর সেই কন্যাটিকে, আকাশ হইতে অবতীর্ণ মন্দাকিনীর ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ছ) যজ্ঞে দীক্ষিত ব্যক্তির যেমন প্রাকৃত ভাষা বলিতে নাই, সেই কন্যাটিও তেমন প্রাকৃত (মনুষ্য) ছিল না। (জ) ত্রিপুরাসুরের বধের সময়ে শিবের বাণের ন্যায় সেও তেজোময়ী ছিল। (ঝ) অমৃতপানকারিণীর যেমন পিপাসা থাকে না, তাহারও তেমন বিষয়-লালসা ছিল না। (ঞ) শিবের মস্তকস্থিত চন্দ্রকলার যেমন রাগ (রক্তিমা) জন্মে না, তাহারও তেমন রাগ (কামানুরাগ) জন্মিয়াছিল না। (ট)

---

(१)...निर्घोषाम्। (२) तपोमयीम्।

मिवान्तःप्रसन्नाम्, (ट) असमस्तपदवृत्तिमिवाद्वन्द्वाम्, (ठ) बौद्धबुद्धिमिव निरालम्बनाम्, (ड) वैदेहीमिव प्राप्तज्योतिःप्रवेशाम्, (ढ) द्यूतकलाकुशला-मिव वशीकृताक्षहृदयाम्, (ण) महीमिव जलभृतदेहाम्, (त) हिमसमय-दिवस-(१) मुखलक्ष्मीमिव परिगृहीत-(२) भास्करातपाम्, (थ) आर्य्यामिव

(ट) अमथितेति। अमथितस्य उदधेः समुद्रस्य जलसम्पदमिव, अन्तःप्रसन्नां चित्ते शुद्धां कामादि-रहितचित्तामित्यर्थः, अन्यत्र तु अभ्यन्तरनिर्म्मलाम्। पूर्णोपमा।

(ठ) असमस्तेति। असमस्तानां समासरहितानां पदानां सुबन्तरूपाणां वृत्तिमवस्थितिमिव, अद्वन्द्वां वर्षा-तपशीतोष्णादिद्वन्द्वदुःखरहितां, अन्यत्र तु द्वन्द्वाख्यसमासरहितां युग्ममिलनरहितां वा। पूर्णोपमा।

(ड) बौद्धेति। बौद्धानां माध्यमिकयोगाचारसाम्प्रदायिकानामित्यर्थः बुद्धिं ज्ञानमिव, निरालम्बनां सर्वत्रैवासक्तिरहितां, अन्यत्र तु निर्विषयाम्। पूर्णोपमा। बौद्धानां माध्यमिका योगाचाराश्च सम्प्रदाया विज्ञानातिरिक्तं पदार्थं न मन्यन्ते, वदन्ति च तत्तज्ज्ञानमेव घटादिरूपेणावभासते, भेदस्तु भ्रान्तिरेवेति। तथा च "सहोपलम्भनियमादभेदो नीलतद्धियोः। भेदश्च भ्रान्तिविज्ञानैर्दृश्येतेन्दाविवाद्वये।"

(ढ) वैदेहीमिति। वैदेहीं सीतामिव, प्राप्तो ज्योतिषि परब्रह्मणि प्रवेशो ध्यानगोचरता यया ताम्, अन्यत्र तु प्राप्तो ज्योतिषि परीक्षार्थप्रज्वालितवह्नौ प्रवेशो यया ताम्। पूर्णोपमा।

(ण) द्यूतेति। द्यूतकलायां पाशकक्रीडायां कुशलां निपुणां स्त्रियमिव, वशीकृतानि अक्षाणि इन्द्रियाणि हृदयं चित्तञ्च यया ताम्, अन्यत्र तु वशीकृतं अक्षहृदयं पाशकविद्यारहस्यं यया ताम्। पूर्णोपमा।

(त) महीमिति। महीं पृथिवीमिव, जलेन जलमात्रपानेन भृतो धृतो देहो यया ताम्, अन्यत्र तु जलेन भृतो वेष्टितो देहो यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(थ) हिमेति। हिमसमयस्य माघफाल्गुनात्मकतुषारपातकालस्य दिवसमुखलक्ष्मीमिव प्रत्यूषश्रियमिव, परिगृहीतः पञ्चाग्निसाधनात् शरीरे स्वीकृतः भास्करातपः सूर्य्यालोको यया ताम्, अन्यत्र तु परिगृहीत-तुषारैर्निरुद्धो भास्करातपो यया ताम्। पूर्णोपमा।

অনালোড়িত সমুদ্রের জলের ভিতর যেমন নির্ম্মল, তাহার অন্তঃকরণও তেমন নির্ম্মল ছিল। (ঠ) সমাসবিহীন পদসমূহের যেমন পরস্পর মিলন থাকে না, তাহারও তেমন শীতোষ্ণাদি দ্বন্দ্বদুঃখ ছিল না। (ড) বৌদ্ধদিগের সম্প্রদায়বিশেষের মতে জ্ঞানের যেমন বিষয় নাই, তাহারও তেমন আসক্তি ছিল না। (ঢ) সীতা যেমন অগ্নিতে প্রবেশ করিয়াছিলেন, সেও তেমন পরব্রহ্মে প্রবেশ করিয়াছিল। (ণ) দ্যূতক্রীড়ায় নিপুণ স্ত্রীলোক যেমন পাশক-বিদ্যার রহস্য আয়ত্ত করিয়া থাকে, সেও তেমন ইন্দ্রিয়সমূহ এবং চিত্তকে আয়ত্ত করিয়াছিল। (ত) পৃথিবী যেমন জলে পরিবেষ্টিতদেহা, সেও তেমন কেবল জলপানে ধৃতদেহা ছিল। (থ) শীতকালের প্রভাতসময়ের শোভা যেমন হিমদ্বারা সূর্য্যের আলোক আবৃত করে, সেও

---

(১)...দিন...। (২) পরিপীত...।

समुपात्त-(१) यतिगणोचितमात्राम्, (द) आलिखितामिवाचलावस्थानाम्, (ध) अंशुमयीमिव तनुच्छायानुलिप्तभूतलाम्, (न) निर्म्ममाम्, (२) निरहङ्काराम्, निर्म्मत्सराम्, अमानुषाकृतिम्, दिव्यत्वादपरिज्ञायमान-वयः-परिमाणां (३) अष्टादशवर्षदेशीयामिवोपलक्ष्यमाणाम्, प्रतिपन्नपाशुपतव्रतां कन्यकां ददर्श। (प)

ततोऽवतीर्य्य तरुशाखायां बद्ध्वा तुरङ्गं (४) उपसृत्य भगवते भक्त्या (५) प्रणम्य

(द) आर्य्यामिति। आर्य्या स्वनामप्रसिद्धं छन्दोविशेषमिव, समुपात्ता गृहीता यतिगणस्य जितेन्द्रियजनसमूहस्य मुनिगणस्येत्यर्थः उचिता योग्या मात्रा दण्डकमण्डल्वाद्युपकरणं यया ताम्, अन्यत्र तु समुपात्ता गृहीताः, यतिर्जिह्वाविश्रामस्थानं, गणा मगणनगणादयः, उचिता योग्या तत्तल्लक्षणोक्ता मात्रा उच्चारणकालश्च यया ताम्। पूर्णोपमा। "लक्ष्मैतत् सप्तगणा गोपेता भवति नेह विषमे जः। षष्ठो जश्च न लघु वा प्रथमेऽर्द्धे नियतमार्य्यायाः।" इत्यादिच्छन्दोमञ्जरी।

(ध) आलीति। आलिखितां चित्रितामिव, अचलं पर्व्वते अवस्थानं यस्यास्ताम्, अन्यत्र तु अचलं स्थिरमवस्थानं यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(न) अंश्विति। अंशुमयीं तेजोमयीं देवीमिव, तनुच्छायया देहस्य प्रतिबिम्बेन कान्त्या च अनुलिप्तं भूतलं यया ताम्। पूर्णोपमा।

(प) निर्म्ममामिति। ममतार्थे ममशब्दोऽयमव्ययः, निर्म्ममां ममतारहिताम्। निर्म्मत्सरामन्यविद्वेषहीनाम्। दिव्यत्वात् गन्धर्व्वकन्यात्वेन निर्जरत्वादित्यर्थः अपरिज्ञायमानं मानुषवदाकृतिदर्शनमात्रेणावुध्यमानं वयसः परिमाणं यस्यास्तामपि. अष्टादशवर्षदेशीयामिव अष्टादशवर्षात् किञ्चिन्न्यूनवयस्कामिव। "ईषदसमाप्ता"वित्यादिना देशीयप्रत्ययः। प्रतिपन्नं गृहीतं पशुपतिः शिवो देवता अस्येति पाशुपतं व्रतं शिवपूजारूपो नियमो यया ताम्।

(फ) तत इति। त्रिलोचनाय शिवाय। दिव्ययोषितं स्वर्गीयस्त्रियम्। अनिमिषाणि निस्पन्दानि पक्ष्माणि लोमानि यस्य तेन, निश्चलं यथा तथा निबद्धं कृतं लक्ष्यं दृष्टिर्येन तेन।

তেমন শরীরে সূর্য্যের আলোক ধারণ করিতেছিল। (দ) আর্য্যা ছন্দের যেমন যতি, গণ ও উপযুক্ত মাত্রা থাকে, তাহারও তেমন মুনিগণের উপযুক্ত দণ্ড ও কমণ্ডলু প্রভৃতি উপকরণ ছিল। (ধ) চিত্রিত প্রতিমূর্ত্তি যেমন নিশ্চলভাবে অবস্থান করে, সেও তেমন পর্ব্বতে অবস্থান করিতেছিল। (ন) তেজোময়ী দেবী যেমন শরীরের কান্তিদ্বারা ভূতল লিপ্ত করেন, সেও তেমন শরীরের প্রতিবিম্বদ্বারা ভূতল লিপ্ত করিতেছিল। (প) এবং তাহার মমতা ছিল না, অহঙ্কার ছিল না, বিদ্বেষ ছিল না, ছিল,—অমানুষী আকৃতি ; আর স্বর্গীয় বলিয়া তাহার বয়সের যথার্থ পরিমাণ জানিতে না পারিলেও, তাহাকে অষ্টাদশ বর্ষের কিঞ্চিৎ ন্যূনবয়স্ক বলিয়া বোধ হইতেছিল এবং সে, শিবের উপাসনারূপ ব্রত অবলম্বন করিয়াছিল।

(ফ) তদনন্তর চন্দ্রাপীড় অশ্ব হইতে অবতরণ করিয়া কোন বৃক্ষের শাখাতে, অশ্বটিকে

---

(১) উপাত্ত...। (২) নির্ম্মলাং। (৩)···প্রমাণাং। (৪) তুরগং। (৫) মহাভক্ত্যা।

त्रिलोचनाय, (१) तामेव दिव्ययोषितमनिमिष-(२) पक्ष्मणा निश्चल-निबद्ध-लक्ष्येण चक्षुषा पुनर्निरूपयामास (फ)। उदपादि चास्य तस्या रूपसम्पदा कान्त्या प्रशान्त्या चाविर्भूतविस्मयस्य मनसि, (ब)—'अहो! जगति जन्तूनाम-समर्थितोपनतान्यापतन्ति वृत्तान्तान्तराणि (भ)। तथाहि, मया मृगयायां यदृ-च्छया निरर्थकमनुबध्नता तुरङ्गमुख-(३)मिथुनं, अयमतिमनोहरो मानवानामगम्यो दिव्यजनसञ्चरणोचितः प्रदेशो वीक्षितः (४) (म)। अत्र च सलिलमन्वेष-माणेन हृदयहारि सिद्धजनोपस्पृष्टजलं (५) सरो दृष्टम्। तत्तीरलेखाविश्रान्तेन चामानुषं गीतमाकर्णितम्। तच्चानुसरता मानुषदुर्लभदर्शना दिव्यकन्यकेय-मालोकिता (य)। नहि मे संशीतिरस्या दिव्यतां प्रति, आकृतिरेवानुमा-

(ब) उदपादीति। विस्मय इति चार्थः। रूपसम्पदा सौन्दर्यातिशयेन, कान्त्या देहद्युत्या, प्रशान्त्या प्रशमेन च करणेन, आविर्भूतो विस्मयो यस्य तस्य, अस्य चन्द्रापीडस्य मनसि उदपादि। अयं हृतिस्तत्परा।

(भ) कासौ वृत्तिरित्याह अहो इति। जन्तूनां प्राणिनां, वृत्तान्तान्तराणि व्यापारविशेषाः, असमर्थितोपनतानि अतर्कितोपस्थितानि सन्ति आपतन्ति मनसि आगच्छन्ति अनुभवविषयीभवन्तीत्यर्थः।

(म) उक्तमर्थं समर्थयितुमाह तथाहीति। यदृच्छया स्वेच्छया। अनुबध्नता अनुसरता। तुरङ्ग-मुखमिथुनं किन्नरद्वयं। दिव्यजनसञ्चरणोचितो देवजनविचरणयोग्यः।

(य) अत्रेति। हृदयहारि मनोहरं, सिद्धजनैर्देवयोनिविशेषैः उपस्पृष्टं व्यवहृतं जलं यस्य तत्, सरः अच्छोदसरोवरः। तस्य अच्छोदस्य तीरलेखायां तटवीथ्यां विश्रान्तेन कृतविश्रामेण मयेति सम्बन्धः।

(र) ननु कथमियं दिव्यकन्यकेति निश्चीयत इत्याह नहीति। अस्या दृश्यमानायाः कन्यकायाः,

বন্দন করিলেন, পরে নিকটে যাইয়া ভক্তিসহকারে ভগবান্ মহাদেবকে নমস্কার করিয়া পুনরায় স্থিরদৃষ্টিতে সেই স্বর্গীয় রমণীকেই দেখিতে লাগিলেন; তখন তাঁহার নয়নের লোমগুলি নিস্পন্দ হইয়াছিল। (ব) তাঁহার অলৌকিক সৌন্দর্য্যে, শরীরের আলোকে এবং শান্তির পথ অবলম্বন করায় চন্দ্রাপীড়ের বিস্ময় জন্মিল এবং মনে হইতে লাগিল—(ভ) "কি আশ্চর্য্য! জগতে প্রাণিগণের সমক্ষে বিশেষ বিশেষ ঘটনা, অতর্কিতভাবেই উপস্থিত হইয়া থাকে। (ম) কারণ—আমি ইচ্ছানুসারে মৃগয়ায় আসিলাম, অনর্থক কিন্নর দুইটার অনুসরণ করিলাম, পরে, মানুষের অগম্য, স্বর্গবাসীদিগের বিচরণের যোগ্য, অত্যন্ত মনোহর এই স্থানটি দেখিতে পাইলাম। (য) এখানে আবার জলের অন্বেষণ করিতে করিতে সিদ্ধজন-সেবিত সুন্দর সরোবরটি দেখিলাম; তাহার তীরে আবার বিশ্রাম করিতে থাকিয়া অলৌকিক গান শুনিলাম; আবার সেই গীতধ্বনির অনুসরণ করিয়া এই স্বর্গীয় কন্যাটিকে দেখিতে পাইলাম;

(१) पार्वतीपतये। (२) अनिमिष...।

(३) तुरगमुख...। (४) वीक्षितः स्थितः। (५)...उपस्पृष्टजलं।

पयत्यमानुषताम्, कुतश्च मर्त्यलोके सम्भूतिरेवंविधानां गन्धर्व-(१) ध्वनिविशेषाणाम् (र)। तद्यदि मे सहसा दर्शनपथान्नापयाति, नारोहति वा कैलासशिखरम्, नोत्पतति वा गगनतलम्, ततः 'का त्वम्, किमभिधाना वा, किमर्थं वा प्रथमे वयसि प्रतिपन्ना व्रतम्, (२) इति सर्वमेवैतत् एनामुपसृत्य पृच्छामि, अतिमहानयमवकाश आश्चर्याणाम्।' इत्यवधार्य तस्यामेव स्फटिकमण्डपिकायामन्यतमं स्तम्भमाश्रित्य समुपविष्टो गीतसमाप्त्यवसरं प्रतीक्षमाणस्तस्थौ। (ल)

अथ गीतावसाने मूकीभूतवीणा प्रशान्तमधुकररुतेव कुमुदिनी सा कन्यका समुत्थाय प्रदक्षिणीकृत्य कृतहरप्रणामा परिवृत्य स्वभावधवलया तपःप्रभाव-

---

दिव्यतां प्रति स्वर्गीयताविषये नहि मे संशीतिः संशयो वर्त्तते। आकृतिरेव अमानुषीति शेषः। अमानुषतां दिव्यताम्। न खलु मानुषीणामेवमाकृतिर्भवतीति भावः। सम्भूतिरुत्पत्तिः। सुतरामस्या दिव्यतां प्रति नहि संशीतिरिति भावः। संशीतिरिति संपूर्वशीङ्धातोः क्तिः।

(ल) तदिति। नापयाति नापसरति। नोत्पतति नोद्गच्छति। ततस्तदा। किमभिधाना किन्नाम्नी। प्रतिपन्ना आरब्धवती। आश्चर्याणां श्रवणेनाश्चर्यानुभवानां, अयमवकाशः समयः।

(व) अथेति। मूकीभूता निःशब्दा जाता वीणा यस्याः सा, अतएव प्रशान्तं विरतं मधुकररुतं भ्रमरध्वनिर्यस्याः सा, कुमुदिनीव विद्यमाना। अत्रोपमालङ्कारः। प्रदक्षिणीकृत्य शिवमूर्त्तिमिति शेषः। कृतो

কিন্তু ইহার দর্শন পাওয়া মানুষের পক্ষে দুর্লভ। (র) এ যে স্বর্গীয়, সে বিষয়ে আমার কোনই সংশয় নাই ; কারণ—ইহার এই আকৃতিই, 'এ মানবী নহে' বলিয়া আমাকে অনুমান করাইতেছে ; বিশেষতঃ মর্ত্ত্যলোকে এইরূপ গন্ধর্ব্বের গীতধ্বনির সম্ভব হইবে কিরূপে ? (ল) অতএব যদি সহসাই আমার দৃষ্টিপথ হইতে সরিয়া না যায়, কিংবা কৈলাসপর্ব্বতের শৃঙ্গে আরোহণ না করে, অথবা আকাশে উঠিয়া না যায়, তাহা হইলে 'তুমি কে ? তোমার নামই বা কি ? কি জন্যই বা এই নবীন বয়সে তপস্যা আরম্ভ করিয়াছ ?' এই ভাবে এই সমস্ত বিষয়ই নিকটবর্ত্তী হইয়া ইহাকে জিজ্ঞাসা করিব ; কারণ—আশ্চর্য্য শুনিবার এই-ই অত্যন্ত উপযুক্ত অবসর।' চন্দ্রাপীড় এইরূপ মনে মনে স্থির করিয়া সেই স্ফটিকমণ্ডপের ভিতরেই কোন একটি স্তম্ভ অবলম্বন পূর্ব্বক উপবেশন করিয়া গান-সমাপ্তির অবসর প্রতীক্ষা করতঃ অবস্থান করিতে লাগিলেন।

(ব) তাহার পর গান সমাপ্ত হইলে বীণাটিও নীরব হইল, তখন ভ্রমরের রব বিরত হইলে কুমুদিনীর ন্যায় সে বিরাজ করিতে লাগিল ; পরে সেই কন্যাটি উঠিয়া

---

(१) गान्धर्व...। (२) पाशुपतव्रतम्।

प्रगल्भया दृष्ट्या समाश्वासयन्तीव, पुण्यैरिव स्पृशन्ती तीर्थजलैरिव प्रक्षालयन्ती, तपोभिरिव पावयन्ती, शुद्धिमिव कुर्वाणा, वरदानं (१) इवोपपादयन्ती पवित्रतामिव (२) नयन्ती चन्द्रापीडमाबभाषे (व)। "स्वागतमतिथये, कथमिमां भूमिमनुप्राप्तो महाभागः, (३) तदुत्तिष्ठ, आगम्यताम्, (४) अनुभूयतामतिथिसत्कारः" इति (श)। एवमुक्तस्तु तया सम्भाषण-(५) मात्रेणैवानुगृहीतमात्मानं मन्यमान उत्थाय (६) भक्त्या कृतप्रणामो "भगवति! यथाज्ञापयसि" इत्यभिधाय दर्शितविनयः शिष्य इव तां व्रजन्तीमनुवव्राज। (ष)

व्रजंश्च समर्थयामास—"हन्त! तावन्नेयं मां दृष्ट्वा तिरोभूता (७)। कृतं हि मे कुतूहलेन प्रश्नाशया हृदि पदम्। यथा चेयमस्यास्तपस्विजनदुर्लभदिव्य-

---

हराय शिवाय प्रणामो यया सा। तपःप्रभावेण प्रगल्भा धृष्टा भावनिर्णयनिपुणेत्यर्थः तया। समाश्वासयन्तीव सान्त्वनां कुर्वतीव अभयं ददतीवेत्यर्थः। शुद्धिं पापक्षयं। उपपादयन्ती सम्पादयन्ती कुर्वती। नयन्ती प्रापयन्ती। अत्र सप्तानामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(श) स्वागतमिति। महान् भागो भाग्यं यस्य सः। अनुप्राप्त आगतः।

(ष) एवमिति। तया कन्यकया एवमुक्तस्तु चन्द्रापीड इति सम्बन्धः। शिष्य इव दर्शितविनयः सन्। अनुवव्राज अनुजगाम। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(स) व्रजन्निति। किञ्च, व्रजन् तां कन्यकामनुगच्छन् चन्द्रापीडः, समर्थयामास मनसि निर्द्धारयामास। किं समर्थयामासेत्याह हन्तेति। हन्त हर्षे। इयं कन्या। हि तस्मादेव, मे मम हृदि कुतूहलेन

প্রদক্ষিণ করিয়া মহাদেবকে নমস্কার করিল এবং ফিরিয়া, স্বভাবতই ধবলবর্ণ এবং তপস্যার প্রভাবে সর্ব্ব-বিষয়-নির্ণয়-নিপুণ দৃষ্টিদ্বারা চন্দ্রাপীড়কে যেন আশ্বস্ত করিতেছিল, পুণ্যদ্বারাই যেন স্পর্শ করিতেছিল, তীর্থজলেই যেন প্রক্ষালন করিতেছিল, তপস্যাতেই যেন পবিত্র করিতেছিল, যেন পাপক্ষয় জন্মাইতেছিল, যেন বর-দান করিতেছিল এবং যেন পবিত্রতা জন্মাইতেছিল—এই অবস্থায় বলিল। (শ) "অতিথির শুভাগমন ত? কি করিয়া মহাশয় এখানে আসিলেন? অতএব উঠুন, আসুন, আমার অতিথিসৎকার গ্রহণ করুন।" (ষ) সে, এইরূপ বলিলে চন্দ্রাপীড় সেই সম্ভাষণমাত্রেই আপনাকে অনুগৃহীত মনে করিয়া, উঠিয়া ভক্তিসহকারে তাহাকে প্রণাম করিয়া "দেবি! আপনি যেরূপ আদেশ করেন, (তাহাই করিব)" এই কথা বলিয়া শিষ্যের ন্যায় বিনয়-প্রদর্শনপূর্ব্বক তাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিলেন; সেও চলিল।

(স) চন্দ্রাপীড় যাইবার সময়ে মনে মনে এইরূপ স্থির করিলেন যে,—'ভাল! এ, ত

---

(१) वरप्रदानं। (२) पवित्रिताम्। (३) महाभाग! (४) अनुगम्यतां।
(५) सम्भावित...। (६) समुत्थाय। (७) अद्भुताकृतिस्तिरोभूता।

रूपाया अपि दाक्षिण्यातिशया प्रतिपत्तिरभिजाता विभाव्यते, तथा सम्भावयामि नियतमियमखिलमात्मोदन्तं (१) अभ्यर्थ्यमाना कथयिष्यतीति (घ)। एवञ्च कृतमतिः पदशतमात्रमिव गत्वा, निरन्तरैर्दिवापि रजनीसमयमिव दर्शयद्भिस्तमालतरुभिरन्धकारितपुरोभागाम्, (ङ) उत्फुल्लकुसुमेषु लतानिकुञ्जेषु कूजतां मन्दं मन्दं मदमत्त-(२) मधुलिहां विरुतिभिर्मुखरीकृतपर्य्यन्ताम्, (च) अतिदूरपातिनीनाञ्च धवलशिलातल-प्रतिघातोत्पतनफेनिलानामपां प्रस्रवणैरुत्-

---

प्रश्नाशया पूर्व्वोक्तरूपजिज्ञासाशंसया पदं प्रतिष्ठा कृतम्। तपस्विजनानां दुर्लभं दिव्यं रूपं यस्यास्तस्या अपि, अस्याः कन्यकायाः, यथा इयं, दाक्षिण्यस्य औदार्य्यस्य अतिशयोऽतिरेको यस्यां सा तादृशी, प्रतिपत्तिः स्वागतमयितयि इत्यादिव्यवहारः, अभिजाता उत्पन्ना विभाव्यते लक्ष्यते। अभ्यर्थ्यमाना मया वक्तुमनुरुध्यमाना सती, नियतं निश्चितं। आत्मोदन्तं स्वकीयवृत्तान्तं। इति सम्भावयामीत्यन्वयः।

(ङ) एवमिति। किञ्च, एवं कृतमतिः इत्थं कृतनिश्चयश्चन्द्रापीडः, पदशतमात्रमिव गत्वा गुहामद्राक्षीदिति वक्ष्यमाणक्रिययान्वयः। अत स्त्रियां द्वितीयैकवचनान्तपदानि गुहामिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। निरन्तरैर्घनैः, अतएव दिवापि रजनीसमयं दर्शयद्भिरिव स्थितैः, तमालतरुभिः करणैः, अन्धकारितः सञ्जातान्धकारः पुरोभागः सम्मुखदेशो यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) उत्फुल्लेति। उत्फुल्लानि विकसितानि कुसुमानि येषु तेषु। मदमत्ता ये मधुलिहो भ्रमरास्तेषां विरुतिभिर्झङ्कारैः मुखरीकृतः शब्दितः पर्य्यन्तः प्रान्तभागो यस्यास्ताम्।

(छ) अतीति। किञ्च, अतिदूरात् पतितुं शीलं यासां तासां, धवलेषु शिलातलेषु प्रतिघातेन यदुत्पतनमूर्द्ध्वगमनं तेन फेनिलानां फेनवतीनां अपां जलानां, उत्कोटय उन्नताग्रा ये ग्रावाणः पाषाणास्तेषां विटङ्कपरिभागैः विपाट्यमानानि विच्छिद्यमानानि तैः, उच्चरन्तो घातप्रतिघातैरुत्पद्यमानाः ध्वनयः शब्दा

আমাকে দেখিয়া অন্তর্হিত হইল না; সুতরাং এখন আমার চিত্তে কৌতুকবশতঃ সেই প্রশ্ন করিবার আশা প্রতিষ্ঠা লাভ করিল। ইহার এই দিব্য রূপ, তপস্বিদিগেরও দুর্ল্লভ; তথাপি আমার প্রতি ইহার যখন এইরূপ অত্যন্ত-ঔদার্য্য-সম্পন্ন ব্যবহার জন্মিয়াছে—দেখিতেছি, তখন আমি ইহা স্থির করিতে পারি যে,—আমি ইহাকে বলিবার জন্য অনুরোধ করিলে, এ, নিশ্চয়ই আপনার সমস্ত বৃত্তান্ত বলিবে।' (ঙ) চন্দ্রাপীড় মনে মনে এইরূপ কৃতনিশ্চয় হইয়া, এক-শত-পদ-মাত্র গমন করিয়া একটি গুহা দেখিতে পাইলেন, তাহার সম্মুখভাগ, কতকগুলি তমালবৃক্ষে অন্ধকার করিয়া রাখিয়াছিল; সেই তমালবৃক্ষগুলি, অত্যন্ত ঘন ছিল বলিয়া দিনের বেলায়ও যেন রাত্রিকাল বলিয়া ভ্রম জন্মাইতেছিল; (চ) লতাকুঞ্জের ভিতরে নানাবিধ ফুল ফুটিয়াছিল, তাহাতে মন্দ-মন্দ-রবকারী মদমত্ত ভ্রমরগণের ঝঙ্কারে সেই গুহাটির প্রান্তভাগ মুখরিত হইয়াছিল। (ছ) পার্ব্বত্য নির্ঝরের জল অতিদূর হইতে ধবল

---

(१) इयमात्मोदन्तं। (२) गुञ्जतां मन्दं, मधुमत्त…।

कोटि-ग्राव-विटङ्क--विपात्यमानैरुच्चरद्भिरवशीर्य्यमाणा-तुषार--शिशिर--शीकरा-सारैरावध्यमाननीहाराम्, (क) हिम-हार-हर-हास-धवलैरुभयतः चरद्भि-र्निर्झरैर्द्वारावलम्बित-चलच्चामर-(१) कलापामिवोपलक्ष्यमाणाम्, (ख) अन्तः-स्थापित-मणि-कमण्डलु-मण्डलाम्, (ग) एकान्तावलम्बित-योग-पट्टिकाम्, (घ) विशाखिका-शिखर-निबद्ध-(२) नारिकेली-(३) फल-वल्कलमय-धौतोपानद्युगलो-

---

येषु तैः, तथा अवशीर्य्यमाणाः पाषाणेषु पतनात् जर्ज्जरीभवन्तः तुषारवत् शिशिराः हिमवत् शीतलाः शीकरा-सारा जलविन्दुधारा येषां तैः, प्रस्रवणैः पार्व्वत्यनिर्झरैः, आवध्यमाना उत्पाद्यमाना नीहारा हिमवज्जल-विन्दवो यस्यां ताम्। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः, तुषारशिशिरशब्दयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः परञ्च तुषारवत् शिशिरा इति भेदावगमात् पुनरुक्तवदाभासयानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तथा धवलशिला-तलेति धवलपदं वर्णनीयार्थस्य न किञ्चिदुपकुरुत इति "विलोक्य वितते व्योम्नि" इत्यादि दर्पणोदाहृतवत् अपुष्टार्थत्वदोषः, स तु धवलपदपरित्यागेनैव समाधेयः।

(ख) हिमेति। किञ्च हिमं तुषारः हारो मुक्तामाला हरहासः शिवहास्यं तद्वत् धवलास्तैः, उभयतो द्वारपार्श्वद्वये चरद्भिः स्रवद्भिः निर्झरैरेतैभिः, द्वारे अवलम्बितं सन् चलन् चामराणां कलापो यस्यास्तामिवोपलक्ष्यमाणाम्। अत्र चलच्चामरकलापोत्प्रेक्षणाज्जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) अन्तरिति। अन्तरभ्यन्तरे स्थापितं मणिमयकमण्डलूनां मण्डलं समूहो यस्यास्ताम्।

(घ) एकान्तेति। एकान्ते एकपार्श्वे अवलम्बिता योगपट्टिका योगसाधनसमयपरिधानाय क्षुद्रपट्टवस्त्रं यस्यास्ताम्।

(ङ) विशाखिकेति। विशाखिकायाः शिक्यायाः शिखरे उपरिभागे निबद्धं संयतं नारिकेलीफलस्य वल्कलमयं धौतं यदुपानद्युगलं पादुकाद्वयं तेनोपेतां विशिष्टाम्।

শিলাখণ্ডের উপরে পড়িতেছিল, সুতরাং সেই শিলাখণ্ডের প্রতিঘাতে সেই জলের কতক অংশ পুনরায় উৎক্ষিপ্ত হইতেছিল, এই ঘাত-প্রতিঘাতে সেই জলে বহুতর ফেন জন্মিতেছিল, কোন স্থানে উন্নত পাষাণের অগ্রভাগে সেই জল বিচ্ছিন্ন করিয়া দিতেছিল, তাহাতে শব্দ হইতেছিল এবং হিমের ন্যায় শীতল জল-বিন্দুধারা, আরও ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র হইয়া সেই গুহার ভিতরে নীহারের ন্যায় ছড়াইয়া পড়িতেছিল। (খ) সেই গুহাদ্বারের উভয়পার্শ্বে হিম, মুক্তার মালা ও শিবের হাস্যের ন্যায় ধবলবর্ণ নির্ঝরের জল পড়িতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল, যেন দ্বারের দুই দিকে ঝুলান কতকগুলি চামর দুলিতেছে। (গ) সেই গুহার ভিতরে কতকগুলি মণিময় কমণ্ডলু স্থাপিত ছিল। (ঘ) যোগ-সাধন করিবার সময়ে পরিধান করিবার উপযুক্ত ক্ষুদ্র একখানি পট্টবস্ত্র এক দিকে ঝুলান ছিল। (ঙ) নারিকেল-

---

(१)...चारुचलच्चामर...। (२) विशाखिकानिबद्ध...। (३)...नालिकेरी ..।